मरने के बाद
क्या होगा?

बिन्तुल इस्लाम

अनुवाद

कौसर लईक़

विषय-सूची

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।"

भूमिका

मरने के बाद क्या होगा? इस सम्बन्ध में लोग बहुत कम सोचते हैं, जबकि मरने के बाद की ज़िन्दगी दुनिया की ज़िन्दगी के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा अहम है। दुनिया की ज़िन्दगी तो अस्थायी और ख़त्म होनेवाली है जबकि आगे आनेवाली आख़िरत की ज़िन्दगी (पारलौकिक जीवन) कभी ख़त्म न होगी। आख़िरत की ज़िन्दगी की कामयाबी का दारोमदार हमारे उस रवैये और तर्जे अमल पर है जो हम दुनिया की ज़िन्दगी में इख़्तियार करते हैं। इसलिए मौत के बाद की ज़िन्दगी की फ़िक्र हमें दुनिया ही में करनी होगी। बल्कि हक़ीक़त यह है कि दुनिया की ज़िन्दगी हमें दी ही इसलिए गई है कि हम अपनी हमेशा की ज़िन्दगी को सँवार लें, ताकि आखिरकार हमें नाकामी का मुँह न देखना पड़े।

इस किताब की लेखिका बिन्तुल इस्लाम ने 'हुब्बे इलाही', 'ख़शीयते इलाही', 'हया और दयानतदारी' वग़ैरह कई अच्छी किताबें लिखी हैं। यह किताब 'मरने के बाद क्या होगा?' इसी सिलसिले की एक कड़ी है। यह किताब निहायत असर डालनेवाली किताब है। मोहतरमा लेखिका ने जो कुछ लिखा है क़ुरआन व हदीस की रौशनी में लिखा है। उनके बयान की पाकीज़गी और उनके ख़ुलूस का दिल पर सीधा असर पड़ता है। मौत के बाद की ज़िन्दगी के बारे में ग़लत नज़रियों का भी उन्होंने जायज़ा लेते हुए बताया है कि वे सिर्फ़ इनसानी ज़ेहन की पैदावार हैं। अक़्ल और इनसानी फ़ितरत भी उनको तसलीम करने से इनकार करती है। इस सिलसिले में नबियों ने आख़िरत का जो नज़रिया दुनिया के सामने पेश किया है वही हक़ है और वही इनसानी फ़ितरत के मुताबिक़ है। आख़िरत के अक़ीदे का इनसान की सीरत और चरित्र पर गहरा असर पड़ता है। यह अक़ीदा आदमी को बाकिरदार (चरित्रवान) और ज़िम्मेदार बनाता है। इससे आदमी का ख़याल बुलन्द और दिल कुशादा हो जाता है। वह हर क़िस्म के नाजायज़ और बुरे कामों से बचने लग जाता है।

बिन्तुल इस्लाम साहिबा ने दुनिया की कमज़ोरी को निहायत असर डालनेवाले अंदाज़ में बयान किया है। इसलिए कि जब तक किसी शख़्स पर दुनिया की कमज़ोरी और उसकी बेवक़ूअती (तुच्छता) पूरी तरह स्पष्ट न हो वह आख़िरत के लिए कोशिश नहीं कर सकता। फिर उन्होंने मौत, आलमे बरज़ख़ और क़ियामत

का झिंझोड़ देनेवाला मंज़र पेश किया है और उस नाज़ुक वक़्त का ज़िक्र किया है जब लोगों से उनके आमाल का हिसाब लिया जाएगा और उनके आमालनामे (कर्म-पत्र) उन्हें दिए जाएँगे। उन्होंने 'मीज़ान', 'सिरात', 'हौज़े कौसर' का ज़िक्र करते हुए इनसान के हमेशा रहनेवाले ठिकानों 'जन्नत या दोज़ख़' का ज़िक्र किया है और इस सिलसिले में क़ुरआन व हदीसों के असर डालनेवाले इक़्तिबासात (उद्धरण) नक़ल किए गए हैं। फिर बताया है कि जन्नत में जानेवाले कौन लोग होंगे, यानी किन गुणों और ख़ूबियों के लोग जन्नत में जगह पाएँगे और किस क़िस्म के लोगों का ठिकाना दोज़ख़ होगा। आख़िरत के लिए हमारे अन्दर शौक़ का जज़्बा पैदा हो इसके लिए लेखिका ने सहाबा किराम (रज़ि०) और इतिहास के अहम व्यक्तित्व के अहम वाक़िआत नक़ल किए हैं जो बेहद असरदार हैं।

किताब के आख़िरी हिस्से में तफ़सील से यह बताया गया है कि आख़िरत के अक़ीदे का इनसानी ज़िन्दगी पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है। ईमानदारी, सच्चाई, बहादुरी, सब्र, दृढ़ता, बुलन्द हौसला और अल्लाह की राह में ख़र्च करने का जज़्बा—ये ख़ूबियाँ आख़िरत के अक़ीदे के बेहतरीन फ़ायदे हैं। आज जो वक़्त और फ़ुरसत हमें हासिल है उसकी क़द्र तो आख़िरत के तसव्वुर के बिना सही मानो में मुमकिन ही नहीं है।

यह किताब ऐसी है कि इसे हर घर में मौजूद रहना चाहिए। मर्द हों या औरतें, नौजवान हों या बड़ी उम्रवाले, हर एक के लिए इस किताब का पढ़ना फ़ायदेमंद साबित होगा।

ख़ुदा से दुआ है कि वह इस कोशिश को क़बूल फ़रमाए और ज़्यादा से ज़्यादा लोग इससे फ़ायदा उठा सकें।

—प्रकाशक

तबलीग़ का महत्त्व

क़ुरआन मजीद में सूरा आले इमरान, आयत 104 में अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया है—

"और तुममें एक ऐसी जमाअत होना ज़रूरी है जो भलाई की तरफ़ बुलाए और नेक काम करने का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके, और यही लोग कामयाब होनेवाले हैं।"

इस आयत में मुसलमानों को साफ़ तौर पर हुक्म दिया गया है कि वे बुराइयों को रोकने और भलाइयों के फैलाने का इंतिज़ाम किए रखें, और उनमें स्थायी रूप से एक गिरोह ऐसा रहना चाहिए जो इस अनिवार्य कार्य को करता रहे। फिर इस तबलीग़ करनेवाले गिरोह के संबंध में फ़रमाया है कि यही लोग पूरे कामयाब होंगे।

इसी सूरा की आयत 110 में अल्लाह तआला ने मुसलिम समुदाय की तारीफ़ करते हुए फ़रमाया है—

"तुम बेहतरीन समुदाय (उम्मत) हो जो लोगों के लिए प्रकट किए गए हो। तुम भले काम करने का आदेश देते हो और बुरे कामों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।"

इस आयत में भी मुसलिम समुदाय को सबसे अच्छा समुदाय कहने का कारण जो साथ ही बता दिया गया है, यही है कि वे दुनियाभर में भलाई फैलाने और बुराई की जड़ काटने की कोशिश करते रहते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से उल्लिखित है कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "जिसने हिदायत की तरफ़ बुलाया, उसके लिए उतना ही सवाब व अज्र है जितना उस व्यक्ति के लिए जिसने हिदायत (मार्गदर्शन) की पैरवी की, बग़ैर इसके कि पैरवी करनेवाले के अज्र व सवाब में से कुछ कम किया जाए और जिसने गुमराही की ओर बुलाया, उसके लिए उतना ही गुनाह है जितना उस व्यक्ति पर जिसने गुमराही की पैरवी की; बिना इसके कि गुमराही की पैरवी करनेवालों के गुनाहों में से कुछ कम किया जाए।" (मुसलिम)

हज़रत सहल बिन साद (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने हज़रत अली (रज़ि०) से फ़रमाया—"ख़ुदा की क़सम अगर अल्लाह ने तेरे द्वारा एक

आदमी को भी सत्य मार्ग दिखा दिया तो यह तेरे लिए सुनहले ऊँटों[1] से बेहतर है।"

(बुख़ारी, मुसलिम)

ऊपर लिखी आयतों व हदीसों से स्पष्ट पता चल जाता है कि मुसलमानों के लिए तबलीग़ (धर्म-प्रचार) करते रहना कितना ज़रूरी है। वास्तविकता यह है कि तबलीग़ वह अनिवार्य कार्य है जिसे किए बग़ैर मुसलिम समुदाय कभी भी इज़्ज़त व वक़ार के उस मक़ाम पर नहीं रह सकता जो अल्लाह तआला ने वास्तव में उसके लिए निर्धारित किया था। जब तक मुसलमानों में तबलीग़ का जज़्बा मौजूद रहा वे दुनिया में इज़्ज़त व सम्मान के पद पर रहे, और जब से उन्होंने इस महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य काम से गफ़लत बरतनी शुरू की तो वे अपने वतन के अन्दर बेवतन होकर रह गए।

तबलीग़ अमल से भी होती है, ज़बान से भी और क़लम से भी। और ये तीनों अपनी-अपनी जगह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और ज़रूरी हैं। फिर भी क़लमी तबलीग़ में एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसके प्रभाव का क्षेत्र दूर-दूर तक फैल जाता है और उससे अनगिनत लोग प्रभावित हो सकते हैं। एक सच्चे दिल से निकली हुई नसीहत जब लेख में सुरक्षित हो जाए तो फिर यह अंदाज़ा लगाना मुमकिन नहीं होता कि कितने लोग उसे पढ़ेंगे और कितने प्रभावित होंगे। ज़बान से बात सिर्फ़ उसी से की जा सकती है जो सामने मौजूद हो। अमल भी सिर्फ़ उसी को दिखाया जा सकता है जो देख रहा हो। मगर तहरीर और लेखन वह साधन है जिससे इनसान उन अनगिनत लोगों को भी सम्बोधित कर लेता है जो न सामने मौजूद होते हैं, न देख रहे होते हैं। यही नहीं, बल्कि तहरीर के द्वारा उन इनसानों को भी सम्बोधित किया जा सकता है, जिन्हें सदियों के बाद पैदा होना होता है। यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब इमाम इब्न तैमिया की तहरीरों से प्रभावित हुए थे और ये तहरीरें उस निष्ठावान और दीन के सच्चे सेवक ने मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब की पैदाइश से सदियों पहले लिखी थीं।

प्रस्तुत पुस्तक भी इसी भावना से लिखी गई है, जिस भावना ने इस्लामी इतिहास के अनगिनत सुधारकों को क़लम उठाने पर मजबूर किया था। हालाँकि उन प्रतिष्ठित और श्रेष्ठ क़लमों में और इस कमज़ोर क़लम में जिसने यह किताब संकलित की है ज़मीन और आसमान का फ़र्क़ है, मगर दिल का दर्द बहरहाल

1. सुनहले ऊँट अर्थात् 'लाल-ऊँट' अरबों के यहाँ सबसे क़ीमती माल समझे जाते थे।

वही है। जिन फ़िज़ाओं में उक़ाब[1] उड़ता है उन्हीं में ममूला[2] भी उड़ता है। जबकि ममूले की उड़ान का उक़ाब की परवाज़ से कोई संबंध नहीं है। इसके बावजूद ममूला भी अपनी सामर्थ्य-भर तो उड़ ही लेता है। मक़सद तो सिर्फ़ यह है कि इस 'ख़ैरेउम्मत' (उत्तम समुदाय) की सरबुलंदी के लिए हर संभव कोशिश कर ली जाए। कौन कह सकता है कि शायद वह इज़्ज़तवाला और सर्वश्रेष्ठ मालिक ममूले की उड़ान को भी क़बूलियत का शर्फ़ बख़्श ही दे।

हालात कितने ही ख़राब क्यों न हों, वे इस हद तक कभी नहीं पहुँचते कि सुधार की कोशिशों को बेकार समझ लिया जाए। ऐसे ही हालात कितने ही अच्छे क्यों न हों, यह स्थिति भी कभी पैदा नहीं होती कि उन्हें और अधिक ख़ुशगवार बनाने की ज़रूरत ख़त्म हो जाए। इसलिए मुसलमानों को दुनिया में सरबुलंदी हासिल हो या इंतिहाई ज़िल्लत के गड्ढे में गिरे हुए हों, तबलीग़ की ज़रूरत कभी ख़त्म नहीं होती।

फिर तबलीग़ सिर्फ़ बेरूनी (बाहरी) ही ज़रूरी नहीं, अन्दरूनी भी उतनी ही ज़रूरी है। ग़ैर मुसलिमों को इस्लाम की तरफ़ बुलाने के अलावा यह भी बेहद ज़रूरी है कि ख़ुद मुसलमान कहलानेवालों को सही अर्थों में मुसलमान बनने की तरफ़ तवज्जोह दिलाई जाती रहे। अगरचे यह हक़ीक़त अपनी जगह क़ायम है कि नई नस्लें तेज़ी से ग़ैर इस्लामी सिद्धांतों और विचारों से प्रभावित होती चली जा रही हैं और इनमें से एक गिरोह तो दीन से इतना दूर जा चुका है कि उनका वापस आना ज़ाहिरी रूप से बहुत मुशकिल दिखाई देता है। इसके बावजूद इस परिस्थिति से किसी प्रकार की कोई मायूसी हरगिज़ पैदा नहीं होनी चाहिए। क़ुरआन पाक की सूरा अल-आराफ़, आयत 164 में अल्लाह ने फ़रमाया है—

> "और (वह वक़्त याद करो) जब उनमें से एक ज़माअत ने यूँ कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत किए जाते हो जिनको अल्लाह तआला हलाक करनेवाला है या उन्हें सख़्त सज़ा देनेवाला है। उन (नसीहत करनेवालों) ने जवाब दिया कि तुम्हारे (और अपने) रब के सामने उज़्र करने के लिए और (फिर) इसलिए कि शायद ये लोग डर ही जाएँ।"

इस आयत में दो सच्चाइयों की तरफ़ इशारा किया गया है और दोनों ख़ास तौर पर ग़ौर करने के क़ाबिल हैं। पहली यह कि ईमानवाले तबलीग़ इसलिए करते हैं कि अपने फ़र्ज़ को पूरा कर दें और अल्लाह तआला से कह सकें कि

---

1. एक शक्तिशाली और ऊँचाई पर उड़नेवाला शिकारी पक्षी, गिद्ध पक्षी।
2. एक छोटा पक्षी जिसके पेट पर काली धारियाँ होती हैं।

हमने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया था। मानना या न मानना सुननेवालों की मरज़ी और क़िस्मत पर निर्भर था, और दूसरी यह कि जिन लोगों पर तबलीग़ की जा रही हो वे कितने ही लापरवाह और इस्लाम-विरोधी क्यों न नज़र आते हों, इस बात की संभावना बहरहाल मौजूद होती है कि वे अल्लाह के पैग़ाम से प्रभावित हो जाएँ और ख़ुदा से डरकर अपना रवैया बदल लें।

जहाँ तक पहली सच्चाई का संबंध है, अगर इनसान इन बातों को ध्यान में रखें कि उसका फ़र्ज़ उतना ही है कि पैग़ाम को हिकमत और ख़ूबी के साथ पहुँचा दे, तो तबलीग़ को बज़ाहिर बेअसर देखकर जो मायूसी और उदासी की कैफ़ियत पैदा होती है, वह कभी न हो। तबलीग़ करनेवाले को यह ज़ेहननशीन कर लेना चाहिए कि वह सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचाने का ज़िम्मेदार है। किसी का कान पकड़कर उसे ज़बरदस्ती सीधी राह पर चला देने का ज़िम्मेदार नहीं। हक़ की ओर बुलानेवाले ने जिस महान हस्ती की प्रसन्नता हासिल करने के लिए यह कोशिश की थी, अगर उसकी नीयत में ख़ुलूस है तो उस महान स्रष्टा ने इस कोशिश को ज़रूर क़बूल कर लिया है। अगर ज़ाहिर रूप में तबलीग़ का असर होता नज़र नहीं आता तो यह क़तई घबराने की बात नहीं है। अगर तुरन्त असर नहीं हुआ है तो कुछ समय के बाद हो जाएगा, लेकिन होगा ज़रूर इनशाअल्लाह। क्योंकि अल्लाह तआला ख़ुलूसे दिल से की हुई कोशिश को कभी बेकार नहीं जाने देता।

बाक़ी रही यह बात कि कुछ लोग इस्लाम की अमली (व्यावहारिक) और क़ौली (सैद्धान्तिक) मुख़ालिफ़त में इस हद तक जा पहुँचे होते हैं कि ज़ाहिर रूप में उनके वापस आने की कोई संभावना ही नहीं होती। तो इस मामले में भी बिलकुल नाउम्मीद हो जाने की ज़रूरत नहीं। इनसान की दिल की हालतें बड़ी रहस्यपूर्ण होती हैं। कठोर से कठोर दिल में भी किसी न किसी वक़्त ऐसी नर्मी पैदा हो जाती है कि वह सच्चाई को क़बूल करने के लिए खुल जाता है, इसलिए यह समझना कि जो शख़्स देखने में ग़ैर इस्लामी रवैयों का बेहद दीवाना नज़र आता है, वह कभी तबलीग़ से मुतास्सिर ही नहीं होगा, बुनियादी तौर पर ग़लत है।

इस किताब के संकलन का विचार कई सालों से ज़ेहन में था, और कोशिश यही थी कि इन बुनियादी सिफ़ात (विशेषताओं) पर सामग्री मुहैया की जाए, जिनके पैदा होने से फिर दूसरे दर्जे की सिफ़ात (विशेषताएँ) अपने आप ही पैदा होनी शुरू हो जाती हैं। मिसाल के तौर पर अगर दिल में ख़ुदा की सच्ची मुहब्बत और ख़ुदा का हक़ीक़ी ख़ौफ़ पैदा हो जाए तो फिर यह शौक़ अपने आप ही पैदा हो जाएगा कि ऐसे काम करें जो उसकी प्रसन्नता को प्राप्त करने में मदद दें और उसके प्रकोप से

बचाएँ। ऐसे ही अगर दिल के अन्दर नबी करीम (सल्ल०) का सच्चा इश्क़ और आपकी इताअत (आदेश पालन) करने का जज़्बा पैदा हो जाएगा, तो फिर स्वयं ही आप (सल्ल०) के लाए हुए दीन (धर्म) पर चलने का शौक़ भी उभर आएगा। इसी तरह अगर दिलों में हया (लज्जा) पैदा हो जाएगी तो फिर अनैतिकता और नग्नता की ग़लत राहें अपने आप ही बन्दं होनी शुरू हो जाएँगी।

हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में जो आम बिगाड़ पैदा हो चुका है उसे सामने रखते हुए बड़े ग़ौर और सोच-विचार के बाद यह फ़ैसला किया गया है कि इस किताब में नीचे लिखे 13 विषयों को बुनियादी सिफ़तों की हैसियत से पेश किया जाए। अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से उम्मीद है कि अगर हम इन सिफ़ात को अपना लें तो फिर अगर अल्लाह ने चाहा तो दूसरी इस्लामी सिफ़ात (गुण) अपने आप ही पैदा होती चली जाएँगी। इन विषयों का विवरण निम्न प्रकार है—

(1) आख़िरत का अक़ीदा

(2) अल्लाह की मुहब्बत और उसका डर

(3) रसूल की मुहब्बत और उसकी इताअत

(4) इस्लाम की हमदर्दी और तबलीग़ का जज़्बा

(5) दीन के इल्म को हासिल करने का शौक़

(6) इस्लामी इबादतों की पाबन्दी

(7) नफ़्स को पाक करना

(8) इस्लामी भाईचारा

(9) ईमानदारी

(10) हया (लज्जा)

(11) नज़्म व ज़ब्त

(12) पारिवारिक ज़िन्दगी के इस्लामी उसूल

(13) इस्लामी तहज़ीब

किताब की सामग्री इकट्ठा करने में कई साल लग गए और सामग्री इतनी ज़्यादा हो गई कि अगर उसे एक जिल्द में रखा जाता तो किताब बहुत ज़्यादा मोटी हो जाती। इसलिए मुनासिब समझा गया कि इसे छोटे-छोटे आकार के अनेक हिस्सों में प्रकाशित किया जाए। इस सिलसिले का पहला हिस्सा सेवा में प्रस्तुत है, जो इस्लाम के आख़िरत के अक़ीद से ताल्लुक़ रखता है। इसके बाद

अगर अल्लाह ने चाहा तो अपने-अपने समय पर बक़िया हिस्से भी आपकी सेवा में प्रस्तुत होते रहेंगे।

आख़िरत के अक़ीदे को सबसे पहले पेश करने की वजह यह है कि इसलाह (सुधार) के सिलसिले में यह अक़ीदा जड़ और बुनियाद की हैसियत रखता है। जबकि इनसान के दिल में यह बात बैठ जाती है कि मुझे एक दिन कहीं जाकर अपने आमाल (कर्मों) का जवाब देना है और मेरे आमाल मुझे हमेशा रहनेवाला आराम भी दे सकते हैं और हमेशा-हमेशा का अज़ाब भी। तो फिर उसके दिल में ख़ुद-बख़ुद ही यह तलाश पैदा हो जाती है कि क्या करूँ कि अज़ाब से बच जाऊँ और राहत हासिल कर लूँ। इसके बाद यह अन्दरूनी तलाश के ज़जबे ख़ुद-बख़ुद ही ख़ुदा, रसूल, नमाज़, रोज़े, दयानत व अमानत, परहेज़गारी व पाकबाज़ी और ख़ुदातरसी व फ़र्ज़ शिनासी की राहों की तरफ़ लिए चले जाते हैं। अल्लाह के पाक कलाम में देखिए कि जो आयतें और सूरतें बिलकुल इबतिदाई ज़माने में नाज़िल हुई थीं, उनमें आख़िरत के अक़ीदे का बार-बार ज़िक्र आता है।

किताब में यथासंभव इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि जो कुछ भी कहा जाए वह ज़्यादातर क़ुरआन, हदीस, इतिहास और बुज़ुर्गों की सीरतों की ज़बान में कहा जाए और अपनी ज़बान कम से कम प्रयोग की जाए।

आख़िर में हम अल्लाह, सारे आलम के रब से दुआ करते हैं कि हमारी इन हक़ीर कोशिशों को क़बूलियत का शर्फ़ बख़्शे और मुस्लिम उम्मत को सही मानों में "ख़ैरे उम्मत" (उत्तम गिरोह) बनने का शर्फ़ अता करे और इसे इस क़ाबिल बनाए कि इसके ज़रीए सारे इनसान अपनी अबदी निजात की राह पर चल सकें। आमीन ! ! !

—बिन्तुल इस्लाम

आख़िरत के बारे में तीन नज़रिए

आख़िरत की ज़िन्दगी के बारे में आज तक जितने भी दृष्टिकोण (नज़रियात) क़ायम हुए हैं, उन्हें तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

कुछ लोग ऐसे रहे हैं और अब भी हैं जिनका ख़याल है कि मौत के साथ इनसानी ज़िन्दगी हमेशा के लिए ख़त्म हो जाती है और इसके बाद कुछ भी नहीं है। न कोई दूसरी ज़िन्दगी है, न जज़ा-सज़ा, न जन्नत-दोज़ख़। जो लोग अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात और ईश्वरीय मज़हबों को नहीं मानते वे आख़िरत के बारे में यही अक़ीदा रखते हैं।

आख़िरत के बारे में दूसरा दृष्टिकोण यह रहा है कि रूहें (आत्माएँ) जिस्म के लिबास में आती हैं। एक रूह एक जिस्म में जब ज़िन्दगी गुज़ार लेती है और जिस्म मर जाता है तो रूह फिर किसी और जिस्म में दोबारा दुनिया में आ जाती है, और इस जिस्म के ख़त्म होने के बाद फिर वह किसी और जिस्म में दाख़िल होकर नए ढंग से दुनिया में आ जाती है और ऐसे ही होता रहता है। इस तरह मानो कि रूह बार-बार दुनिया में आती है। इस अक़ीदे में यह बात भी शामिल है कि रूह एक जिस्म में जिस तरीक़े से ज़िन्दगी गुज़ारती है उसका दूसरा जन्म उसके नतीजे के तौर पर होता है। यानी एक ज़िन्दगी में अगर उस इनसान ने नेक काम किए होंगे तो फिर दूसरी बार उसकी रूह फिर इनसान की शक्ल में आ जाएगी। मगर एक ज़िन्दगी में अगर उस इनसान ने बुरे काम किए होंगे तो दूसरी बार वह किसी बुरे इनसान या जानवर, मिसाल के तौर पर कुत्ते, बिल्ली या पेड़-पौधों की शक्ल में पैदा होगा। यह अक़ीदा आवागमन (Transmigration) का दृष्टिकोण कहलाता है। दुनिया में बहुत-से लोग इस अक़ीदे को मानते रहे हैं और अब भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो इसको मानते हैं।

आख़िरत के बारे में तीसरा दृष्टिकोण वह है जो शुरू से नबियों द्वारा बताया जा रहा है। इस दृष्टिकोण का ख़ुलासा यह है कि मौजूदा ज़िन्दगी अस्थायी है। इसे अवश्य ही मौत पर ख़त्म हो जाना है, मगर मौत पूरी तरह विनाश नहीं, बल्कि इसके बाद एक और हमेशा रहनेवाली ज़िन्दगी है जो कभी ख़त्म नहीं होगी। वह मौजूदा ज़िन्दगी का नतीजा होगी। अगर मौजूदा ज़िन्दगी नेक कर्म करते गुज़ारी होगी तो मौत के बाद की ज़िन्दगी स्थायी आराम की ज़िन्दगी होगी। लेकिन अगर सांसारिक जीवन में कुफ़्र और नाफ़रमानी का रवैया अपनाया होगा, तो मौत के बाद की ज़िन्दगी बड़ी तकलीफ़ और अज़ाब की ज़िन्दगी होगी।

पहला दृष्टिकोण

अब आप इन तीनों दृष्टिकोणों पर ग़ौर करें और देखें कि कौन-सा दृष्टिकोण अद्ल व इनसाफ़ के मुताबिक़ और अक़्ल के लिहाज़ से माक़ूल (उचित) मालूम होता है। पहले इस दृष्टिकोण पर ग़ौर कीजिए कि मौत के साथ सब कुछ ख़त्म हो जाता है और इसके बाद कुछ नहीं है। अगर इस अक़ीदे को मान लिया जाए तो फिर निश्चित रूप से यह मानना पड़ेगा कि इनसान इस ज़िन्दगी में सच्चाई और नेक कर्म करते हुए दिन गुज़ारे या बुरे कर्मों के साथ उम्र पूरी कर ले, अंजाम दोनों तरीक़ों का एक ही होगा, यानी पूरी तरह फ़ना (ख़त्म होना)। क्या इस बात से दिल मुतमइन हो जाता है?

हम आए दिन देखते हैं कि बेशुमार इनसान ऐसे होते हैं जो सच्चाई और परहेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। ख़ुदा की मख़लूक़ के हक़ को अदा करने में लगे रहते हैं और सच्चाई की ख़ातिर तकलीफ़ें उठाते रहते हैं। मगर इसके बावजूद तकलीफ़ की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। दूसरी तरफ़ ऐसी मिसालें भी कम नहीं कि ज़ालिम और अत्याचारियों ने अपने बुरे कर्मों और ग़लत रहनुमाई से एक-दूसरे को गुमराह किया और लोगों के हक़ बुरी तरह हड़प लिए, मगर ज़िन्दगी में ख़ुशहाली और चैन उनका साथ देती रही। सवाल यह है कि अगर इन दोनों प्रकार के इनसानों का अंजाम एक जैसा ही होना है, यानी पूरी तरह ख़त्म होना, तो फिर नेक आदमी किसलिए तकलीफ़ सह-सहकर नेकियाँ करता रहा। जब उसे उसकी नेकियों का कोई अज्र (प्रतिफल) नहीं मिलना था तो फिर वह भी बुरा क्यों न बन गया कि मार-धाड़ और उलटे-सीधे काम करके कम से कम ज़िन्दगी के चन्द दिन ही ऐश से गुज़ार लेता।

हालाँकि यह बात अपनी जगह दुरुस्त है कि नेकी की ज़िन्दगी गुज़ारने से ख़ुद यह दुनियवी ज़िन्दगी भी सुधर जाती है और बदअमली की ज़िन्दगी गुज़ारने से ख़ुद इस दुनिया में भी सज़ा मिल जाती है। मगर यह याद रखना चाहिए कि कोई पक्का और लगा-बँधा क़ानून नहीं है कि ज़रूर ऐसा ही हो। यद्यपि आम तौर से ऐसा ही होता है कि सच्चाई की ज़िन्दगी गुज़ारनेवाले दुनिया में भी इसका अच्छा अंजाम देख लेते हैं और बुराइयों की राह पर चलनेवाले मौत से पहले ही उसकी सज़ा भुगतना शुरू कर देते हैं, मगर हमेशा ऐसा नहीं होता। कई बुरे कर्म करनेवाले दुनिया में इस हद तक ऐश व आराम करते रहते हैं कि ऐश और आराम की अधिकता उन्हें और अधिक दुराचारी बनाती चली जाती है और इसके विपरीत कई ईमानदार मेहनती आदमी दो वक़्त की रूखी-सूखी भी प्राप्त नहीं कर

सकते। फिर कई नेक लोग ज़िन्दगीभर बेचैनियों और उलझनों का शिकार रहते हैं और कई दुराचारी और बुरे लोग हर सुख के मालिक बने रहते हैं। अनगिनत बार ऐसा होता है कि मज़लूम कहीं से मदद हासिल नहीं कर सकता, और ज़ालिम अपने ज़ुल्म की सज़ा से साफ़ बच निकलता है।

फिर इस चीज़ पर भी ग़ौर करना चाहिए कि जो लोग आख़िरत का इनकार करते हैं उनके पास अपने दावे के लिए दलील क्या है? आख़िर वे किस तरह कह सकते हैं कि मौत के बाद कोई ज़िन्दगी नहीं?

उन लोगों का कहना है कि हम आख़िरत का इनकार इसलिए करते हैं कि हमने मरने के बाद किसी को ज़िन्दा होते देखा नहीं और न किसी शख़्स ने आख़िरत की ज़िन्दगी देखी है। हम तो यही देखते हैं कि जो मरता है वह मिट्टी में मिल जाता है। अत: दूसरी ज़िन्दगी नहीं है।

ज़रा ग़ौर कीजिए कि यह भी कोई दलील है। अगर किसी ने आख़िरत की ज़िन्दगी देखी नहीं तो वह ज़्यादा से ज़्यादा यही कह सकता है कि हम नहीं जानते कि मरने के बाद क्या होगा। इससे आगे बढ़कर यह दावा कैसे किया जा सकता है कि चूँकि किसी इनसान ने आख़िरत की ज़िन्दगी देखी नहीं इसलिए हम दावा करते हैं कि वह है ही नहीं। एक देहाती ने अगर समुद्री जहाज़ न देखा हो तो वह यही कह सकता है कि मैं नहीं जानता कि समुद्री जहाज़ क्या चीज़ है, लेकिन अगर वह यह कहे कि चूँकि मैंने समुद्री जहाज़ नहीं देखा इसलिए समुद्री जहाज़ का कोई वुजूद ही नहीं, तो हर अक़्लवाला उसे मूर्ख और अहमक़ समझेगा। क्योंकि उसका समुद्री जहाज़ को न देख सकना इस दावे की दलील नहीं बन सकता कि समुद्री जहाज़ मौजूद ही नहीं। मतलब यह कि अगर इस दृष्टिकोण को मान लिया जाए कि सब लोगों का अंजाम एक ही होना है, यानी मौत और उसके बाद पूरी तरह फ़ना, तो नेक किस उम्मीद पर नेकी पर क़ायम रहेगा और बद किस ख़ौफ़ के कारण बुराई से रुकेगा। जब आख़िरकार सबको एक ही गड्ढे में गिरना है तो फिर हर इनसान क्यों न राहत और लज़्ज़त के सामान हासिल करने की कोशिश करता रहे, चाहे वह जाइज़ साधनों से हासिल होते हों या नाजाइज़ साधनों से। यह दृष्टिकोण कि मौत पूरी तरह फ़ना (Destruction) है और इसके बाद कोई जज़ा-सज़ा नहीं है, इनसान के दिल से नेकी की राह में संघर्ष करने की भावना को ख़त्म कर देता है।

आवागमन (Transmigration)

अब आवागमन के अक़ीदे को लीजिए कि रूहें बार-बार दुनिया में आती हैं।

इस अक़ीदे के माननेवाले लोगों का ख़याल है कि रूह का बार-बार आना इसलिए है कि इनसान अपने कर्मों का नतीजा भुगते। वे समझते हैं कि जो इनसान है, वह इसलिए इनसान है कि पहले जन्म में उसने अच्छे अमल किए थे और जो जानवर है वह इसलिए जानवर हो गया कि इनसान की योनि में उसने बुरे कर्म किए थे। दूसरे शब्दों में यूँ समझें कि इनसान या जानवर या पेड़ होना सब दरअसल पहले जन्म के कर्मों का नतीजा है।

अब सवाल यह है कि पहले क्या चीज़ थी। अगर इनसान था तो मानना पड़ेगा कि इससे पहले जानवर या पेड़ रहा हो, वरना पूछा जाएगा कि इनसान का जिस्म उसे किस अच्छे कर्मों के बदले में मिला। अगर कहा जाए कि जानवर था या पेड़ था तो मानना पड़ेगा कि इससे पहले इनसान हो, वरना सवाल होगा कि पेड़ या जानवर का जिस्म उसे किस बुरे कर्म के बदले में मिला? ग़रज़ कि इस अक़ीदे को माननेवाले मख़लूक़ात की शुरुआत किसी योनि से भी क़रार नहीं दे सकते, क्योंकि हर योनि से पहले एक योनि होना ज़रूरी है, ताकि बादवाली योनि को पहले योनि का नतीजा क़रार दिया जाए। यह बात पूरी तरह अक़्ल के ख़िलाफ़ है।

फिर आवागमन को माननेवाले कहते हैं कि इनसान एक योनि के कर्मों की सज़ा दूसरी योनि में भुगतता है। मगर सज़ा तो उसी सूरत में सही और मुफ़ीद होती है कि मुजरिम को याद हो कि यह सज़ा मुझे फ़लाँ गुनाह के बदले में मिल रही है, मगर इनसान को तो अपनी गुज़ारी जानेवाली ज़िन्दगी से पहले की घटनाएँ क़तई याद नहीं होतीं। अर्थात् आवागमन के माननेवालों के अक़ीदे के मुताबिक़ इनसान ऐसे गुनाहों की सज़ा भुगतता है जिनके बारे में उसे कुछ मालूम नहीं कि वह क्या था और उसने कब उन कर्मों को किया था।

मतलब यह कि आवागमन का अक़ीदा एक ऐसा अक़ीदा है जिसमें बड़ी पेचीदगियाँ और उलझनें हैं।

नबियों का दृष्टिकोण

अब तीसरे दृष्टिकोण पर ग़ौर कीजिए जिसे नबी (Prophets) शुरू से बताते रहे कि इस ज़िन्दगी के बाद निश्चित रूप से एक दूसरी ज़िन्दगी है जिसमें अच्छाई का अच्छा और बुराई का बुरा बदला मिलेगा। वह दूसरी ज़िन्दगी कभी ख़त्म नहीं होगी, बल्कि हमेशा बाक़ी रहेगी। यह दृष्टिकोण ज्ञानात्मक और बौद्धिक दोनों दृष्टि से दिल को मुतमइन करनेवाला है और ठीक न्यायिक आधार पर है। जब दिल को तसल्ली होती है कि नेकी कभी बेकार नहीं होती, अगर इस

सांसारिक जीवन में इसका फल न भी मिला तो भी कोई हरज नहीं क्योंकि एक जगह ऐसी मौजूद है जहाँ इसका फल ज़रूर मिलता है। तो फिर इनसान नेकी पर क़ायम रहता है, चाहे उसे उसकी अच्छाई का कोई सांसारिक फल मिले या न मिले। ऐसे ही यह ईमान कि बुराई का बदला अगर दुनिया में न भी मिला तो भी एक जगह ऐसी है जहाँ उसका बुरा बदला मिलेगा। यह यक़ीन इनसान के दिल में बुरे कर्मों से बचने का विचार पैदा करता है, चाहे उसे वे तमाम साधन और आसानियाँ हासिल हों जिनसे वह एक गुनहगार जैसी ज़िन्दगी बसर कर सके।

नबियों के बताए हुए परलोक-दृष्टिकोण का इनसानी सीरत से गहरा संबंध है। जिन इनसानों का यह आख़िरत का अक़ीदा मज़बूत होगा उनकी सीरत (चरित्र) उतनी ही मज़बूत होगी, और जिनका अक़ीदा व यक़ीन जितना कमज़ोर होगा उनकी सीरत उतनी ही कमज़ोर होगी। यह अक़ीदा भलाइयों का अभिलाषी बनाता है और बुराइयों से नफ़रत करनेवाला बनाता है और इस दुनिया का आराम और उसकी रौनक़ और ख़ुशहाली भी अधिकतर इसी बात पर निर्भर है कि उसके रहनेवाले भलाइयों के अभिलाषी हों और बुराइयों से घृणा करें।

नबियों ने जो दृष्टिकोण पेश किया उसकी तफ़सीलात पर ग़ौर करने से जिन सच्चाइयों का पता चलता है, वे ये हैं—

(1) ज़िन्दगी की नापाएदारी और आख़िरत की हमेशगी,

(2) मौत की कैफ़ियत,

(3) आलमे बरज़ख़ या क़ब्र के हालात,

(4) क़ियामत का दिन और उसके हालात, और

(5) जन्नत और दोज़ख़।

आगे के पन्नों में नबियों के सिखाए हुए आख़िरत के दृष्टिकोण की तफ़सीलात एक-एक करके पेश की जाएँगी।

ज़िन्दगी की नापाएदारी और आख़िरत की हमेशगी

इनसानी ज़िन्दगी की नापाएदारी और आख़िरत के घर की हमेशगी एक ऐसा विषय है जिसके बारे में क़ुरआन मजीद और हदीसों में बहुत कुछ बताया गया है।

क़ुरआन मजीद की सूरा अल-मोमिन, आयत नं० 39 में बयान हुआ है—

"यह दुनिया तो बस अस्थायी फ़ायदा है और जो आख़िरत है वही पाएदार घर है।"

सूरा अल-आला, आयत 16 से 17 में फ़रमाया—

"बल्कि तुम तो दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह देते हो; हालाँकि आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहनेवाली है।"

सूरा अल-अनकबूत, आयत 64 में फ़रमाया—

"और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस खेल-तमाशा है, और बेशक जो पिछला घर है हक़ीक़त में वही ज़िन्दगी है; काश वे इस बात को जानते!"

इन आयतों से यह मुराद नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी चूँकि नापाएदार, अस्थायी और खेल-तमाशा है, इसलिए इसे छोड़कर एक तरफ़ हो जाओ। बल्कि मुराद यह है कि चूँकि यह बहुत छोटी है और इसके मुक़ाबिले में आख़िरत का घर हमेशा रहनेवाला और बड़ा पाएदार है, इसलिए इस छोटी-सी ज़िन्दगी में ऐसे काम न करने बैठ जाना जिससे वह हमेशा रहनेवाली दाएमी ज़िन्दगी (Immortal life) ख़राब हो जाए, क्योंकि असल मंज़िल तो वह दाएमी ज़िन्दगी ही है। यह छोटी-सी दुनियवी ज़िन्दगी तो इसलिए अता की गई कि उस हमेशा रहनेवाली ज़िन्दगी के लिए सामान कर लें। अब अगर हम इस छोटी-सी ज़िन्दगी ही को मंज़िले मक़सूद बनाकर बैठ गए, तो फिर जब यह ख़त्म हो जाएगी और वह हमेशा रहनेवाली ज़िन्दगी शुरू होगी जिसके लिए कुछ तैयारी नहीं की होगी तो फिर कैसा अफ़सोस और पश्चाताप होगा कि कैसे साधन को मंज़िल बनाए रहे और मंज़िल को भूले बैठे रहे।

चुनांचे सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़, आयत 35 में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है—

"और परहेज़गारों के लिए (अच्छी) आख़िरत तेरे परवरदिगार के यहाँ है।"

और सूरा बनी इसराईल, आयत 21 में फ़रमाया—

"और बेशक आख़िरत दर्जों की दृष्टि से सबसे बड़ी है और फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) की दृष्टि से भी बड़ी है।"

फिर सूरा बनी इसराईल, आयत 19 में फ़रमाया—

"और जिसने आख़िरत चाही और उसके लिए कोशिश की जैसा उसके कोशिश करने का हक़ है और वह ईमानवाला हुआ तो यही लोग हैं जिनकी कोशिश की क़द्र की जाएगी।"

सूरा अल-क़सस, आयत 83 में कहा गया है—

"यह पिछला घर है जिसे हम उन लोगों को देंगे जो मुल्क में न सरकशी चाहते हैं और न फ़साद; और अंजाम नेक परहेज़गारों का है।"

सूरा अल-मोमिनून 112 से 114 में अल्लाह तआला कहता है—

"अल्लाह कहेगा : तुम ज़मीन में गिनती के कितने साल रहे। वे कहेंगे कि हम एक दिन रहे होंगे या दिन का भी कुछ हिस्सा। तो तू गिननेवालों से पूछ ले। अल्लाह फ़रमाएगा कि तुम तो बहुत ही थोड़ा रहे; काश तुम जानते होते!"

इस आयत में उसी हक़ीक़त की तरफ़ इशारा किया गया है कि वास्तव में दुनिया की ज़िन्दगी बड़ी छोटी है। अपनी कोताहियों के कारण हम इसे न सिर्फ़ लम्बी बल्कि शायद पाएदार ही समझते रहते हैं। लेकिन जब यह ख़त्म हो जाएगी और जब आख़िरत के अहवाल पेश आएँगे, तो उस वक़्त इसका संक्षिप्त होना सही तौर पर ज़ेहननशीन हो जाएगा। फिर उस वक़्त ऐसा महसूस होगा मानो कि एक दिन या शायद पूरा दिन भी नहीं, बल्कि दिन का कुछ हिस्सा रहे। जैसा सूरा यूनुस, आयत 45 में वर्णन हुआ है—

"और जिस दिन वह उन्हें इकट्ठा करेगा, ऐसे मालूम होगा
में ये केवल दिन की एक घड़ीभर ठहरे थे।"

सूरा अन-नाज़िआत, आयत 46 में फ़रमाया है—

"जिस दिन वे उसे देखेंगे, ऐसा मालूम होगा कि मानो वे (दिन में) एक शाम या उसकी सुबह से ज़्यादा नहीं ठहरे।"

इसी तरह हुज़ूर (सल्ल०) ने भी मुसलमानों को इस विषय पर बहुमूल्य हिदायतें दी हैं।

इब्न शद्दाद में रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि दुनिया की मिसाल आख़िरत के मुक़ाबिले में बस ऐसी है जैसे कि तुममें से कोई

आदमी अपनी एक उँगली दरिया में डालकर निकाल ले और फिर देखे कि पानी की कितनी मिक़दार उसमें लगकर आई है। (मुसलिम)

एक दरिया के पानी के मुक़ाबिले में वह थोड़ा-सा पानी जो उँगली को लग जाता है कुछ हैसियत नहीं रखता। इसी तरह आख़िरत की ज़िन्दगी के मुक़ाबले में इस दुनिया क़ी ज़िन्दगी बेहक़ीक़त है।

एक रूह जब इनसानी जिस्म की शक्ल में एक बार इस दुनिया में जन्म ले लेती है, तो फिर उसके सामने एक न ख़त्म होनेवाली ज़िन्दगी होती है। यह दायमी ज़िन्दगी तीन दौरों में बँटी हुई है। इसका पहला दौर पैदाइश से लेकर मौत तक चलता है। मौत के बाद जिस्म तो बज़ाहिर मिट्टी में दफ़न कर दिया जाता है, मगर रूह अपनी ज़िन्दगी की दूसरी अवस्था में दाख़िल होकर अपना सफ़र जारी रखती है। यह वह दौर है जो शारीरिक मौत के वक़्त से लेकर क़ियामत के आने तक चलेगा। इसे आलमे बरज़ख़ या क़ब्र की ज़िन्दगी कहते हैं। फिर जब क़ियामत आएगी तो इनसान अपनी ज़िन्दगी के तीसरे दौर में दाख़िल होगा। यह क़ियामत से शुरू हो जाएगा और फिर कभी ख़त्म नहीं होगा। इस दौर के आख़िर में न कोई मौत है न बरज़ख़, न कोई और क़ियामत है। इनसानी ज़िन्दगी का यह आख़िरी हिस्सा स्थायी और दायमी है और इससे कोई निसबत ही नहीं उन दो पहले दौरों को जो चाहे कितने ही लम्बे क्यों न हो जाएँ मगर एक न एक दिन ज़रूर ख़त्म होने होते हैं।

इस हक़ीक़त को सामने रखें तो पता चलता है कि हमारी ज़िन्दगी की इन तीनों स्थितियों (Stages) में सबसे छोटी स्थिति और अस्थायी स्थिति वह है जिसे हम सांसारिक जीवन कहते हैं और जिसे हम सबसे ज़्यादा महत्त्व देते हैं, और हमारी ज़िन्दगी का कभी न ख़त्म होनेवाला हिस्सा वह है जो क़ियामत के बाद शुरू होगा और जो हमें भूले से ही कभी याद आता है।

इस हक़ीक़त को समझ लेने के बाद एक और बड़ी और दूरगामी नतीजों को रखनेवाली हक़ीक़त को समझना ज़रूरी है और वह यह है कि यद्यपि सांसारिक जीवन अत्यन्त छोटा और क्षण भंगुर है और क़ियामत के बाद की ज़िन्दगी हमेशा-हमेशा रहनेवाली है। मगर वह शाश्वत और हमेशा-हमेशा रहनेवाली ज़िन्दगी उसी स्थिति में आरामदायक और ख़ुशगवार हो सकती है कि इस सांसारिक जीवन को नेक काम करते हुए और परहेज़गारी के साथ बसर किया गया हो। और अगर ऐसा न किया गया और इस दुनियावी ज़िन्दगी में कुफ़्र और नाफ़रमानी, ज़ुल्म व बददियानती का रवैया अपनाए रखा गया, तो फिर इन चन्द दिनों की मनमानी उस न ख़त्म होनेवाली ज़िन्दगी को अज़ाब और मुसीबत की

ज़िन्दगी बना देगी।

मानो कि यह सांसारिक जीवन एक ही समय पर अत्यन्त महत्त्वहीन और साथ ही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भी है। महत्त्वहीन इन मानों में है कि यह बड़ा संक्षिप्त और नापाएदार है, और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इन मानों में है कि उस पाएदार ज़िन्दगी का अच्छा या बुरा होना इसी नापाएदार ज़िन्दगी के कर्मों के भला या बुरा होने पर निर्भर है। अत: जब सारी दुनिया का रब अल्लाह और उसके पाक रसूल (सल्ल०) दुनिया की बेहक़ीक़ती का ज़िक्र करते हैं या इसे "मात्र खेल-तमाशा" या "अस्थायी लाभ" या "थोड़ा साज़ो सामान" या "तुच्छ और बेक़ीमत" क़रार देते हैं तो इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं होता कि चूँकि यह दुनिया खेल-तमाशा, अस्थाई लाभ या अपमानित और बेक़ीमत है इसलिए इसे छोड़कर अलग हो जाओ; बल्कि यह मतलब होता है कि यह दुनिया ख़ुद ही मक़सूद नहीं, बल्कि मक़सूद को प्राप्त करने का साधन है। इसकी ख़ुद की मोहकता और लाभ बिलकुल मामूली है। अगर तुमने इसी को मक़सूद बना लिया तो फिर मानो तुम बहुत ही थोड़ा-सा और नापाएदार लाभ पाकर संतुष्ट हो गए। इस सांसारिक जीवन की असल अहमियत इस हक़ीक़त में है कि यह आख़िरत की ज़िन्दगी सँवारने का साधन है, इसलिए इससे वही काम लिया जाना चाहिए जिससे स्थायी और शाश्वत लाभ प्राप्त हो।

नीचे की हदीसें दुनिया की नापाएदारी और उसके तुच्छ होने को ज़ेहननशीन करती हैं।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) का गुज़र बकरी के एक बूचे (कान कटे) मुर्दा बच्चे के क़रीब से हुआ, जो रास्ते में मरा पड़ा था। उस वक़्त आपके साथ जो लोग थे उनसे आपने फ़रमाया—"तुममें से कोई इस मरे हुए बच्चे को सिर्फ़ एक दिरहम में ख़रीदना पसन्द करेगा?" उन्होंने अर्ज़ किया कि हम तो इसे किसी क़ीमत पर भी ख़रीदना पसन्द नहीं करेंगे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—"क़सम है ख़ुदा की, कि दुनिया अल्लाह के नज़दीक इससे ज़्यादा तुच्छ और बेक़ीमत है जितना तुच्छ और बेक़ीमत तुम्हारे निकट यह बच्चा है।" (मुसलिम)

हज़रत सहल (रज़ि०) बिन साद से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया—"अगर अल्लाह के नज़दीक दुनिया की क़द्र व क़ीमत मच्छर के बराबर भी होती तो किसी काफ़िर और इनकार करनेवाले को वह एक घूँट भी न देता।"
(इब्न माजा, तिरमिज़ी, मुसनद अहमद)

हज़रत इब्न उमर (रज़ि०) बयान करते हैं कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने मेरे दोनों कंधे पकड़कर फ़रमाया कि दुनिया में मुसाफ़िर या राहगीर की तरह रहना।

चुनांचे हज़रत इब्न उमर (रज़ि०) का यह हाल था कि फ़रमाया करते थे कि जब शाम हो जाए तो सुबह का इंतिज़ार मत कर, और जब सुबह हो जाए तो शाम के इंतिज़ार में न रह। अपनी सेहत के ज़माने में, अपनी बीमारी के ज़माने के लिए सामान तैयार कर ले और अपनी ज़िन्दगी में अपनी मौत के लिए तैयारी कर ले।

(बुख़ारी)

यह बड़े अफ़सोस की बात है कि कुछ बड़े नेक और ख़ुदा से डरनेवाले लोगों ने भी दुनिया की बेहक़ीक़ती का ज़िक्र पढ़कर इसका यही मतलब लिया कि चूँकि दुनिया बेहक़ीक़त है, इसलिए इसे छोड़कर अलग हो जाओ और इबादत और तपस्या में वक़्त गुज़ारो। हालाँकि इसका यह मतलब नहीं है। ऊपर लिखी हुई हदीसों पर ग़ौर कीजिए कि जब हुज़ूर (सल्ल०) ने हज़रत इब्न उमर (रज़ि०) से फ़रमाया कि दुनिया में मुसाफ़िर या राहगीर की तरह रहना तो हुज़ूर (सल्ल०) के फ़रमानों का सही मतलब समझनेवाले उन बुज़ुर्ग ने इससे यही मतलब लिया कि 'ज़िन्दगी में अपनी मौत के लिए तैयारी कर ले।'

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) बयान करते हैं कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन दोज़ख़ियों में से एक ऐसे शख़्स को लाया जाएगा जो दुनियावालों में सबसे ज़्यादा मालदार था। फिर उसको दोज़ख़ के अन्दर एक बार डाला जाएगा और फिर कहा जाएगा कि ऐ आदम के बेटे! क्या तूने कभी भलाई देखी? क्या तेरे ऊपर कभी राहतों का दौर भी गुज़रा? तो वह कहेगा : नहीं, ख़ुदा की क़सम ऐ मेरे रब! (मुझपर तो कभी राहतों का दौर नहीं गुज़रा।)

और जन्नतियों में से एक शख़्स को लाया जाएगा जो कि दुनियावालों में सबसे ज़्यादा तंगी में था, और उसे एक बार जन्नत में दाख़िल किया जाएगा। फिर उससे कहा जाएगा कि ऐ आदम के बेटे! क्या तूने कभी कोई तंगी देखी? क्या तेरे ऊपर कभी सख़्ती का ज़माना भी गुज़रा? वह शख़्स कहेगा; नहीं, ख़ुदा की क़सम मैंने तो कभी तंगी नहीं देखी और न मेरे ऊपर कभी सख़्ती का दौर गुज़रा। (मुसलिम)

इस हदीस में दुनिया के आराम और तकलीफ़ों के अल्पकालिक और बेहक़ीक़त होने का बयान है और यह दिमाग़ में बैठाया गया है कि यह आराम और तकलीफ़ें आख़िरत की आराम और तकलीफ़ों के मुक़ाबले में बिलकुल

नगण्य हैं। जो शख़्स दुनिया में बड़े ऐश व आराम में रहा होगा, मगर उसके कर्म अच्छे न रहे होंगे, जब वह दोज़ख़ की तकलीफ़ का मज़ा चख़ लेगा तो वह दुनिया के सुख-चैन को इस तरह भूल जाएगा कि वह ख़ुदा की क़सम खाकर कहेगा कि मैंने तो कभी कोई सुख देखा ही नहीं था। ऐसे ही जो शख़्स दुनिया में बहुत ही तंगी में रहा होगा वह जब जन्नत के सुखों को देख लेगा तो वह अपनी सांसारिक तकलीफ़ों को इस तरह भूल जाएगा कि ख़ुदा की क़सम खाकर कहेगा कि मुझपर तो कभी कोई सख़्ती गुज़री ही नहीं।

'दीन' के बुज़ुर्गों ने भी दुनिया की नापाएदारी और अहमियत के बारे में बहुत कुछ फ़रमाया है। 'जामिया अश-रफ़िया' के संस्थापक मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहब फ़रमाते हैं—

"दुनिया में रहना भी एक नेमत है कि जन्नत का सामान हासिल करने का यहाँ मौक़ा दिया जाता है।"

और कहा—

"तमाम तमन्नाएँ तो जन्नत ही में पूरी होंगी। वहाँ जो चाहोगे मिल जाएगा। दुनिया में तो तसल्ली होती नहीं, बल्कि तजल्ली (छलक) होती है।"

फ़रमाया—

"लोग कहते हैं कि दुनिया नक़द है और आख़िरत उधार, यह ग़लत है। वे इसको नहीं देखते कि दुनिया में भी उधार का-सा मामला है। मिसाल के तौर पर खेती को देखें कि कितनी मेहनत और इंतिज़ार के बाद अनाज आता है। इसी तरह नौकरी को देखें, व्यापार और दुकानदारी की हालतों को देखें। क्या ये नक़द हैं? फिर दुनिया में जो कुछ नियत समय के बाद मिलता है वह संदिग्ध और ग़ैर यक़ीनी होता है और आख़िरत में जो मिलेगा वह यक़ीनी होगा।"

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मुसलमानों के बारे में इस बात को नापसन्द करते थे कि मुसलमान दुनिया ही को सब कुछ समझना शुरू कर दें और इस तरह इसमें फँसकर रह जाएँ।

हज़रत अम्र बिन औफ़ से रिवायत है कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "मैं तुमपर ग़रीबी व नादारी आने से नहीं डरता, लेकिन मुझे तुम्हारे बारे में यह डर ज़रूर है कि दुनिया तुमपर विस्तृत कर दी जाए जैसा कि तुमसे पहले लोगों पर विस्तृत (अर्थात धन सम्पत्ति की बहुतायत होना) की गई थी। फिर तुम इसको

बहुत ज़्यादा चाहने लगो जैसा कि उन्होंने इसको बहुत ज़्यादा चाहा था और वह तुमको बरबाद कर दे जैसाकि उसने उन पिछलों को बरबाद किया था।"

(बुख़ारी, मुसलिम)

बयान किया जाता है कि हज़रत इबराहीम बिन अदहम (रह०) बैतुल्लाह (काबा) की ओर जा रहे थे। आप पैदल थे। रास्ते में एक ऊँटनी पर सवार अरबी बद्दू मिला और पूछने लगा कि ऐ शैख़! किधर का इरादा है? आपने फ़रमाया—"बैतुल्लाह की तरफ़ जा रहा हूँ।" बद्दू बोला, "इतना लम्बा सफ़र और आपके पास कोई सवारी नहीं। मंज़िल कैसे तय होगी?" फ़रमाया—

"मेरे पास कई सवारियाँ हैं जो तुम्हें नज़र नहीं आतीं। जब बलाओं का हुजूम होता है तो सब्र की सवारी कर लेता हूँ। नेमतें मिलती हैं तो शुक्र के घोड़े पर चढ़ जाता हूँ। क़ज़ा नाज़िल होती है तो रिज़ा के ऊँट पर सवार हो जाता हूँ। और जब इच्छाशक्ति (नफ़्स) किसी चीज़ के लिए बुलाती है तो समझ जाता हूँ कि ज़्यादा उम्र बीत गई और थोड़ी बाक़ी रह गई है।"

अरबी बद्दू ने कहा—"आप बेशक सफ़र करें। सच यह है कि आप सवार हैं और मैं पैदल हूँ।"

एक क़िस्सा बयान किया जाता है कि ईरान के मशहूर बादशाह जमशेद ने मरने से पहले एक चश्मे (पानी का स्रोत) पर पत्थर का एक कतबा[1] लगवाया जिसपर ये शब्द दर्ज कराए—

"इस चश्मे पर मुझ जैसे बहुतों ने दम लिया, लेकिन वे पलक झपकने में विदा हो गए। मैंने दुनिया बहादुरी और ज़ोर से हासिल की, मगर मैं इसे अपने साथ क़ब्र में न ले जा सका...।"

---

1. वह इबारत जो प्रायः क़ब्रों, मसजिदों और सरायों आदि के दरवाज़ों पर लिखवाकर या खुदवाकर लगा देते हैं। —अनुवादक

मौत

मौत वह मंज़िल है जिससे हर जानदार को लाज़िमन गुज़रना है। जो एक बार पैदा हो गया उसकी पैदाइश के साथ ही उसपर यह भी लाज़िम हो गया कि एक न एक दिन मौत की घाटी ज़रूर पार करेगा। क़ुरआन मजीद और पवित्र हदीसों में मौत का ज़िक्र भी अधिकता के साथ किया गया है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक की सूरा अम्बिया, आयत 35 में फ़रमाया है—

"हर शख़्स मौत का मज़ा चखनेवाला है और हम तुम्हें बुराई और भलाई में फाँसकर आज़माते हैं, और तुम हमारी ही तरफ़ लौटाए जाओगे।"

सूरा अज़-ज़ुमर, आयत 30 में इरशाद हुआ है—

"ऐ नबी! कुछ शक नहीं कि तू भी मरनेवाला है और वे भी मरनेवाले हैं।"

सूरा अर-रहमान, आयत 26 में फ़रमाया—

"हर एक जो ज़मीन पर है ख़त्म होनेवाला है।"

सूरा अल-आराफ़, आयत 34 में फ़रमाया—

"और हर गिरोह के लिए एक समय निश्चित है। तो जिस वक़्त उनकी नियत अवधि आ जाएगी उस वक़्त एक पल न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे।"

सूरा क़ाफ़, आयत 19 में इरशाद फ़रमाया—

"और मौत की बेहोशी जो हक़ है आई, यह वह (हक़ीक़त) है जिससे तू भागता था।"

सूरा अल-मोमिनून, आयत 99-100 में बयान हुआ है—

"यहाँ तक कि जब उनमें से किसी को मौत आती है तो कहता है—ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे (दुनिया में) फिर वापस भेज, ताकि जिस (संसार) को मैं छोड़ आया हूँ उसमें अच्छे कर्म करूँ। हरगिज़ नहीं, यह तो एक बात है जो वह कहेगा. . .।"

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी बयान करते हैं कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब जनाज़ा रख दिया जाता है और आदमी उसे अपने कँधों पर उठा लेते हैं, तो अगर वह मय्यत (शव) नेक होती है तो कहती है कि "मुझे आगे ले चलो, मुझे आगे ले चलो।" और अगर वह मय्यत नेक नहीं होती तो कहती

है—"हाय मेरी कमबख़्ती ! मुझे कहाँ लिए जा रहे हो।" उसकी आवाज़ सिवाए इनसान के हर चीज़ सुनती है। और अगर इनसान इस आवाज़ को सुन ले तो उसकी शिद्दत (तीव्रता) की वजह से मर जाए। (बुख़ारी)

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) बयान करते हैं कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि मय्यत के पीछे तीन चीज़ें जाती हैं। उसके घरवाले, उसका माल और उसका अमल। तो दो वापस आ जाती हैं और एक उसके साथ रहती है। उसके घरवाले और उसका माल वापस आ जाते हैं और उसका अमल (उसके पास) बाक़ी रह जाता है। (बुख़ारी, मुसलिम)

मौत के बारे में एक महत्त्वपूर्ण बात जो बताई गई है, वह यह है कि हर इनसान की मौत जिस जगह आनी है और जिस वक़्त होगी वह ख़ुदा के यहाँ मुक़र्रर हो चुका है और अब इसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।

क़ुरआन पाक की सूरा नूह, आयत 4 में अल्लाह ने फ़रमाया—

"बेशक जब अल्लाह का ठहराया हुआ (मुक़र्रर) वक़्त आ जाता है तो वह पीछे नहीं हटाया जाता, काश तुम जानते होते !"

मौत के 'वक़्त' और 'जगह' के नियत होने के अक़ीदे ने मुसलमानों में बेपनाह बहादुरी पैदा कर दी थी। चूँकि उनके दिल की गहराइयों में यह अक़ीदा रच-बस चुका था कि ख़तरों में कूद पड़ने से मौत नहीं आया करती, बल्कि मौत तो उस वक़्त आएगी जब उसे आना होगा। यही वजह थी कि वे निडर होकर अपने से कई-कई गुना ज़्यादा लश्करों से भिड़ जाया करते थे और आख़िर फ़तहयाब (विजयी) हो जाते थे।

सूरा अहज़ाब, आयत 16 में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है—

"(ऐ नबी) कह दो कि अगर तुम मौत या क़त्ल से भागो तो यह भागना तुम्हें कभी भी लाभ नहीं देगा, और उस समय तुम्हें थोड़ा ही लाभ पहुँचाया जाएगा।"

बनू उमैया के मशहूर दीनदार ख़लीफ़ा हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) के हालात में बयान किया जाता है कि आप मौत को अकसर याद करते थे। उनके यहाँ रात को फ़ुक़हा (इस्लाम के धर्मशास्त्री) जमा होकर मौत और क़ियामत का ज़िक्र करते थे। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) मौत के डर से रात-रातभर जागा करते थे और उसपर ग़ौर व फ़िक्र करते थे। एक दिन उन्होंने अपने एक साथी से कहा कि मैं ग़ौर व फ़िक्र में रातभर जागता रहा। उसने पूछा कि आप किस बारे में ग़ौर व फ़िक्र करते थे। बोले—"क़ब्रवालों के बारे में। तुम

अगर मुर्दे को तीन दिन के बाद क़ब्र में देखो तो उससे लगाव के बावजूद तुम उसके पास जाने से घबराओगे।" हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) ने अपने राज्य-प्रबंध की नींव मौत के डर पर क़ायम कर रखी थी। उन्होंने सिर्फ़ कुछ साल की हुकूमत की थी, और कुछ सालों में इतने सुधार किए कि हुकूमत की काया-पलट हो गई थी और प्रजा बहुत ख़ुशहाल हो गई थी। यह सब कुछ जो उन्होंने किया ख़ुदा के डर, क़ियामत के हिसाब-किताब और मौत के डर से किया।

मौत हर वक़्त इनसान के क़रीब होती है। ज़िन्दगी एक ऐसी चीज़ है जिसकी कुछ ज़मानत नहीं दी जा सकती। एक क्षण गुज़र रहा है तो नहीं कहा जा सकता कि दूसरा क्षण आएगा या नहीं।

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) बयान करते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने कुछ लकीरें खींची, फिर फ़रमाया कि यह तो इनसान है और यह उसकी मौत है। इनसान इसी तरीक़े से रहता है (और तमन्नाएँ करता रहता है) कि क़रीब की लकीरें (यानी मौत) उसे आ लेती है। (बुख़ारी)

क़ब्र या आलमे बरज़ख़

मौत की मंज़िल से गुज़रने के बाद इनसान को क़ब्र की मंज़िल पेश आती है। अपनी मौत से लेकर क़ियामत के आने तक इनसानी रूहें (आत्माएँ) जहाँ रहेंगी उसे "आलमे बरज़ख़" कहा जाता है। प्यारे रसूल (सल्ल०) की हदीसों से मालूम होता है कि आलमे बरज़ख़ में भी अज़ाब और राहत मौजूद है। जिन लोगों ने ज़िन्दगी में कुफ़्र और नाफ़रमानी का रवैया अपनाए रखा होगा उनका अज़ाब आलमे बरज़ख़ यानी क़ब्र ही से शुरू हो जाएगा और जो दुनिया में सीधी राह पर चलते रहे होंगे उनके लिए क़ब्र की ज़िन्दगी ही राहत और आराम की ज़िन्दगी हो जाएगी। नीचे लिखी हदीसें इसको स्पष्ट कर देती हैं।

हज़रत बरा बिन आज़िब से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि (अल्लाह का मोमिन) बन्दा जब इस दुनिया से रुख़सत होकर आलमे बरज़ख़ में पहुँचता है यानी क़ब्र में दफ़न कर दिया जाता है तो उसके पास अल्लाह के दो फ़रिश्ते आते हैं, वे उसको उठाकर बिठाते हैं, फिर उससे पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? वह कहता है कि मेरा रब "अल्लाह" है। फिर पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है? वह कहता है कि मेरा दीन "इस्लाम" है। फिर पूछते हैं कि यह आदमी जो तुम्हारे अन्दर (नबी की हैसियत से) खड़ा किया गया था उनके बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है? वह कहता है कि वे अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। वे फ़रिश्ते कहते हैं कि तुम्हें यह बात किसने बताई है? वह कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब में पढ़ी तो मैं ईमान लाया और मैंने उनकी पुष्टि (तसदीक़) की। इसके बाद ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि एक आवाज़ देनेवाला आसमान से आवाज़ देता है कि मेरे बन्दे ने ठीक बात की और सही-सही जवाब दिया। अतः उसके लिए जन्नत का बिछौना करो और जन्नत का उसको लिबास पहनाओ और जन्नत की तरफ़ उसके लिए दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे वह दरवाज़ा खोल दिया जाता है और उससे जन्नत की ख़ुशगवार हवाएँ और ख़ुशबू आती हैं और क़ब्र में उसके लिए, कुशादगी कर दी जाती है, जहाँ तक उसकी नज़र जाती है।

इसके बाद हुज़ूर (सल्ल०) ने ईमान न लानेवाले का हाल बयान किया कि (मरने के बाद) उसकी आत्मा उसके शरीर में लौटाई जाती है और उसके पास भी दो फ़रिश्ते आते हैं। वे उसे बिठाते हैं और उससे भी पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? वह कहता है, "हाय-हाय! मैं कुछ नहीं जानता।" फिर फ़रिश्ते उससे पूछते हैं

कि तेरा दीन क्या था? वह कहता है कि हाय-हाय! मैं कुछ नहीं जानता। फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि यह आदमी जो तुम्हारे पास (नबी की हैसियत से) भेजा गया था, तुम्हारा इसके बारे में क्या ख़याल था? वह फिर भी यही कहता है कि हाय-हाय! मैं कुछ नहीं जानता।

इस सवाल-जवाब के बाद आसमान से एक पुकारनेवाला अल्लाह की ओर से पुकारता है कि इसने झूठ कहा। अतः अल्लाह की ओर से पुकारनेवाला कहेगा कि इसके लिए दोज़ख़ का बिछौना तैयार करो और दोज़ख़ का इसको लिबास पहनाओ और इसके लिए दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दो। (अतः यह सब कुछ कर दिया जाएगा।) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि (दोज़ख़ के उस दरवाज़े से) उसको बराबर दोज़ख़ की गर्मी और दोज़ख़ की लपटें और जलाने और झुलसानेवाली हवाएँ उसके पास आती रहेंगी. . . (और उसकी क़ब्र उसके लिए इतनी तंग कर दी जाएगी जिसकी वजह से (इतना दबाव पड़ेगा कि) उसके सीने की पसलियाँ इधर से उधर हो जाएँगी, फिर उसको अज़ाब देने के लिए एक फ़रिश्ता उसपर नियुक्त किया जाएगा जो न कुछ देखेगा, न सुनेगा। (हदीस)

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बन्दा जब अपनी क़ब्र में रख दिया जाता है और उसके साथी वापस चल देते हैं तो वह उनकी जूतियों की आवाज़ सुन रहा होता है, उस समय उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं। वे उसको बिठाते हैं, फिर उससे पूछते हैं कि तुम इसके बारे में क्या कहते थे? उनका यह सवाल ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) के बारे में होता है। अतः जो सच्चा मोमिन होता है, वह कहता है कि मैं गवाही देता हूँ कि ये अल्लाह के बन्दे और उसके सच्चे रसूल हैं। फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि दोज़ख़ में जो तुम्हारी जगह होनेवाली थी ज़रा उसको देख लो। अब अल्लाह ने उसके बदले तुम्हारे लिए जन्नत में एक जगह प्रदान कर दी है। उसको भी देख लो। अतः वह दोनों को देखेगा।

और जो मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) और काफ़िर होता है, तो उसी तरह उससे भी पूछा जाता है कि उस व्यक्ति के बारे में तुम क्या कहते थे? तो वह मुनाफ़िक़ और काफ़िर कहता है कि मैं उनके बारे में ख़ुद तो कुछ जानता नहीं। दूसरे लोग जो कहा करते थे, वही मैं भी कहता था। उससे कहा जाएगा कि तूने न तो ख़ुद जाना और न (जानकर ईमानवालों की) तूने पैरवी की, और लोहे की छड़ों से उसे मारा जाएगा, जिससे वह इस तरह चीख़ेगा कि जिन्न और इनसान के अलावा उसके आस-पास की हर चीज़ उसका चीख़ना सुनेगी। (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने बयान फ़रमाया कि तुममें से कोई जब मर जाता है तो हर सुबह व शाम उसके सामने उसका ठिकाना पेश किया जाता है। अगर वह जन्नतवालों में से है तो जन्नतवालों के मक़ाम में से (उसका जो मक़ाम होनेवाला होता है) वह हर सुबह व शाम उसके सामने किया जाता है और उसको दिखलाया जाता है, और अगर वह मरनेवाला दोज़ख़वालों में से होता है तो (इसी तरह सुबह व शाम) दोज़ख़वालों के मक़ामात में से (उसका मक़ाम उसके सामने किया जाता है) और कहा जाता है कि यह होनेवाला है तेरा स्थायी ठिकाना, जबकि अल्लाह तुझे अपनी तरफ़ उठाएगा, क़ियामत के दिन। (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत उसमान (रज़ि०) के संबंध में उल्लेख किया जाता है कि जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो बहुत रोते। उनसे पूछा गया कि आप जन्नत-दोज़ख़ को याद करते हैं तो नहीं रोते और क़ब्र की वजह से इस तरह रोते हैं? उन्होंने जवाब दिया कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) फ़रमाते थे कि क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है। अतः बन्दा अगर इससे छुटकारा पा गया तो आगे की मंज़िलें इससे अधिक आसान हैं और क़ब्र की मंज़िल से बन्दा छुटकारा न पा सका तो उसके बाद की मंज़िलें इससे और ज़्यादा सख़्त और कठिन हैं और ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) यह भी फ़रमाते थे कि नहीं देखा मैंने कोई मंज़र (दृश्य), मगर यह क़ब्र का मंज़र इतना ज़्यादा दर्दनाक और ख़ौफ़नाक है। (तिरमिज़ी, इब्न माजा)

हज़रत उसमान ग़नी (रज़ि०) से रिवायत है कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) का तरीक़ा था कि जब मय्यत को दफ़न कर देते तो क़ब्र के पास खड़े होते और फ़रमाते कि अपने इस भाई के लिए अल्लाह तआला से बख़्शिश की दुआ करो, और यह भी दुआ करो कि अल्लाह तआला इसको सवालों के जवाब में साबित क़दम रखे। (अबू दाऊद)

स्पष्ट रहे कि सवालों के जवाब से यहाँ अभिप्राय वही सवाल हैं जो इनसान से क़ब्र में किए जाते हैं और जो ऊपर उल्लेख की जा चुकी हदीसों में बयान हुए हैं।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि हज़रत साद बिन मआज़ (रज़ि०) की मृत्यु हुई तो हम लोग हुज़ूर (सल्ल०) के साथ उनके जनाज़े पर गए। हुज़ूर (सल्ल०) ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और उन्हें क़ब्र में उतारकर जब क़ब्र बराबर कर दी गई तो हुज़ूर (सल्ल०) ने "सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह" कहा। हम भी देर तक "सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह" कहते रहे। फिर आपने "अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर" कहना शुरू किया तो हम भी आपकी पैरवी में "अल्लाहु

अकबर, अल्लाहु अकबर" कहने लगे। फिर हमने आपसे पूछा कि "ऐ अल्लाह के रसूल! इस वक़्त आपकी इस तकबीर व तसबीह का क्या ख़ास कारण था?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह के इस नेक बन्दे पर इसकी क़ब्र तंग हो गई थी, यहाँ तक कि अल्लाह ने तंगी की इस कैफ़ियत को दूर करके कुशादगी पैदा कर दी, और उसकी तकलीफ़ दूर कर दी। (मुसनद अहमद)

हज़रत ज़ैद बिन साबित अनसारी (रज़ि०) से रिवायत है कि एक बार जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने ख़च्चर पर सवार होकर बनी नज्जार के एक बाग़ से होकर गुज़र रहे थे कि अचानक आप (सल्ल०) का ख़च्चर रास्ते से हटा और टेढ़ा हुआ। ऐसा लगा कि वह आपको गिरा देगा। अचानक नज़र पड़ी तो देखा कि वहाँ छः या पाँच क़ब्र हैं। हुज़ूर (सल्ल०) ने (साथियों से) फ़रमाया कि इन क़ब्रों के मुर्दों से कौन वाक़िफ़ है? साथियों में से एक ने कहा कि मैं जानता हूँ। आपने फ़रमाया, "ये लोग किस ज़माने में मरे थे?" उस आदमी ने अर्ज़ किया कि "शिर्क के ज़माने में।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ये लोग अपनी क़ब्रों में अज़ाब में ग्रस्त (मुब्तला) हैं। अगर ये ख़ौफ़ न होता कि तुम मुर्दों को दफ़न न कर सकोगे तो मैं अल्लाह से दुआ करता कि क़ब्र के अज़ाब में से जितना कुछ मैं सुन रहा हूँ वह उसमें से कुछ तुम्हें भी सुना दे।" यह कहने के बाद आप (सल्ल०) हमारी तरफ़ मुड़े और फ़रमाया, "दोज़ख़ के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगो।" सबकी ज़बान से निकला, "हम दोज़ख़ के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगते हैं।" आपने फ़रमाया, "क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगो।" सबने कहा, "हम क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगते हैं।" आपने फ़रमाया, "सभी फ़ितनों से अल्लाह की पनाह माँगो—ज़ाहिरी फ़ितनों से भी और बातिनी फ़ितनों से भी।" सभी ने कहा, "हम सब ज़ाहिरी और बातिनी फ़ितनों से अल्लाह की पनाह माँगते हैं।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दज्जाल के फ़ितने से अल्लाह की पनाह माँगो।" सभी ने कहा, "हम दज्जाल के फ़ितने से भी अल्लाह की पनाह माँगते हैं।" (मुसलिम)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि एक दिन हुज़ूर (सल्ल०) नमाज़ के लिए घर से मसजिद तशरीफ़ लाए तो आपने लोगों को इस हाल में देखा कि वे मानो खिलखिलाकर हँस रहे हैं। हुज़ूर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, "मैं तुम्हें बताता हूँ कि अगर तुम लोग लज़्ज़तों को तोड़ देनेवाली मौत को ज़्यादा याद करो तो वह तुम्हें इस ग़फ़लत में मुब्तला न होने दे। इसलिए मौत को ज़्यादा याद करो। हक़ीक़त यह है कि क़ब्र हर रोज़ पुकारती है कि मैं मुसाफ़िरत और तनहाई का घर हूँ; मैं मिट्टी और कीड़ों का घर हूँ। जब वह बन्दा ज़मीन के

सुपुर्द किया जाता है, जो वास्तविक मोमिन और मुसलिम हो तो ज़मीन कहती है : "मरहबा, ख़ूब आए, और अपने ही घर आए। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि जितने लोग मेरे ऊपर चलते थे उनमें सबसे ज़्यादा प्यारे और चहेते मुझे तुम ही थे और आज जब तुम मेरे सुपुर्द कर दिए गए हो और मेरे पास आ गए हो तो तुम देखोगे कि (तुम्हारी ख़िदमत और तुम्हें आराम पहुँचाने के लिए) मैं तुम्हारे साथ क्या मामला करती हूँ।" फिर वह ज़मीन मोमिन बंदे के लिए निगाह की हद तक फैल हो जाती है और उसके लिए जन्नत की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है। और जब कोई सख़्त बदकार क़िस्म का आदमी (या आप सल्ल० ने फ़रमाया कि ईमान न लानेवाला आदमी) ज़मीन के सुपुर्द किया जाता है तो ज़मीन उससे कहती है कि जितने आदमी मेरे ऊपर चलते-फिरते थे, तू मुझे उन सबमें सबसे ज़्यादा नापसन्द और अप्रिय था और आज जब तू मेरे हवाले कर दिया गया है और मेरे क़बज़े में आ गया है तो अभी तू देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या करती हूँ। आप (सल्ल०) ने आगे फ़रमाया कि फिर वह ज़मीन हर तरफ़ से उसको भींचती और दबाती है, यहाँ तक कि उसके दबाव से उसकी पसलियाँ इधर से उधर हो जाती हैं।

इस हदीस के आख़िर में हुज़ूर (सल्ल०) ने बयान फ़रमाया कि इसके सिवा कुछ नहीं कि क़ब्र या तो जन्नत के बाग़ीचों में से एक बाग़ीचा है या दोज़ख़ की ख़न्दक़ों में से एक ख़न्दक़ (खाई) है। (तिरमिज़ी)

मिस्र-विजेता हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि०) का इन्तिक़ाल होने लगा तो वसीयत की कि मुझे दफ़न करना तो थोड़ी-सी मिट्टी डालना। फिर क़ब्र के पास इतनी देर तक खड़े रहना कि ऊँट ज़बह कर दिए जाएँ और उनका गोश्त बाँट दिया जाए, ताकि तुम्हारे साथ लगाव क़ायम रहे और इतनी देर में ख़ुदा के क़ासिदों (मुंकर नकीर)[1] का जवाब सोच लूँ। (मुसलिम)

हज़रत अली (रज़ि०) एक बार क़ब्रिस्तान में गए। एक निगाह क़ब्रों पर डाली और क़ब्रवालों को संबोधित (मुख़ातब) करके कहा, "ऐ क़ब्रों में बसनेवालो ! ऐ खण्डहरों में रहनेवालो ! ऐ वहशत और तनहाई में रहनेवालो ! कहो क्या ख़बर है, कहो क्या हाल है? हमारा तो यह हाल है कि माल तक़सीम कर लिए गए, औलादें यतीम हो गईं, बीवियों ने दूसरे शौहर कर लिए। यह तो हमारा हाल है। अब तुम भी तो अपनी कुछ ख़ैर-ख़बर सुनाओ।" फिर आप कुछ देर चुप रहे। आपके साथ हज़रत कुमैल (रज़ि०) भी थे। उनकी तरफ़ देखा और फ़रमाया,

---

1. वे दो फ़रिश्ते जो क़ब्र में मुर्दे से सवाल करते हैं। —अनुवादक

"कुमैल ! अगर इन क़ब्रों के बाशिन्दों को बोलने की इजाज़त होती तो ये कहते कि बेहतरीन चीज़ तो परहेज़गारी है।" यह कहने के साथ ही आप (रज़ि०) रोने लगे। देर तक रोते रहे फिर बोले, "कुमैल ! क़ब्र अमल का संदूक़ है और मौत के वक़्त ही यह बात मालूम हो जाती है।

शैख़ सादी (रह०) फ़रमाते हैं कि मेरा एक बेटा था। यह लड़का निहायत ख़ूबसूरत था और मुझे उससे बहुत ही ज़्यादा मुहब्बत थी। उसकी मौत से मुझ पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा और मैं होश व हवास खो बैठा। इसी बदहवासी की हालत में अपने प्यारे बेटे की क़ब्र पर पहुँचा और क़ब्र का एक तख़्ता उखाड़कर दिल के टुकड़े को देखना चाहा; लेकिन वहाँ का ख़ौफ़नाक मंज़र देखकर काँप उठा और बेहोश होकर गिर पड़ा। होश में आया तो बेटे को हाल की ज़बान से यह कहते सुना, "अगर तुझे अँधेरी जगह से घबराहट हुई है तो होशियार रह और रौशनी लेकर आ। अगर तू चाहता है कि क़ब्र की रात, दिन की तरह रौशन हो तो उस जगह अमल का चिराग़ रौशन कर ले।"

क़ियामत

अल्लाह तआला अपनी किताब क़ुरआन मजीद में हमें बताता है कि एक दिन ऐसा होगा, जब वह तमाम पैदा की हुई चीज़ों को मिटा देगा। उसी दिन का नाम 'क़ियामत' है।

उस दिन के बारे में क़ुरआन मजीद और हदीस में हमें बहुत-सी जानकारियाँ मिलती हैं। उदाहरण के तौर पर पहला सूर फूँका जाएगा और क़ियामत बरपा हो जाएगी। सूर के बारे में हदीस में आता है कि यह एक सींग होगा जिसमें फूँका जाएगा, और जब उसमें फूँका जाएगा तो एक हौलनाक आवाज़ पैदा होगी। फिर इस क़द्र ज़लज़ले (भूकम्प) आएँगे और झटके महसूस होंगे कि पहाड़ों जैसी मज़बूत और जमीं हुई चीज़ उड़ी-उड़ी फिरेगी। कहीं बयान हुआ कि पहाड़ चलाए जाएँगे, कहीं ज़िक्र हुआ कि वे रेत के भुरभुरे टीले हो जाएँगे और कहीं कहा गया है कि वह धुनकी हुई रूई की तरह हो जाएँगे।

ज़मीन के अन्दर जो कुछ है वह उसे बाहर डाल देगी और ज़मीन के ऊँच-नीच ख़त्म हो जाएँगे। वह चटयल मैदान हो जाएगी, न उसमें कोई मोड़ या टेढ़ रहेगा और न ऊँचाई। आसमान के चाँद, सूरज और सितारों में भी इंक़िलाब आ जाएगा। चाँद फट जाएगा, सूरज प्रकाशहीन हो जाएगा, सितारे चमक खो देंगे। सूरज धरती से बहुत क़रीब हो जाएगा और गर्मी अत्यंत तेज़ हो जाएगी।

क़ियामत के दिन पहले तो सब लोग मर जाएँगे, मगर फिर दोबारा सूर फूँका जाएगा तो सब अगले-पिछले दोबारा ज़िन्दा होकर अल्लाह के सामने हाज़िर होंगे। इसे "हश्र" कहा जाता है।

फिर लोगों ने अपने सांसारिक जीवन में जो कुछ किया होगा उसके बारे में पूछ-गच्छ होगी और हिसाब-किताब लिया जाएगा कि किसने कैसा काम किया। इस सिलसिले में कई चीज़ों का उल्लेख आता है। मिसाल के तौर पर नाम-ए-आमाल (कर्मपत्री) का, पुलसिरात का, मीज़ान का, हौज़े कौसर का, प्यारे रसूल (सल्ल०) की शिफ़ाअत (सिफ़ारिश) का। फिर यह भी बताया जाता है कि लोग कई गिरोहों में बँट जाएँगे। कोई भले लोगों का गिरोह होगा और कोई बुरों का। फिर उन लोगों के अलग-अलग नतीजे बताए जाते हैं। जिसे नाम-ए-आमाल कहा गया है वह यह होगा कि हर इनसान ने ज़िन्दगी में जो कुछ भी किया होगा उसका पूरा रिकार्ड उसके हवाले कर दिया जाएगा और वह ख़ुद देख लेगा कि वह क्या कुछ करके आया है।

पुलसिरात के बारे में बताया जाता है कि वह एक रास्ता होगा जो जहन्नम के ऊपर से गुज़रेगा। हर इनसान को इसके ऊपर से गुज़रना होगा। भले आदमियों के लिए इसपर से गुज़रना आसान होगा और बुरे लोग गिरकर जहन्नम में जा पड़ेंगे। इसी तरह इनसानों के कर्म तौले जाएँगे कि इनमें से हर एक की अच्छाइयाँ ज़्यादा हैं कि बुराइयाँ।

यह भी बताया जाता है कि उस दिन प्यारे रसूल (सल्ल०) कुछ ख़ुशक़िस्मत लोगों की सिफ़ारिश भी करेंगे। जगत के पालनहार अल्लाह की तरफ़ से आप (सल्ल०) को इसकी इजाज़त होगी। हौज़े कौसर के बारे में हदीसें बताती हैं कि यह एक हौज़ होगा जो हुज़ूर (सल्ल०) को प्रदान किया जाएगा और नेक कर्म करनेवालों को इसमें से पानी पिलाया जाएगा।

क़ियामत के दिन के बारे में बताया जाता है कि यह बहुत ही लम्बा दिन होगा। गुनहगारों के लिए बड़ा सख़्त होगा, मगर नेक लोग उस दिन की कठिनाइयों और तकलीफ़ों से ख़ुदा की पनाह में होंगे।

यह वह दिन होगा जब हर आदमी को अपनी ही पड़ी होगी और कोई किसी तरफ़ ध्यान नहीं देगा। यहाँ तक कि माँ-बाप और बच्चे भी एक-दूसरे से भागेंगे। परेशानी और भाग-दौड़ का आलम होगा।

यह भी बताया गया है कि क़ियामत के दिन इनसान के अपने अंग ही उसके ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि इस आदमी ने हमसे यह और यह बुरा काम लिया।

इस तरह इनसानों की जाँच-परख करने के बाद उनमें से हर एक का आख़िरी अंजाम तय कर दिया जाएगा। जो इनाम के हक़दार ठहरेंगे वे जन्नत में भेज दिए जाएँगे, जो हमेशा रहनेवाली, कभी न ख़त्म होनेवाली और अत्यंत कमाल को पहुँची हुई सुख और आराम की जगह होगी और जो अज़ाब के हक़दार साबित होंगे उन्हें जहन्नम की आग के शोलों की भेंट चढ़ा दिया जाएगा।

क़ियामत के लक्षण

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) बयान करते हैं कि एक दिन हम अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास बैठे थे कि एक अनजान व्यक्ति आया। उसके कपड़े बहुत सफ़ेद और बाल बहुत काले थे। उसपर सफ़र के लक्षण भी प्रकट न थे और न ही हममें से कोई उसे पहचानता था। वह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के घुटनों से घुटने मिलाकर बैठ गया और अपनी हथेलियाँ आपकी दोनों रानों पर रख दीं और अर्ज़ किया, "ऐ मुहम्मद ! मुझे इस्लाम के बारे में बताइए।"

आपने फ़रमाया कि इस्लाम यह है कि तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं, और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो, और रमज़ान के रोज़े रखो और सामर्थ्य हो तो ख़ाना-काबा का हज करो।

उस शख़्स ने कहा कि आपने सच कहा।

हज़रत उमर (रज़ि०) कहते हैं कि हमें इस बात पर हैरत हुई कि (ख़ुद ही) सवाल करता है और फिर (ख़ुद ही) उसकी पुष्टि करता है। फिर उसने कहा कि मुझे ईमान की हक़ीक़त बताइए।

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाओ, और भलाई और बुराई की तक़दीर पर यक़ीन रखो।

उसने कहा, "आपने सच फ़रमाया।"

फिर उसने पूछा, "मुझे एहसान के बारे में ख़बर दीजिए।"

आपने बताया कि (एहसान यह है कि) तुम ख़ुदा की इस तरह इबादत करो मानो कि तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम नहीं देखते तो वह तो तुम्हें देख ही रहा है।

उसने कहा, "आपने सच फ़रमाया।"

फिर उसने कहा, "मुझे क़ियामत के बारे में बताइए।"

आपने फ़रमाया कि इसके बारे में जिससे सवाल किया जा रहा है वह पूछनेवाले से ज़्यादा नहीं जानता।

फिर उसने निवेदन किया, "अच्छा क़ियामत की कुछ निशानियाँ बता दीजिए।"

आपने कहा, "जब दासी अपने स्वामी (आक़ा) को जन्म देने लगे और नंगे

पाँववाले, नंगे शरीरवाले, मुहताज, बकरियाँ चरानेवाले इमारतों पर गर्व करने लगें।"

इसके बाद वह शख़्स चला गया। कुछ देर ठहरकर हुज़ूर (सल्ल०) ने मुझसे फ़रमाया, "ऐ उमर ! क्या तुम जानते हो कि यह सवाल करनेवाला कौन था?" मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) बेहतर जानते हैं। आप (सल्ल०) ने बताया कि ये जिबरील (अलैहि०) थे और तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने के लिए आए थे। (बुख़ारी, मुसलिम)

इस हदीस में हुज़ूर (सल्ल०) ने क़ियामत की दो निशानियाँ बताईं। एक यह कि दासी अपना स्वामी जनने लगेगी, दूसरा यह कि नंगे पाँववाले, नंगे शरीरवाले, मुहताज, बकरियाँ चरानेवाले इमारतों पर गर्व करने लगेंगे।

इनकी व्याख्या में इस्लाम के विद्वानों का कहना है कि 'दासी अपने स्वामी जनने लगेगी' से या तो यह मुराद हो सकता है कि क़ियामत के क़रीब बहुत-से लोग दासियों की संतान होंगे जो ख़ुद आज़ाद होंगे और इस तरह गोया दासी अपना स्वामी अर्थात् आज़ाद औलाद को जन्म देगी। या, फिर यह अभिप्राय हो सकता है कि क़ियामत के क़रीब औलाद की निगाह में माताओं का महत्त्व इतना कम हो जाएगा कि मानो वह दासियों के दर्जे पर आ गिरेंगी और औलाद उनसे ऐसा सलूक करेगी जैसे स्वामी दासियों से करते हैं।

'नंगे पाँववाले, नंगे शरीरवाले, मुहताज, बकरियाँ चरानेवाले इमारतों पर गर्व करने लगेंगे' का मतलब यह बताया जाता है कि जो लोग स्वाभाविक रूप से गिरे होंगे उनके पास दौलत की अधिकता हो जाएगी और वह उस दौलत से कोई बेहतर काम लेने के बजाए उसे परस्पर गर्व का साधन बना लेंगे।

इन दो निशानियों के अलावा प्यारे रसूल (सल्ल०) ने क़ियामत के क़रीब की कुछ और निशानियाँ भी बताई हैं।

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) को फ़रमाते सुना कि क़ियामत की निशानियाँ ये हैं कि इल्म (ज्ञान) उठा लिया जाएगा, जिहालत ज़्यादा होगी, बदकारी अधिक बढ़ जाएगी, शराब बहुत पी जाएगी, मर्दों की संख्या कम हो जाएगी और औरतों की संख्या बढ़ जाएगी। यहाँ तक कि 50 औरतों की देखभाल करनेवाला एक मर्द होगा। (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत जाबिर बिन समरा (रज़ि०) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, क़ियामत घटित होने से पहले बहुत-से झूठे पैदा होंगे। तुम अपने आपको उनसे बचाना। (मुसलिम)

झूठों से यहाँ मुराद या तो झूठी हदीसें गढ़नेवाले हैं या झूठे नबी।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि एक देहाती अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आया और पूछा "क़ियामत कब होगी?" रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब अमानत नष्ट हो जाए तब तू क़ियामत का इंतिज़ार कर।"

देहाती ने निवेदन किया, "अमानत किस प्रकार नष्ट होगी?" आपने फ़रमाया, "जब शासन-सत्ता अयोग्य लोगों के हाथ में दे दी जाए तब तू क़ियामत का इंतिज़ार कर।"

क़ियामत का घटित होना

जैसाकि पिछले अध्याय में यह आ चुका है कि प्यारे रसूल (सल्ल०) ने क़ियामत की निशानियाँ तो बताई हैं, मगर इसके घटित होने का ठीक वक़्त व ज़माना नहीं बताया, क्योंकि इसका ज्ञान स्वयं हुज़ूर (सल्ल०) को भी नहीं दिया गया था। किन्तु यह स्पष्ट रूप से बता दिया गया है कि वह निश्चित रूप से घटित होगी। सूरा हज, आयत 7 में अल्लाह ने फ़रमाया है—

"और यह कि क़ियामत हर हाल में आनेवाली है, इसमें संदेह नहीं और यह कि अल्लाह उन लोगों को जो क़ब्रों में हैं उठाएगा।"

सूरा आराफ़, आयत 187 में हुक्म हुआ है—

"लोग तुमसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि उसके घटित होने का वक़्त कब है? कह दो कि इसका ज्ञान तो मेरे परवरदिगार ही के पास है। वही उसको उसके वक़्त पर प्रकट करेगा, वह आसमानों और ज़मीन में भारी चीज़ होगी, तुमपर अचानक ही आ जाएगी।"

क़ियामत के घटित होने पर जो कुछ पेश आएगा उसे अल्लाह ने जगह-जगह बयान किया है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जिस व्यक्ति की यह ख़ुशी हो कि क़ियामत का मंज़र वह इस तरह देखे कि मानो कि वह सब कुछ अपनी आँखों से देख रहा है तो वह क़ुरआन मजीद की सूरा अत-तकवीर, अल-इनफ़ितार, अल-इनशिक़ाक़ को पढ़े। (मुसनद, अहमद, तिरमिज़ी)

ये तीनों सूरतें क़ुरआन मजीद के आख़िरी पारे में हैं। सूरा अत-तकवीर की आरंभिक आयतों में अल्लाह ने फ़रमाया है—

"जब सूरज लपेट लिया जाएगा और जब सितारे प्रकाशहीन हो जाएँगे और जब पहाड़ चला दिए जाएँगे और जब ऊँटनियाँ छुटी फिरने लगेंगी, और जब वहशी जानवर इकट्ठे कर दिए जाएँगे और जब समुद्र भड़का दिए जाएँगे और जब एक-एक प्रकार के लोग इकट्ठे कर दिए जाएँगे और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से सवाल किया जाएगा कि वह किस गुनाह पर क़त्ल की गई थी और जब कर्मपत्र खोल दिए जाएँगे और जब आसमान की खाल खींची जाएगी और जब दोज़ख़ ख़ूब दहका दी जाएगी और जब जन्नत (जन्नतवालों के) निकट कर दी जाएगी (उस वक़्त) हर शख़्स जान लेगा (उन कर्मों को) जिन्हें वह लेकर आया होगा...।"

इन आयतों से जो कुछ मालूम होता है, वह यह है कि क़ियामत के दिन सूरज और सितारे दोनों अपनी रौशनी खो बैठेंगे और अंधकारमय हो जाएँगे।

यह वह दिन होगा कि पहाड़ों जैसी भारी-भरकम और जमी हुई चीज़ उड़ती फिरेगी और दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ जो अरबों के यहाँ क़ीमती माल समझी जाती थीं छुटी फिरेंगी और कोई उनकी परवाह न करेगा, क्योंकि हर शख़्स को अपनी जान की ऐसी पड़ी होगी कि क़ीमती से क़ीमती चीज़ की ओर भी ध्यान न दिया जाएगा।

यह ऐसा कठिन दिन होगा कि जंगली जानवर भी अपने स्वभाव के जंगलीपन को भूल-भालकर आपस में गडमड हो जाएँगे और समुद्र उस दिन भड़का दिए जाएँगे, यानी उनका पानी आग और भाप में बदल जाएगा। उस दिन लोग गिरोहों में बँट जाएँगे अर्थात् मोमिन-मोमिन इकट्ठे कर दिए जाएँगे और काफ़िर-काफ़िर इकट्ठे।

काफ़िर अरबों के यहाँ नियम था कि अगर उनके यहाँ लड़की पैदा होती तो उसे बड़ी ज़िल्लत और शर्म की बात समझते थे और कई बाप ऐसे होते थे कि मारे शर्मिन्दगी के अपनी बच्ची को ज़िन्दा दफ़न कर देते थे। क़ियामत के दिन उन निर्दोष बच्चियों का मुक़द्दमा भी पेश होगा और पूछा जाएगा कि आख़िर उनका गुनाह क्या था कि उन्हें ऐसी बर्बरता की मौत मार दिया जाता था।

उस दिन लोगों के आमालनामे (कर्म-पत्र) खोलकर सामने कर दिए जाएँगे और हर व्यक्ति देख लेगा कि उसके आमालनामे में क्या दर्ज है। इस वक़्त आसमान के उस तरफ़ की चीज़ें नज़र नहीं आतीं मगर उस दिन आसमान इस तरह खोल दिया जाएगा कि उस तरफ़ की चीज़ें नज़र आने लगेंगी। इसी को कहा है कि आसमान की खाल खींच ली जाएगी। दोज़ख़ के बारे में हुक्म हुआ है कि उसे ख़ूब भड़का दिया जाएगा और जन्नत नेक काम करनेवालों के निकट कर दी जाएगी।

जब यह सब कुछ घटित होगा तो उस दिन हर इनसान को पता चल जाएगा कि वह दुनिया में क्या-क्या नेकियाँ और क्या-क्या बुराइयाँ करके आया है।

क़ुरआन की सूरा अल-इनफ़ितार में अल्लाह ने फ़रमाया है—

"जब आसमान फट जाएगा और जब सितारे झड़ पड़ेंगे, और जब समुद्र बह पड़ेंगे और जब क़ब्रें फाड़ दी जाएँगी (तो उस वक़्त) हर शख़्स अपने अगले और पिछले कर्म को जान लेगा।"

आगे फिर इनसान को सम्बोधित करके चेतावनी देते हुए कहा है—

"ऐ इनसान तुझे (आख़िर) किस चीज़ ने धोखे में डाल रखा है अपने

उदार परवरदिगार के बारे में। (वह परवरदिगार) जिसने तुझे पैदा किया, फिर तेरे अंगों को दुरुस्त किया, फिर तुझे संतुलन के साथ बनाया (और) जिस रूप में भी चाहा तुझे जोड़कर बना दिया।"

इनसान पर अपने ये एहसान बयान करके आगे उसकी उद्दण्डता और सरकशी की असल वजह बयान की है कि तुम अपने उपकारी स्रष्टा से इसलिए अकड़ते हो कि तुम हक़ीक़त में क़ियामत के दिन अच्छे और बुरे कर्मों का बदला पाने का यक़ीन नहीं रखते। फ़रमाया—

"हरगिज़ नहीं। वास्तविकता यह है कि तुम अच्छे और बुरे कर्मों का बदला पाने ही को झुठलाते हो। हालाँकि तुम्हारे ऊपर (हमारी तरफ़ से) याद रखनेवाले, प्रतिष्ठित लिखनेवाले (फ़रिश्ते मुक़र्रर) हैं। (ताकि तुम्हारी हर नेकी और हर बुराई लिखते जाएँ) वे तुम्हारे कर्मों को जानते हैं।"

आगे नेक लोगों का अच्छा अंजाम और बुरे लोगों के बुरे अंजाम का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया—

"नेक लोग बेशक आराम में होंगे और बदकार लोग बेशक दोज़ख़ में होंगे। वे उसमें दाख़िल होंगे बदला पाने के दिन और (फिर) उससे बाहर न होंगे, और आपको क्या ख़बर कि बदले का दिन क्या है? फिर आपको कुछ ख़बर है कि वह बदले का दिन क्या है? यह वह दिन है कि (उस दिन) किसी का किसी के लिए कुछ बस न चलेगा और हुकूमत उस दिन सारी की सारी अल्लाह ही की होगी।"

सूरा अल-इनशिक़ाक़ में अल्लाह ने फ़रमाया है—

"और जब आसमान फट जाएगा और अपने परवरदिगार का हुक्म सुन लेगा और वह इसी लायक़ है, और जब ज़मीन खींच दी जाएगी और अपने अन्दर की चीज़ों को निकाल फेंकेगी और ख़ाली हो जाएगी और अपने परवरदिगार का हुक्म सुन लेगी और वह उसी लायक़ है। ऐ इनसान! तू अपने पालनहार के पास पहुँचने तक (यानी मरने के वक़्त तक) काम में कोशिश कर रहा है। फिर (क़ियामत के दिन) इस (काम के प्रतिफल) से जा मिलेगा। तो (उस दिन) जिस शख़्स का कर्म-पत्र (आमालनामा) उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा, उससे आसान हिसाब लिया जाएगा और वह शख़्स ख़ुश-ख़ुश अपने संबंधियों के पास आएगा और जिस शख़्स का कर्म-पत्र उसे (उसके बाएँ हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा, वह मौत को पुकारेगा और जहन्नम में दाख़िल होगा।"

आगे बताया गया है कि उस गुनहगार शख़्स के इस शिक्षाप्रद अंजाम की वजह क्या होगी। वह यह होगी कि दुनिया की ज़िन्दगी गुज़ारते हुए उसने कभी यह ख़याल न किया था कि एक दिन उसे ख़ुदा की तरफ़ लौटकर जाना है और अपने कर्मों का हिसाब भी देना है। वह तो दुनिया की ज़िन्दगी ही में मस्त था, और आख़िरत को बिलकुल भुलाए हुए था। हालाँकि उसका ख़ुदा उसके सब कर्मों को देख रहा था। फ़रमाया—

"बेशक यह शख़्स (दुनिया में) अपने संबंधियों के बीच ख़ुश-ख़ुश रहता था (और आख़िरत को याद नहीं करता था)। उसने ख़याल कर रखा था कि उसको (ख़ुदा की तरफ़) लौटना नहीं है। (लौटना) क्यों न होता; उसका रब तो उसे ख़ूब देख रहा था।"

इन तीनों सूरतों के अलावा भी जगह-जगह क़ियामत के हालात का उल्लेख मिलता है। सूरा अल-क़ारिआ में हुक्म हुआ है—

"वह खड़-खड़ानेवाली चीज़ ! कैसी कुछ है वह खड़-खड़ानेवाली चीज़ ! और आपको क्या ख़बर कि वह खड़-खड़ानेवाली चीज़ क्या है ? (यह वह दिन होगा) जिस रोज़ इनसान परेशान पतंगों की तरह हो जाएँगे और पहाड़ धुनकी हुई ऊन की तरह हो जाएँगे, फिर जिस किसी का (अच्छे कर्मों का) पलड़ा भारी निकलेगा वह ख़्वाहिशों के मुताबिक़ ऐशो आराम में होगा। और जिस किसी का (अच्छे कर्मों का) पलड़ा हलका निकलेगा, उसका ठिकाना दोज़ख़ के सबसे नीचे के तबक़े में होगा, और आपको कुछ ख़बर है कि वह क्या चीज़ है। वह दहकती हुई आग है।"

सूरा अज़-ज़ुमर, आयत 68 में फ़रमाया—

"और सूर फूँका जाएगा, तो जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं सब बेहोश हो जाएँगे, सिवाय उसके जिसे अल्लाह चाहे।"

सूरा अन-नम्ल, आयत 87 में फ़रमाया—

"और जिस दिन सूर फूँका जाएगा, तो जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं सब घबरा जाएँगे, सिवाय उसके जिसे अल्लाह चाहे।"

सूरा अल-हाक़्क़ा, आयत 13-15 में फ़रमाया—

"फिर जब सूर अचानक फूँक दिया जाएगा और ज़मीन और पहाड़ उठा लिए जाएँगे और दोनों एक ही बार में चूर्ण-विचूर्ण (रेज़ा-रेज़ा) कर दिए जाएँगे, तो उस दिन आ पड़नेवाली आ पड़ेगी।"

सूरा क़ाफ़, आयत 42 में फ़रमाया—

"जिस दिन वह चिंघाड़ (यानी सूर की डरावनी आवाज़) जो बरहक़ है, सुनेंगे यही (क़ब्रों से) निकलने का दिन होगा।"

सूरा अन-नबा, आयत 18 में फ़रमाया—

"और जिस दिन सूर (दूसरी बार) फूँका जाएगा तो तुम झुण्ड के झुण्ड चले आओगे।"

सूरा या०सीन०, आयत नम्बर 51 में फ़रमाया—

"और सूर फूँका जाएगा तो उसी दम वे क़ब्रों से निकलकर अपने परवरदिगार की तरफ़ दौड़ेंगे।"

क़ियामत के दिन ज़मीन व आसमान, सूरज, चाँद सितारे और सय्यारे आदि में जो तबदीली पैदा होगी उनका ज़िक्र करते हुए फ़रमाया—

"जिस दिन ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी और (इसी तरह) आसमान भी (बदल दिए जाएँगे) और वे लोग उस अल्लाह के सामने खुलकर आ जाएँगे जो अकेला और ज़बरदस्त है।" (क़ुरआन, 14 : 48)

"जिस दिन आसमान पिघले हुए ताँबे की तरह (लाल तप्त) हो जाएगा।" (क़ुरआन, 70 : 8)

"जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कँपकँपाएँगे और पहाड़ भुरभुरे टीले हो जाएँगे।" (क़ुरआन, 73 : 14)

"और ज़मीन अपने परवरदिगार के नूर (प्रकाश) से चमक उठेगी।" (क़ुरआन, 39 : 69)

"जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेट लेंगे जिस तरह पंजी में पन्नों को लपेट दिया जाता है। जिस तरह हमने पहली बार पैदाइश शुरू की थी, उसी तरह हम उसे दुहराएँगे। ये हमारे ज़िम्मे वादा है। बेशक हम ऐसा करनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 21 : 104)

क़ियामत के दिन फ़रिश्तों के नाज़िल होने का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया—

"जिस दिन आसमान एक बदली पर से फट जाएगा और फ़रिश्ते अधिकता से (ज़मीन पर) उतारे जाएँगे।" (क़ुरआन, 25 : 25)

"जिस दिन रूह (जिबरईल) और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे कुछ न बोलेंगे, मगर वही जिसको रहमान इजाज़त दे और जो हक़ की बात कहे।" (क़ुरआन, 78 : 38)

"और तेरा परवरदिगार और फ़रिश्ते (लोगों की) एक-एक सफ़ के पास

आएँगे।" (क़ुरआन, 89 : 22)

"और तू फ़रिश्तों को अर्श के गिर्द घेरा बनाए खड़ा देखेगा। वे अपने रब की तारीफ़ के साथ (उसकी) पाकी बयान कर रहे होंगे।"

(क़ुरआन, 39 : 75)

क़ियामत के अचानक घटित हो जाने के मुताल्लिक़ फ़रमाया—

"बल्कि वह उनपर अचानक आएगी और उन्हें भौचक्का बना देगी। फिर न वे उसको टाल सकेंगे और न उन्हें मुहलत ही दी जाएगी।"

(क़ुरआन, 21 : 40)

क़ियामत की सख़्तियों के बारे में फ़रमाया—

"जिस दिन तुम उसे देखोगे, हाल यह होगा कि हर दूध पिलानेवाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी, और हर गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी और तुम लोगों को नशे की-सी हालत में देखेगा। हालाँकि वे नशे में नहीं होंगे, बल्कि अल्लाह का अज़ाब ही सख़्त होगा।"

(क़ुरआन, 22 : 2)

"जिस दिन हम बड़ी पकड़ करेंगे, बेशक हम बदला लेनेवाले हैं।"

(क़ुरआन, 44 : 16)

जैसाकि बयान हो चुका है कि पहला सूर फूँका जाएगा तो सब इनसान मर जाएँगे। फिर दूसरी बार फूँका जाएगा तो सब अगले-पिछले इनसान ज़िन्दा होकर अपनी क़ब्रों से निकल आएँगे और अल्लाह तआला की तरफ़ जमा किए जाएँगे, इसी को 'हश्र' कहते हैं।

क़ुरआन की सूरा अल-कहफ़, आयत 47 में बयान हुआ है—

"और हम तमाम इनसानों को इस तरह घेरकर इकट्ठा करेंगे कि (अगलों-पिछलों में से) एक भी न छूटेगा।"

सूरा अत-तग़ाबुन, आयत 9 में फ़रमाया—

"वह (दिन याद रखो जब) तुम्हें उस इकट्ठा होने के दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा। दरअसल वही नुक़सान (और नफ़ा) के ज़ाहिर होने का दिन होगा।"

क़ियामत के दिन आपा-धापी का वह आलम होगा कि दुनिया में जो रिश्ते बड़े प्रिय और क़रीबी समझे जाते हैं उनसे भी इनसान बिलकुल ग़ाफ़िल होगा, और अपनी और अपनी जान ही की चिन्ता में घिरा होगा। सूरा अ-ब-स, आयत 33 से 37 में फ़रमाया है—

"तो जिस वक़्त (क़ियामत का) कान को बहरा कर देनेवाली आवाज़ शुरू हो जाएगी; उस दिन इनसान अपने भाई और अपनी माँ और अपने बाप और अपनी बीवी और अपने बेटों से भागेगा। उनमें से हर एक व्यक्ति को उस दिन अपनी ही पड़ी होगी जो उसे दूसरों से बेपरवाह कर देगी।"

सूरा अल-मआरिज, आयत 10 से 21 में फ़रमाया—

"और कोई जिगरी दोस्त किसी जिगरी दोस्त को न पूछेगा, हालाँकि उन्हें वे भली-भाँति दिखाई भी दे रहे होंगे। मुजरिम (तो उस रोज़ बस) इसकी तमन्ना करेगा कि उस रोज़ की यातना से छूटने के लिए अपने बदले में अपने बेटों को और अपनी बीवी को और अपने भाई को और अपने कुटुम्ब को जिसमें वह बसर करता है और तमाम ज़मीन पर रहनेवालों को बदले में दे दे (कि) फिर (यह फ़िद्या) उसे (यातना से) बचा ले। यह हरगिज़ न होगा। वह आग तो ज्वाला फेंकनेवाली है जो खाल (तक) उतार देगी, और वह बुलावा देगी हर उस व्यक्ति को जिसने पीठ फेरी होगी और मुँह मोड़ा होगा और (माल) जमा किया होगा और उसे सँभालकर और सहेजकर रखा होगा। बेशक इनसान बड़े ही कच्चे दिल का बना हुआ है कि जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो फ़रियाद करने लगता है; और जब उसे ख़ुशहाली होती है तो कंजूसी करने लगता है।"

क़ियामत और क़ियामत के हालात के बारे में प्यारे रसूल (सल्ल०) की हदीसों से भी बहुत-सी बातें मालूम होती हैं।

हज़रत मिक़दाद (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन सूरज दुनिया से बहुत ज़्यादा क़रीब हो जाएगा, यहाँ तक कि उससे सिर्फ़ एक मील की दूरी रह जाएगी। और (उसकी गर्मी से) लोग अपने आमाल (कर्मों) के मुताबिक़ पसीना-पसीना हो जाएँगे। अतः कुछ वे होंगे जिनका पसीना उनकी घुट्टियों तक आएगा और कुछ लोगों का पसीना उनके घुटनों तक होगा और कुछ का उनके कूल्हों के ऊपर तक (यानी कमर तक) और कुछ वे होंगे जिनका पसीना उनके मुँह में जा रहा होगा।" (मुसलिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सूरा ज़िलज़ाल की यह आयत पढ़ी—

यौमइज़िन तुहद्दिसु अख़बारहा।

"क़ियामत के दिन ज़मीन अपनी सब ख़बरें बयान करेगी।"

फिर उपस्थित लोगों से फ़रमाया कि क्या तुम जानते हो कि ज़मीन की ख़बरें क्या हैं? उन्होंने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ही को ज़्यादा इल्म है। आपने फ़रमाया कि उसकी ख़बरें ये हैं कि वह हर बन्दे और हर बन्दी के बारे में गवाही देगी कि उसने फ़लाँ दिन मेरे ऊपर फ़लाँ काम किया था, और फ़लाँ दिन फ़लाँ अमल किया था, अतः ये हैं ज़मीन की ख़बरें (जो क़ियामत के दिन वह बयान करेगी)। (मुसनद अहमद, तिरमिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि सूरज और चाँद क़ियामत के दिन लपेट लिए जाएँगे। (बुख़ारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) कहते हैं कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि सूर एक सींग है जिसको फूँका जाएगा।

(तिरमिज़ी, अबू दाऊद, दारमी)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैं कैसे ख़ुश और बग़ैर ग़म के रह सकता हूँ, जबकि सूरवाला फ़रिश्ता सूर को मुँह में लिए हुए है और अपना कान उसने (हुक्म सुनने के लिए) लगा रखा है और उसकी पेशानी झुकी हुई है, और वह इन्तिज़ार कर रहा है कि कब उसे सूर फूँक देने का हुक्म हो। (यानी जब मुझे इस बात का इल्म है तो मैं कैसे बेफ़िक्र रह सकता हूँ।) सहाबा (रज़ि०) ने अनुरोध किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! तो फिर हमें आपका क्या हुक्म है? (यानी क़ियामत का हर वक़्त ख़तरा है तो हमारी रहनुमाई कीजिए कि हम अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिए क्या करें?) आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—कहते रहा करो :

हसबुनल्लाहु व ने'अमल वकील

"काफ़ी है हमारे लिए अल्लाह और वह क्या ही अच्छा काम को सँवारनेवाला और बनानेवाला है।"

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से ही रिवायत है कि वे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मुझे बताइए कि क़ियामत के दिन जिसके बारे में फ़रमाया गया है कि—"उस दिन लोग खड़े होंगे अपने परवरदिगार के हुज़ूर", तो उस दिन किसको खड़े होने की ताक़त और सामर्थ्य प्राप्त होगी? अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बताया कि सच्चे ईमानवालों के लिए यह खड़ा होना बहुत कम और हलका कर दिया जाएगा। यहाँ तक कि उनके लिए बस एक फ़र्ज़ नमाज़ के बराबर होगा।

इस हदीस की व्याख्या में बताया जाता है कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) का इशारा इस तरफ़ था कि जब क़ियामत के दिन के बारे में बताया जाता है कि वह बेइंतिहा लम्बा होगा तो फिर इतने लम्बे दिन में खड़ा कौन रह सकेगा? हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि सच्चे मोमिन के लिए यह खड़ा होना ऐसे ही होगा जैसे एक फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़ा होना।

समझदार इनसान बहुत दूर तक देखता है। उसे जिस सूरते हाल के बारे में मालूम हो कि एक न एक दिन उससे ज़रूर दो-चार होना है तो वह चाहे कितनी ही दूर नज़र आती हो, अक़्लमंद उसे क़रीब ही समझता है और उसके लिए तैयारी करता रहता है। प्यारे रसूल (सल्ल०) मुसलमानों में इसी दूरंदेशी और समझदारी के इच्छुक थे। मौत और मौत के बाद के हालात हर जानदार को एक दिन निश्चित रूप से पेश आने हैं। उन्हें दूर समझते हुए उनसे लापरवाही बरतना उसी इनसान का काम हो सकता है जो ग़फ़लत और नादानी में लिप्त हो। प्यारे रसूल (सल्ल०) ने इस ग़फ़लत और नादानी को मुसलमानों के लिए हमेशा नुक़सानदेह और घातक समझा।

हज़रत उबैय बिन काब (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का दस्तूर था कि जब दो-तिहाई रात गुज़र जाती तो आप उठते और फ़रमाते, "ऐ लोगो! अल्लाह को याद करो, अल्लाह को याद करो। क़रीब आ गया है हिला डालनेवाला क़ियामत का भूचाल और उसके पीछे आ रहा है दूसरा (भूचाल)। मौत उन सब हालतों को जो उसके साथ आते हैं साथ लेकर सिर पर आ चुकी है। मौत अपने सम्बन्धित और अपने सारे गुणों के साथ सिर पर आ चुकी है।"

(तिरमिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला ज़मीन को अपने पंजे में ले लेगा और आसमान को दाहिने हाथ में लपेट लेगा और फिर फ़रमाएगा—"मैं हूँ बादशाह, कहाँ हैं वे लोग जो दुनिया में बादशाही का दावा करते थे?"

(बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) कहते हैं कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन ख़ुदा आसमानों को लपेट लेगा और फिर उनको दाहिने हाथ में लेकर कहेगा कि मैं हूँ बादशाह। कहाँ हैं ज़ालिम और कहाँ हैं अभिमानी? और फिर बाएँ हाथ में ज़मीन को लपेट लेगा और कहेगा कि मैं हूँ बादशाह, कहाँ हैं अत्याचार करनेवाले और कहाँ हैं अभिमान करनेवाले।"

आमालनामा (कर्म-पत्र)

क़ुरआन व हदीस से हमें मालूम होता है कि इनसान जो भी अपने जीवन में कर्म करता है—चाहे वह भले हों या बुरे—उन सबका रिकार्ड साथ-साथ तैयार होता जाता है। हश्र के दिन यह रिकार्ड इनसान के हवाले कर दिया जाएगा, ताकि वह ख़ुद देख ले कि वह संसार में क्या-क्या करके आया है। इस रिकार्ड को आमालनामा (कर्म-पत्र) कहा जाता है।

नाम-ए-आमाल का यक़ीन पैदा करने का मक़सद यह है कि इनसान हर समय चौकन्ना रहे और बुराइयाँ व ख़राबियाँ करने से बचे। जिस दिल में यह एहसास गहरा होगा वह कोई ग़लत क़दम उठाते समय ज़रूर झिझकेगा कि मैं जो बुराई कर रहा हूँ वह हमेशा के लिए लिख ली जाएगी और क़ियामत के दिन ज़ाहिर हो जाएगी।

क़ुरआन व हदीसों से मालूम होता है कि यह रिकार्ड इतना मुकम्मल होगा कि ज़र्रा बराबर बात भी इससे छूटी न होगी। जो नेकियाँ और बुराइयाँ करके इनसान पूरी तरह भूल चुका होगा वह भी उसमें दर्ज होंगी और जिन कर्मों को इनसान ने बिलकुल साधारण और तुच्छ समझा होगा, वे भी उसमें मौजूद होंगे।

क़ुरआन में यह भी बताया गया है कि हर इनसान पर फ़रिश्ते तैनात हैं जो उसके आमाल लिखते जाते हैं। इन फ़रिश्तों को "किरामन कातिबीन" कहा गया है, जिसका मतलब है—बुज़ुर्ग लिखनेवाले। यह भी बताया गया है कि क़ियामत के दिन भले लोगों को उनके आमालनामे दाएँ हाथ में दिए जाएँगे और वे इस तरह ख़ुश और आनन्दित होंगे कि दूसरे लोगों से भी कहेंगे कि आओ हमारा नाम-ए-आमाल (कर्म-पत्र) पढ़ो, और बुरे लोगों को उनके आमालनामे बाएँ हाथों में पीठ पीछे से दिए जाएँगे और वे मुसीबत व ग़म से पुकार उठेंगे कि काश! हमारा नाम-ए-आमाल हमें दिया ही न जाता और हमें पता ही न चलता कि हमारा हिसाब क्या है।

यहाँ वही इनसानी फ़ितरत बयान हुई है कि जब कोई ख़ुशी की या इज़्ज़त बढ़ानेवाली बात पेश आती है, तो यही इच्छा होती है कि अधिक से अधिक लोगों को इसका इल्म हो और जब कोई रुसवा करनेवाली हालत पेश आती है तो मानो इनसान उसे अपने आपसे भी छिपाना चाहता है। क़ुरआन मजीद की नीचे लिखी आयतें नाम-ए-आमाल (कर्म-पत्र) से संबंधित ही बहस करती हैं—

"और जिसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा वह

(ख़ुश होकर) कहेगा कि आओ मेरा आमालनामा (कर्म-पत्र) पढ़ो। मैं यक़ीन रखता था कि मैं अपने हिसाब से मिलनेवाला हूँ। अतः वह मनपसंद ऐश व आराम में होगा। उच्च जन्नत में जिसके फलों के गुच्छे झुके हुए होंगे (उससे कहा जाएगा) खाओ और पियो, (यह) ख़ुशगवार बदला (आमाल का) है जो तुमने गुज़रे हुए दिनों में किए। लेकिन जिसका नाम-ए-आमाल उसके बाएँ हाथ में दिया जाएगा। वह कहेगा कि काश मुझे मेरा आमालनामा न दिया जाता और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है। काश! मौत ही ख़ात्मा कर चुकी होती। मेरा माल मेरे कुछ भी काम न आया।मेरा ज़ोर (सत्ता भी) मुझसे जाता रहा।"

(क़ुरआन, 69 : 19-29)

"लेकिन जिसका आमालनामा उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा वह मौत माँगेगा।" (क़ुरआन, 84 : 10-11)

"बेशक हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे हर कर्म को लिखते जाते हैं।"

(क़ुरआन, 10 : 21)

"और किताब (नाम-ए-आमाल लाकर) रखी जाएगी, तो तुम गुनहगारों को देखोगे कि जो उसमें लिखा होगा उससे डर रहे होंगे और कहेंगे : हाय हमारी बदनसीबी! यह कैसी किताब है, जो न किसी छोटी बात को छोड़ती है न किसी बड़ी को बल्कि सभी को घेर रखा है। और जो कुछ उन्होंने किया होगा उसको वह मौजूद पाएँगे, और (ऐ नबी!) तेरा परवरदिगार किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।" (क़ुरआन, 18 : 49)

"और बेशक तुमपर निगहबान मुक़र्रर हैं, (यानी) बुज़ुर्ग लिखनेवाले, वे जानते हैं जो तुम करते हो।" (क़ुरआन, 82 : 10-12)

"उस दिन लोग अलग-अलग पेश होंगे; ताकि उन्हें उनके कर्म दिखाए जाएँ, तो जिसने ज़र्रा बराबर भी नेकी की होगी वह उसे देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर भी बुराई की होगी वह भी उसे देख लेगा।"

(क़ुरआन, 99 : 6-8)

"उस दिन हर शख़्स जो कुछ भलाई कर गया है उसको मौजूद पाएगा, और जो बुराई की होगी उसको भी। वह आरज़ू करेगा कि काश! उसमें और इस दिन में लम्बे समय का अन्तराल होता।"

(क़ुरआन, 3 : 30)

क़ुरआन मजीद से यह भी पता चलता है कि इनसान ने अपने विभिन्न अंगों

से काम लेकर जो अनेक गुनाह किए होंगे तो वह अंग भी क़ियामत के दिन उसके ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि इस व्यक्ति ने हमसे फ़लाँ-फ़लाँ बुरा काम लिया था।

अल्लाह ने फ़रमाया :

"आज हम उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पाँव गवाही देंगे, जो-जो कर्म वे किया करते थे।"

(क़ुरआन, 36 : 65)

"और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन आग की ओर इकट्ठे किए जाएँगे, फिर उनको पंक्तिबद्ध किया जाएगा, यहाँ तक कि जब वे उस आग के पास आएँगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उनकी खालें उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगी, जो-जो अमल वे किया करते थे। और वे अपनी खालों से कहेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी? वे कहेंगे कि हमको उसी अल्लाह ने बोलने की शक्ति दी। जिसने हर चीज़ को बोलने की शक्ति प्रदान की है, और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।" (क़ुरआन, 41 : 19-21)

"बेशक, कान और आँख और दिल इन सबसे पूछ-गछ होनी है।"

(क़ुरआन, 17 : 36)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि एक बार उन्हें दोज़ख़ (नरक) का ख़याल आया और वे रोने लगीं। हुज़ूर (सल्ल०) ने पूछा : तुम्हें किस चीज़ ने रुलाया है? उन्होंने बताया कि मुझे दोज़ख़ याद आई और उसी के डर ने मुझे रुलाया है, तो क्या आप क़ियामत के दिन अपने घरवालों को याद रखेंगे? हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया : "तीन जगह तो कोई किसी को याद नहीं रखेगा—एक कर्मों के माप-तौल के वक़्त जब तक यह मालूम न हो जाए कि उसके आमाल का वज़न हलका है या भारी, दूसरे आमालनामों के मिलने के वक़्त जबकि मोमिन लोग दाहिने हाथ में आमालनामा पाकर ख़ुशी-ख़ुशी दूसरे से कहेंगे कि पढ़ो मेरा आमालनामा यहाँ तक कि मालूम हो जाए कि उसका आमालनामा किस हाथ में दिया जाता है— दाहिने हाथ में या पीछे की ओर से बाएँ हाथ में और तीसरे पुलसिरात[1] पर जबकि वह जहन्नम के ऊपर रखा जाएगा और सबको उसके ऊपर से गुज़रने का हुक्म दिया जाएगा।"

1. दोज़ख़ के ऊपर वह पुल जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है। भले लोग (मोमिन) आसानी के साथ उसके ऊपर से गुज़रकर बहिश्त (जन्नत) में चले जाएँगे और बुरे लोग कटकर दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे।

हिसाब-किताब

क़ुरआन मजीद की सूरा बक़रा, आयत 30 में अल्लाह तआला ने फ़रमाया—

"और (वह वक़्त याद करो) जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक नायब बनानेवाला हूँ।"

इस आयत से इस बात की व्याख्या हो जाती है कि इस दुनिया में इनसान की हैसियत ख़ुदा के नायब की है जो ख़ुदा की सल्तनत में ख़ुदा का दीन क़ायम करने का फ़र्ज़ अदा करने के लिए भेजा गया है। उसकी ज़िन्दगी का मक़सद यही है कि वह एक वफ़ादार नायब बनकर रहे और जब तक वह इस दुनिया में मौजूद रहे अपने भेजनेवाले की नियाबत (प्रतिनिधित्व) का ठीक-ठीक हक़ अदा करने के लिए प्रयत्नशील रहे। प्रतिनिधित्व की यह अवधि तभी तक है जब तक शरीर और आत्मा का रिश्ता क़ायम है। जिस समय यह रिश्ता ख़त्म हुआ और इनसान इस दुनिया को छोड़कर अपने भेजनेवाले की तरफ़ वापस चला गया तो प्रतिनिधित्व की मुद्दत भी ख़त्म हो गई। इसके बाद ज़रूरी है कि उससे पूछताछ की जाए कि जब तक वह इस ओहदे पर क़ायम रहा उसका रवैया कैसा रहा?

अल्लाह तआला ने उसे इस ज़िन्दगी को गुज़ारने और इस दुनिया में ख़ुदा का दीन ग़ालिब करने के लिए बहुत-सी ताक़तें, सलाहियतें और भौतिक साधनों की नेमतें प्रदान की थीं। अब देखा जाएगा कि उसने इन ताक़तों, सलाहियतों और योग्यताओं से और भौतिक साधनों से क्या काम लिया। क्या उन्हें उन राहों में ख़र्च किया जिनपर ख़र्च करने से नेमतें देनेवाला हक़ीक़ी मालिक ख़ुश होगा, या उन राहों पर ख़र्च कर डाला जिनपर ख़र्च करने से नेमतें देनेवाला नाराज़ होगा। मिसाल के तौर पर एक व्यक्ति को अल्लाह ने दौलत दी। दौलत अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है। अगर उस शख़्स ने इस नेमत को अपनी उचित ज़रूरतों पर ख़र्च किया, उससे मुहताजों की मदद की, पीड़ित व मज़लूमों को उनका हक़ दिलाने और इस्लाम को फैलाने के कामों पर ख़र्च किया तो हक़ीक़ी मालिक उससे ख़ुश होगा। क्योंकि ये वे ख़र्च हैं जो उसे पसंद हैं, लेकिन अगर उसी दौलत को उसने शराबख़ोरी, रिशवत, सूदख़ोरी और जुआबाज़ी पर ख़र्च कर डाला तो ज़ाहिर है कि उससे वह नेमतें सौंपनेवाला बहुत नाराज़ होगा, क्योंकि ये वे ख़र्च हैं जो उसे बिलकुल नापसंद हैं।

जिसे हिसाब-किताब कहा गया है वह यही है कि क़ियामत के दिन हमसे पूछताछ की जाएगी कि जो नेमतें हमें प्रदान की गई हैं चाहे वह शारीरिक अंगों

और ताक़तों व सलाहियतों की शक्ल में थीं या भौतिक साज़-सामान के रूप में, उन्हें हमने किन राहों पर ख़र्च किया। क्या उन राहों पर जो संसार के पालनहार अल्लाह को ख़ुश करनेवाली थीं या उनपर जो उसके क्रोध को भड़कानेवाली थीं।

फिर यह भी याद रखना चाहिए कि हिसाब-किताब सिर्फ़ उन नेमतों ही का नहीं लिया जाएगा जो हमें दी गई हैं, बल्कि उन ज़िम्मेदारियों का भी लिया जाएगा जो हमपर डाली गई हैं। एक घर का मालिक इस बात का ज़िम्मेदार है कि बीवी-बच्चों को कमाकर खिलाए, उनकी ज़रूरतों को पूरा करे, उनके हक़ों को पूरा करे, उनकी रक्षा करे और उन्हें सीधी राह पर चलाने की कोशिश करता रहे। इसी प्रकार घर की मालिकिन इस बात की ज़िम्मेदार है कि अपने घर की देखभाल करे, शौहर का कहा माने, उसकी मददगार बने, बच्चों की परवरिश करे और शौहर की कमाई को पूरी ईमानदारी के साथ सही राह में ख़र्च करे। एक सेवक इस बात का ज़िम्मेदार है कि मालिक के माल में बेईमानी न करे, काम से जी न चुराए और हराम का वेतन न ले। इसी तरह मालिक भी ज़िम्मेदार है कि सेवक व नौकर के हक़ों को पूरा करे, उसका वेतन वक़्त पर दे और पूरा अदा कर दे। उससे उतना ही काम ले जितना वह कर सकता हो। उसके दुख-दर्द में हमदर्द साबित हो। देश का ज़िम्मेदार शासक वर्ग है। उसकी ज़िम्मेदारी है कि जनता के हक़ को अदा करे, उनकी सुरक्षा और ख़ुशहाली के लिए कोशिश करता रहे। सही मानों में उनका ख़ादिम और सेवक साबित हो और एक मुसलमान की हैसियत से उनके दीन, ईमान और अख़लाक़ की बेहतरी के लिए बन्दोबस्त करता रहे। दूसरी तरफ़ जनता की ज़िम्मेदारी है कि शासक वर्ग के आदेशों का अनुपालन करे, उसकी सहयोगी बने। शासक की तरफ़ से जो ज़िम्मेदारियाँ उसपर आती हों उनसे जान बचाने की कोशिश न करे और अकारण विरोध व बग़ावत की ओर न बढ़े।

मतलब यह कि दुनिया में कोई इनसान ऐसा नहीं जिसे ख़ुदा ने अपनी नेमतें न दी हों और ज़िम्मेदारियाँ न डाली हों। क़ियामत के दिन अल्लाह तआला इस बात का भी हिसाब-किताब लेंगे कि जो नेमतें दी थीं उन्हें तुमने किन राहों पर ख़र्च किया और इसका भी कि जो ज़िम्मेदारियाँ तुमपर डाली गई थीं उन्हें तुमने कहाँ तक पूरा किया।

क़ियामत के हिसाब-किताब के सिलसिले में यह भी बताया गया है कि जब इनसान से पूछताछ होगी तो उसके अपने शारीरिक अंग भी गवाही देंगे और जो-जो बुरे काम उन अंगों से लिया होगा, वे उन्हें पूरा-पूरा बयान कर देंगे। क्योंकि शारीरिक अंग उसे इसलिए नहीं दिए गए थे कि वह उनसे काम लेकर गुनाहों की राह पर चले, बल्कि वे तो इसलिए दिए गए थे कि वह अल्लाह का

आज्ञाकारी बन्दा बनने में उनकी सहायता करे। अब उन अंगों से ग़लत काम लेकर उसने उन अंगों पर ज़्यादती की, इसलिए क़ियामत के दिन वे इस ज़ुल्म की फ़रियाद करेंगे।

अल्लाह ने आख़िरत के इस हिसाब-किताब से संबंधित क़ुरआन में फ़रमाया है—

"जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा, फिर जो आमाल (कर्म) उन्होंने किए हैं उनसे उन्हें ख़बरदार करेगा। अल्लाह ने उन्हें गिन रखा है और वह उन्हें भूल गए हैं, और अल्लाह की निगाह में हर चीज़ है।"

(क़ुरआन, 58 : 6)

"फिर क़ियामत के दिन वह उन्हें आगाह कर देगा उससे जो कुछ भी उन्होंने किया है। बेशक अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।"

(क़ुरआन, 58 : 7)

"फिर उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में भी पूछा जाएगा।"

(क़ुरआन, 102 : 8)

"और जो तुम किया करते थे उसके बारे में तुमसे हर हाल में पूछा जाएगा।" (क़ुरआन, 16 : 93)

"और हिसाब लेने के लिए हम काफ़ी हैं।" (क़ुरआन, 21 : 47)

हदीसों में भी क़ियामत के दिन पूछताछ का जगह-जगह ज़िक्र आता है—

हज़रत इब्न उमर (रज़ि०) बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को फ़रमाते सुना कि तुममें से हर एक निगहबान है और हर एक से उसके मातहतों के बारे में सवाल होगा। अतः इमाम भी निगहबान है और उससे उसके मातहत लोगों के बारे में सवाल होगा, और मर्द अपने घरवालों के लिए निगहबान है और उससे उसके मातहत लोगों के बारे में सवाल होगा और नौकर अपने मालिक के माल का निगहबान है; उससे उसके मातहत के बारे में सवाल होगा। (तात्पर्य यह कि) तुममें से हर एक निगहबान है और हर एक से उसके मातहत के बारे में सवाल होगा।

मातहत से यहाँ मुराद वे लोग और वे चीज़ें हैं जो उसकी ज़िम्मेदारी में दी गई थीं, उससे पूछा जाएगा कि उसने यह ज़िम्मेदारी कहाँ तक पूरी की।

हज़रत आइशा (रज़ि०) की रिवायत है कि एक शख़्स हुज़ूर (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपके सामने बैठ गया। फिर अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास कुछ ग़ुलाम हैं। वे मुझसे झूठ बोलते हैं और मेरी

चीज़ों में ख़ियानतें भी करते हैं और मेरी नाफ़रमानी भी करते हैं, और मैं कभी उन्हें गालियाँ देता हूँ और कभी मारता भी हूँ। अत: उनकी वजह से क़ियामत के दिन मेरा क्या हाल होगा ?"

हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम्हारे उन ग़ुलामों ने तुम्हारी जो ख़ियानत और नाफ़रमानी की होगी और तुमसे जो-जो झूट बोले होंगे और फिर तुमने उनको जो सज़ाएँ दी होंगी क़ियामत के दिन उन सबका पूरा-पूरा हिसाब किया जाएगा। अत: अगर तुम्हारी सज़ा उनके क़ुसूरों के मुक़ाबले में बराबर रही होगी तो मामला बराबर पर ख़त्म हो जाएगा। न तुमको कुछ मिलेगा और न तुम्हें कुछ देना पड़ेगा, और अगर तुम्हारी सज़ा उनके क़ुसूरों से कम साबित होगी तो तुम्हारा निकलता हुआ हक़ तुम्हें वहाँ मिलेगा (यानी उतना तुम्हें सवाब मिल जाएगा) और अगर तुम्हारी सज़ा उनके क़ुसूरों से ज़्यादा साबित होगी तो तुमसे उनका बदला और क़िसास दिलवाया जाएगा।"

(जब उस शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० का यह जवाब सुना) तो आप (सल्ल०) के पास से एक तरफ़ हटकर रोने और चिल्लाने लगा। ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने उससे फिर फ़रमाया कि क्या तुम क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला का यह फ़रमान नहीं पढ़ते :

> "और हम क़ायम करेंगे क़ियामत के दिन इनसाफ़ के तराज़ू। अत: नहीं ज़ुल्म होगा किसी व्यक्ति पर कुछ भी, और अगर किसी का अमल या हक़ राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसको भी हाज़िर करेंगे, और हिसाब लेने को हम काफ़ी हैं।" (क़ुरआन, 21 : 47)

उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं अपने लिए और उनके लिए इससे बेहतर कुछ नहीं समझता कि उनको अपने से अलग कर दूँ। मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मैंने उन्हें आज़ाद कर दिया और अब वे आज़ाद हैं। (तिरमिज़ी)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने कुछ नमाज़ों में रसूल (सल्ल०) को दुआ करते सुना—"ऐ अल्लाह ! मेरा हिसाब आसान कर।"

मैंने अर्ज़ किया, "हुज़ूर ! आसान हिसाब का क्या मतलब है ?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "आसान हिसाब यह है कि बन्दे के आमालनामे पर नज़र डाली जाए और उससे दरगुज़र किया जाए। (यानी कोई पूछताछ और जिरह न की जाए, बल्कि अल्लाह तआला माफ़ कर दे।) बात यह है कि जिसके हिसाब में उस दिन जिरह की जाएगी, ऐ आइशा ! वह तबाह हो जाएगा।" (मुसनद अहमद)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि कुछ सहाबा ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! क़ियामत के दिन हम अपने परवरदिगार को देखेंगे ?

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क्या दोपहर के वक़्त तुम्हें सूरज देखने में कोई कठिनाई, कोई परेशानी होती है जबकि वह बादल में भी न हो।

उन्होंने अर्ज़ किया कि नहीं !

इसके बाद आपने फ़रमाया, "क़सम है उस हस्ती की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है ! जिस तरह तुम चाँद और सूरज को बग़ैर किसी कठिनाई और बग़ैर किसी परेशानी व अवरोध के देखते हो, उसी तरह क़ियामत के दिन अपने परवरदिगार को देखोगे।"

इसके बाद आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत में जब अल्लाह से एक बन्दे का सामना होगा तो अल्लाह तआला उससे फ़रमाएगा : "ऐ फ़लाँ क्या दुनिया में मैंने तुम्हें इज़्ज़त नहीं दी थी ? क्या तुझे तेरी क़ौम में सरदारी नहीं दी थी ? क्या तुझे बीवी नहीं अता की थी ? और क्या तेरे लिए घोड़े और ऊँट को क़ब्ज़े में नहीं किया था और क्या मैंने तुझे छोड़े नहीं रखा था कि तू रियासत और सरदारी करे : और माले ग़नीमत में से चौथाई वुसूल करे ?"

वह बन्दा अर्ज़ करेगा : "हाँ, ऐ परवरदिगार ! आपने यह सब कुछ मुझे दिया था।"

फिर अल्लाह तआला उससे फ़रमाएगा : "तो क्या तुझे इस बात का ख़याल और गुमान था कि तू एक दिन मेरे सामने होगा ?"

वह अर्ज़ करेगा : "मैं यह ख़याल नहीं करता था।"

अल्लाह तआला फ़रमाएगा : "आज मैं तुम्हें अपनी करुणा और दयालुता से उसी तरह भुलाता हूँ, जिस तरह तूने मुझे भुलाए रखा. . . . ।" (मुस्लिम)

ख़ुदा से डरनेवाले लोग क़ियामत के इस हिसाब-किताब से हमेशा काँपते रहा करते थे। पूछताछ के बारे में उनका ख़ौफ़ इतना अधिक होता था कि कभी-कभी उन्होंने ज़िम्मेदारियाँ लेने और पद-ग्रहण करने से सिर्फ़ इसलिए इनकार कर दिया कि पद उनके अधिकारों और ज़िम्मेदारियों को बढ़ा देंगे और फिर अगर वे उन ज़िम्मेदारियों को पूरा न कर सके तो क़ियामत के दिन क्या जवाब देंगे।

बनू उमैया के आलिम और दीनदार ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०), के बारे में कहा जाता है कि जब वे ख़लीफ़ा बनाए गए तो ज़िम्मेदारियों के एहसास के कारण इतने परेशान हुए कि उनकी एक दासी ने उन्हें देखकर कहा, "आप शायद बहुत चिंतित हैं।"

आपने जवाब दिया—"यह चिंताजनक बात ही है। पूर्व व पश्चिम (चारों ओर) में मुहम्मद (सल्ल०) के माननेवालों का कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिसका मुझपर हक़ न हो और उसका हक़ अदा करना बग़ैर सूचना और माँग के मुझपर लाज़िम न हो।" इसके बाद आप मस्जिद में आए और मिम्बर पर खड़े होकर यह ख़ुतबा दिया—

"लोगो! मुझपर ख़िलाफ़त का बोझ डाल दिया गया है, बग़ैर इसके कि मुझसे राय ली जाती या मैं इसका इच्छुक होता या आम मुसलमानों से मशविरा लिया जाता। मेरी बैअत का जो फन्दा तुम्हारी गरदनों में है, मैं उसे ख़ुद निकाल देता हूँ। अब तुम जिसको चाहो अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर लो।"

इसपर लोगों ने तेज़ आवाज़ के साथ कहा कि हमने आपको ख़लीफ़ा चुन लिया है और हम आपकी ख़िलाफ़त पर राज़ी हुए।

इसके बाद जो चंद साल आपने ज़िन्दगी पाई, ज़िम्मेदारी का एहसास और आख़िरत की जवाबदेही से काँपते-थरथराते रहे। एक बार आपने एक फ़ौजी अफ़सर को लिखा—

"ख़ुदा की अज़मत और ख़ौफ़ का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ बन्दा वह है जो उस मुसीबत में ग्रस्त हो जिसमें कि मैं हूँ। ख़ुदा के नज़दीक मुझसे अधिक सख़्त हिसाब देनेवाला और मुझसे अधिक अपमानित कोई नहीं है। मैं इस हालत में बहुत ही ग़मग़ीन हूँ और मुझे डर है कि यह मेरी हलाकत का कारण न बन जाए।"

ये शब्द लिखने से आपकी मुराद यही थी कि मेरे कंधों पर ज़िम्मेदारियों का बोझ बहुत ज़्यादा है। क्योंकि मैं इस विशाल साम्राज्य के, जो तीन महादेशों में फैला हुआ है, कार्यकर्ताओं और समस्त प्रजा के अधिकारों को अदा करना मुझपर ज़रूरी है। पता नहीं मैं इन सब ज़िम्मेदारियों को अदा कर सकूँगा या नहीं।

उसी ख़त में आपने आगे चलकर लिखा—

"मुझे मालूम हुआ है कि तुम जिहाद के लिए रवाना होना चाहते हो, तो ऐ मेरे भाई! मेरी ख़्वाहिश यह है कि जब तुम जंग की क़तार में खड़े हो तो ख़ुदा से दुआ करना कि वह मुझे शहादत अता करे, क्योंकि मेरी हालत निहायत सख़्त और मेरा ख़तरा सबसे बढ़कर है।"

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) का आम मामूल यह था कि इशा के बाद अपनी मसजिद में बैठकर दुआएँ करते और रोते जाते। एक दिन आपकी

बीवी फ़ातिमा बिन्त अब्दुल मलिक ने इसकी वजह पूछी तो आपने फ़रमाया, "मैंने ग़ौर किया तो मुझे मालूम कि मैं इस उम्मत के छोटे-बड़े और भले व बुरे भाग्य का मालिक हूँ। फिर मैंने बेबस, ग़रीब, मुहताज, फ़क़ीर, गुमशुदा, क़ैदी और इन्हीं की तरह के और लोगों को याद किया तो मुझे यक़ीन हो गया कि ख़ुदा उनके बारे में मुझसे सवाल करेगा और मुहम्मद (सल्ल०) उनके बारे में मुझपर दावा करेंगे। इसलिए इस ख़याल से मुझे जान का ख़ौफ़ पैदा हो गया, मेरे आँसू जारी हो गए और मेरा दिल ख़ौफ़ज़दा हो गया, और मैं जितना उसको याद करता हूँ मेरा ख़ौफ़ बढ़ता जाता है।"

उनकी बीवी फ़ातिमा बिन्त अब्दुल मलिक का बयान है कि वह और लोगों से ज़्यादा नमाज़ें नहीं पढ़ते थे, न और लोगों से अधिक रोज़े रखते थे; अलबत्ता उनसे अधिक कोई ख़ुदा से नहीं डरता था।

एक बार हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) सफ़र में थे। ज़रूरत के सामान पीछे रह गए थे। आप और आपके साथी आगे निकल चुके थे। एक जगह ठहर गए। आपने देखा कि सफ़र करनेवालों में से जो-जो शख़्स अपना सामान पहले रवाना कर चुका था, उनके पास अब उनका सामान पहुँच रहा था। यह देखकर आप रो पड़े। आपके एक चचेरा भाई ने रोने की वजह पूछी, तो आपने फ़रमाया, "इसी तरह क़ियामत के दिन जो-जों शख़्स अपने रास्ते का ख़र्चा (ज़ादेराह) पहले भेज चुका होगा, वह उसको मिल जाएगा और जिसने न भेजा होगा उसको कुछ न मिलेगा।"

मीज़ान, सिरात, हौज़े कौसर

अल्लाह तआला ने इनसान के अन्दर नेकी और बुराई दोनों की सलाहियतें रखी हैं और नबियों के सिवा और कोई ऐसा नहीं होता जो पूरे तौर पर गुनाहों से पाक हो। नेक से नेक इनसान की ज़िन्दगी में कोई न कोई ख़ता ज़रूर होती है। ऐसे ही बुरे से बुरा आदमी भी ऐसा नहीं जिसने ज़िन्दगी में कोई न कोई नेकी न की हो। अतः किसी का नेक होना यह निश्चित नहीं करता कि उसने ज़िन्दगी में गुनाह किया ही नहीं और ऐसे ही किसी के बुरा होने का भी यह मतलब नहीं कि उससे कोई नेक काम हुआ ही नहीं, बल्कि फ़ैसला तो इस बात पर होता है कि किसी इनसान ने कौन से काम ज़्यादा किए हैं।

अगर किसी इनसान का अधिक रुझान नेकी की तरफ़ है और ज़िन्दगी में उसका आम रवैया दयाभाव, परहेज़गारी और ईमानदारी पर आधारित है और उसकी ज़िन्दगी की अच्छाइयों की तादाद बुराइयों से ज़्यादा है तो उसे नेक इनसान कहा जाएगा; हालाँकि उसने छोटे-छोटे गुनाह भी किए होंगे।

इसी प्रकार अगर किसी का आम रुझान गुनाह और ख़ुदा की नाफ़रमानी की ओर हो, बुरे कामों में उसे राहत मिलती हो और उसके गुनाहों की तादाद उसकी नेकियों से अधिक हो तो उसे बुरा और दुष्कर्मी कहा जाएगा, हालाँकि उसने जीवन में कुछ न कुछ नेकियाँ भी ज़रूर की होंगी।

मीज़ान

क़ुरआन व हदीस में हमें क़ियामत के जो हालात व वाक़िआत मिलते हैं उनमें मीज़ान का भी ज़िक्र है; यानी तराज़ू का। हम जानते हैं कि तराज़ू चीज़ों को तौलने के काम आती है। अल्लाह तआला की यह तराज़ू इनसानों के आमाल को तौलेगी, ताकि पता चले कि हर आदमी दुनिया में किस प्रकार के आमाल (कर्मों को) ज़्यादा करके आया है—वह नेकियाँ ज़्यादा करके आया है या बुराइयाँ। मीज़ान के बारे में बताया गया है कि उसमें पूरे इनसाफ़ से आमाल तौले जाएँगे और किसी इनसान से ज़र्रा बराबर भी बेइनसाफ़ी नहीं होगी। ज़िन्दगी में अगर किसी ने राई के दाने के बराबर भी अमल किया होगा, तो अल्लाह तआला वह भी हाज़िर करेंगे। इस मीज़ान में जिसका नेकियों का पलड़ा भारी रहेगा वह ख़ुदा की कृपा को प्राप्त करेगा। अल्लाह तआला उसके छोटे-छोटे गुनाह माफ़ कर देगा और उसे नजात (मुक्ति) देकर हमेशा रहनेवाली जन्नत में दाख़िल कर देगा,

लेकिन जिसका नेकियों का पलड़ा हलका रहेगा वह अल्लाह के प्रकोप का भागी होगा और दोज़ख़ का पात्र साबित होगा। यही कारण है कि मुसलमानों को समझाया गया है कि अगर कोई गुनाह हो जाए तो सच्चे दिल से तौबा करने के साथ-साथ कोई नेकी करने की कोशिश भी करे, क्योंकि नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं।

"बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं।" (क़ुरआन, 11 : 14)

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद की सूरा अल-अम्बिया, आयत 47 में फ़रमाया है—

> "और क़ियामत के दिन हम इनसाफ़ का तराज़ू रखेंगे, अतः किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा और अगर कोई अमल राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे ला मौजूद करेंगे, और हम हिसाब लेने के लिए काफ़ी हैं।"

फिर सूरा अल-मोमिनून, आयत 102 से 103 में हुक्म हुआ है—

> "तो जिसकी (नेकियों की) तौल भारी होगी वही कामियाब होनेवाले हैं और जिसकी तौल हलकी होगी वह वे हैं जिन्होंने अपनी जानों को घाटे में रखा, वह हमेशा दोज़ख़ में रहनेवाले हैं।"

सूरा आले-इमरान, आयत 185 में बयान किया गया है—

> "और क़ियामत के दिन तुम्हें तुम्हारे पूरे-पूरे अज्र दिए जाएँगे।"

सूरा अल-क़ारिआ, आयत 6 से 11 में फ़रमाया है—

> "लेकिन जिसकी तौल भारी होगी वह पसंदीदा ऐश में होगा और जिसकी तौल हलकी होगी उसका ठिकाना गहरी खाई (जहन्नम) होगी। और तुम क्या जानो वह क्या है, (वह) भड़कती हुई आग है।"

सिरात

मीज़ान की तरह सिरात या पुलसिरात के मुताल्लिक़ भी बताया गया है। जैसे कि पहले बयान किया जा चुका है, सिरात एक रास्ता होगा जो जहन्नम के ऊपर से होकर गुज़रेगा, और हर इनसान को उसके ऊपर से होकर गुज़रना होगा, चाहे वह नेक हो या बद। जैसे कि क़ब्र के हालात में गुज़र चुका है कि क़ब्र की ज़िन्दगी का आरामदेह होना या तकलीफ़देह होना सांसारिक जीवन के कर्मों पर निर्भर है। यही हाल 'सिरात' का बताया जाता है, उसपर से गुज़रनेवाले के ईमान और आमाल की हालत जिस तरह की रही होगी वैसी ही उसे सिरात महसूस

होगी। नेक कर्म करनेवालों के लिए वह एक लम्बा-चौड़ा रास्ता होगा जिसपर से वह आराम से गुज़र जाएँगे और बुरे कर्म करनेवालों के लिए वह संकुचित मार्ग होगा। वह उसपर से नहीं गुज़र सकेंगे, बल्कि गिर जाएँगे और नीचे जहन्नम में जा पड़ेंगे।

हौज़े कौसर

क़ियामत के सिलसिले में हुज़ूर (सल्ल०) ने हौज़े कौसर का ज़िक्र भी किया है। यह पानी का एक हौज़ होगा जो प्यारे नबी (सल्ल०) को प्रदान किया जाएगा। ईमानवालों को इससे पानी पिलाया जाएगा, इसके पीने के बाद फिर कभी उन्हें प्यास नहीं लगेगी।

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि क़ियामत के दिन आप मेरी सिफ़ारिश करेंगे? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मैं तुम्हारा यह काम करूँगा।" मैंने अर्ज़ किया, "तो (क़ियामत के दिन) मैं आपको कहाँ तलाश करूँ?" आपने बताया, "जब तुम्हें मेरी तलाश हो तो सबसे पहले मुझे सिरात पर देखना।" मैंने अर्ज़ किया कि अगर मैं आपको सिरात पर न पा सकूँ तो फिर कहाँ तलाश करूँ? आपने फ़रमाया, "तो फिर मुझे मीज़ान के पास तलाश करना।" मैंने अर्ज़ किया कि अगर मैं आपको मीज़ान के पास भी न पा सकूँ तो फिर कहाँ तलाश करूँ? आपने फ़रमाया, "तो फिर मुझे हौज़ (कौसर) के पास देखना, क्योंकि मैं उस वक़्त इन तीन मक़ामों से दूर कहीं नहीं जाऊँगा।"

(तिरमिज़ी)

हज़रत मुग़ीरह बिन शो'अबा (रज़ि०) से रिवायत है कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन पुलसिरात पर ईमानवालों की पहचान दुआ का यह कलिमा होगा—

"रबबि सललिम, रबबि सललिम"

यानी ऐ हमारे रब! हमें सलामत रख और सलामती के साथ पार लगा।

(तिरमिज़ी)

हज़रत सहल बिन साद (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मैं हौज़े कौसर पर तुम्हारी ज़रूरतों का पूरा करनेवाला ज़िम्मेदार हूँ (और तुमसे आगे जाकर तुम्हारी प्यास का सामान करनेवाला हूँ)। जो मेरे पास पहुँचेगा वह कौसर का पानी पाएगा और जो उसे पी लेगा, फिर उसे कभी प्यास नहीं लगेगी। और वहाँ कुछ लोग जिनको मैं पहचानूँगा और वह भी मुझे पहचानेंगे, मेरी तरफ़ आएँगे, लेकिन मेरे और उनके बीच रुकावट डाल दी जाएगी

(और उन्हें मेरे पास आने से रोक दिया जाएगा) तो मैं कहूँगा कि ये आदमी तो मेरे हैं। अतः मुझे जवाब दिया जाएगा कि तुम्हें मालूम नहीं है कि इन्होंने तुम्हारे बाद क्या-क्या नई-नई बातें निकालीं। (और क्या-क्या रुकावटें डालीं)। तो मैं कहूँगा कि बरबादी और दूरी हो उनके लिए जिन्होंने मेरे बाद दीन में विभेद पैदा किया और उसको गडमड किया।" (बुख़ारी, मुसलिम)

इस हदीस से स्पष्ट हो जाता है कि मुसलमान होने के बावजूद जो आदमी दीन में ख़राबियाँ पैदा करेगा उसकी पकड़ होगी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मेरे हौज़ की लम्बाई एक महीने की है (यानी वह इतना लम्बा-चौड़ा होगा कि एक छोर से दूसरी छोर तक की दूरी तय करने में एक महीना लगेगा) और उसके कोने बिलकुल बराबर हैं, उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद है और ख़ुशबू मुश्क (कस्तूरी) से भी बेहतर है और उसके कूज़े (डोंगे) आसमान के तारों की तरह हैं। जो उसका पानी पिएगा उसे कभी प्यास नहीं लगेगी।"

(बुख़ारी, मुसलिम)

जन्नत और जहन्नम

आख़िरत की जिन हक़ीक़तों पर ईमान लाना एक मोमिन के लिए फ़र्ज़ है उनमें जन्नत और दोज़ख़ भी हैं, जो इनसानों के आख़िरी और स्थायी ठिकाने हैं। क़ुरआन मजीद में जन्नत और दोज़ख़ के बारे में इतनी ज़्यादा आयतें आई हैं कि अगर उन्हें अलग से इकट्ठा किया जाए तो एक अच्छी-ख़ासी किताब तैयार हो जाएगी। ऐसी ही हदीस की किताबों में भी जन्नत और दोज़ख़ के बारे में बहुत-सी हदीसें हैं।

जन्नत और दोज़ख़ के बारे में क़ुरआन व हदीस में जो कुछ बयान हुआ है, उसके बारे में यह ख़याल रखना चाहिए कि इन दोनों जगहों की असल हक़ीक़त का इल्म वहाँ पहुँचकर और देखने के बाद ही हो सकता है। क्योंकि जिन मक़ामों को न किसी आँख ने देखा है, न किसी इनसानी कान ने कभी उसकी आवाज़ें ही सुनीं, उनमें जो कुछ भी हालत और कैफ़ियतें हैं उनको बयान करने के लिए इनसानी ज़बान में लफ़्ज़ ही नहीं हो सकते। बस इतना कहा गया है कि इनसानी ज़बानों में पाए जानेवाले लफ़्ज़ों की मदद से वहाँ की हालत व कैफ़ियतों का कुछ तसव्वुर दिलाया गया है, बाक़ी वहाँ की हालत हक़ीक़त में क्या होंगी, यह अल्लाह ही के इल्म में है और इनसानों के इल्म में भी उस वक़्त आ जाएँगी जब वे वहाँ पहुँच जाएँगे। जन्नत और दोज़ख़ के हालात पढ़ते वक़्त इस बयान की हुई हक़ीक़त को ज़ेहन में रखना चाहिए।

असल में आयतों व हदीसों में जो जन्नत और दोज़ख़ का ज़िक्र किया गया है उसका यह मक़सद है ही नहीं कि लोगों के सामने वहाँ की पूरी जानकारी और वहाँ की हालतों का पूरा और ठीक-ठीक नक़्शा आ जाए, बल्कि इसका मक़सद सिर्फ़ यह है कि लोगों में दोज़ख़ और उसके अज़ाब का ख़ौफ़ पैदा हो और वह उन बुराइयों से बचें जो दोज़ख़ में ले जानेवाली हैं और जन्नत और उसकी बहारों और लज़्ज़तों का शौक़ उभरे, ताकि वह अच्छे आमाल (कर्म) अपनाएँ जो जन्नत में पहुँचानेवाले और वहाँ की नेमतों का हक़दार बनानेवाले हैं।

चुनांचे जन्नत और दोज़ख़ के बारे में आयतों व हदीसों का असली हक़ यही है कि उनके पढ़ने-सुनने से शौक़ और ख़ौफ़ की कैफ़ियतें पैदा हों, न कि इनसान वहाँ की हालतों को ठीक-ठीक और असली शक्ल में निश्चित करने के चक्कर में इस मक़सद ही को नज़रअंदाज़ कर दे जिसके लिए ये आयतें व हदीसें आई हैं।

नीचे की आयतों और हदीसों में जन्नत और दोख़ज़ दोनों का साथ-साथ

ज़िक्र किया गया है—

"दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं हैं, जो जन्नती हैं वही अपनी मुराद को पहुँचनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 59 : 20)

"और जन्नतवाले दोज़ख़वालों से पुकारकर कहेंगे कि जो वादा हमसे हमारे परवरदिगार ने किया था, हमने उसको सच पाया। क्या तुमने भी उस वादे को सच पाया जो तुमसे तुम्हारे परवरदिगार ने किया था? वे जवाब देंगे : हाँ। फिर उनके बीच एक पुकारनेवाला पुकारेगा कि ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत है जो (लोगों को) अल्लाह की राह से रोकते हैं और उसमें टेढ़ ढूँढ़ते हैं, और वे आख़िरत के इनकार करनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 7 : 44, 45)

"भला वह व्यक्ति जो अपने परवरदिगार की तरफ़ से एक साफ़ और स्पष्ट हिदायत पर है, उस व्यक्ति के बराबर हो सकता है जिसको उसके बुरे अमल अच्छे दिखलाए गए?" (क़ुरआन, 47 : 14)

"क्या आपको उस घेर लेनेवाली घटना (यानी क़ियामत) की कुछ ख़बर पहुँची है? बहुत-से चेहरे उस दिन अपमानित, मुसीबत झेलते (और) ख़स्ता होंगे। वे आग के शोलों में दाख़िल होंगे, (और) खौलते हुए स्रोतों से उन्हें पानी पिलाया जाएगा, (और) उनको सिवाय एक ख़ारदार झाड़ के और कोई खाना नसीब नहीं होगा, जो न तो (खानेवालों को) मोटा करेगा और न (उनकी) भूख को दूर करेगा। (और) बहुत-से चेहरे उस दिन खिले हुए, (और) अपने (नेक) आमाल की बदौलत ख़ुश होंगे, जन्नत के ऊँचे दर्जे में होंगे जिसमें (वे) कोई बकवास नहीं सुनेंगे। उसमें बहते हुए चश्मे होंगे, (और) उसमें ऊँचे-ऊँचे तख़्त (बिछे) होंगे और पानी पीने के प्याले रखे होंगे और बराबर-बराबर लगे हुए गद्दे (तकिए) होंगे और सब तरफ़ क़ालीन (ही क़ालीन) फैले पड़े होंगे।"

(क़ुरआन, 88 : 1-16)

"बहुत-से चेहरे उस दिन (ईमान के कारण) रौशन और (ख़ुशी के कारण) ख़ुशहाल व प्रसन्नचित्त होंगे और बहुत-से चेहरों पर उस दिन (कुफ़्र की वजह से) अंधकार होगा, (और) इस अंधकार के साथ उनपर (ग़म की) कालिमा छाई होगी। यही लोग इनकार करनेवाले और हदों को तोड़नेवाले हैं।" (क़ुरआन, 80 : 38-42)

क़ुरआन मजीद के 27वें पारे में सूरा वाक़िआ में बताया गया है कि क़ियामत

के दिन लोग तीन हिस्सों में बाँट दिए जाएँगे। एक गिरोह उन लोगों का होगा जो बहुत ज़्यादा नेक काम करनेवाले होंगे, उन्हें 'अस्साबिक़ून' कहा गया है, यानी आगे निकल जानेवाले, बहुत ऊँचे दर्जे के लोग।

दूसरा गिरोह उन लोगों का होगा जो 'साबिक़ून' यानी गुज़रे हुए लोगों के बराबर तो नहीं होंगे, फिर भी नेक लोग ही होंगे, उन्हें 'दाहिने हाथवाले' कहा गया है।

तीसरा गिरोह बुरे और बदअमल लोगों का होगा; उन्हें "बाएँ हाथवाले" कहा गया है। इसके बाद इन तीनों गिरोहों के अच्छे या बुरे परिणामों की तफ़सील अलग-अलग बयान की गई है। कहा गया है—

"जब वह होनेवाली घटना (क़ियामत) पेश आ जाएगी तो कोई उसके घटित होने को झुठलानेवाला न होगा। वह नीचा कर देनेवाली और ऊँचा कर देनेवाली आफ़त होगी? जब ज़मीन एकाएक हिला डाली जाएगी और पहाड़ इस तरह चूर्ण-विचूर्ण कर दिए जाएँगे कि बिखरे हुए ग़ुबार बनकर रह जाएँगे। तुम लोग उस वक़्त तीन गिरोहों में बँट जाओगे—दाएँ हाथवाले, तो दाएँ हाथवालों (की ख़ुशनसीबी) का क्या कहना! और बाएँ हाथवाले, तो बाएँ हाथवालों (की बदनसीबी) का क्या ठिकाना। और आगेवाले तो आगेवाले ही हैं, वही तो पास रखे जानेवाले लोग हैं। नेमत भरी जन्नतों में रहेंगे। उनका एक बड़ा गिरोह तो अगले लोगों में से होगा और थोड़े पिछले लोगों में से होंगे। वे लोग सोने के बने हुए तारों के तख़्तों पर तकिया लगाए आमने-सामने बैठे होंगे। उनकी मजलिसों में सदा किशोर रहनेवाले लड़के आबख़ोरे[1] और आफ़ताबे[2] और बहती हुई शराब से भरा हुआ जाम लेकर आएँगे। (यह शराब एक पवित्र पेय होगा कि जिसे पीकर) न उनका सिर चकराएगा और न उनकी अक़्ल में फ़तूर आएगा। और (वे लड़के उनके पास) मेवे (लेकर आएँगे) जिनको वे पसन्द करेंगे (और) परिन्दों का वह गोश्त जो उनको मनपसंद होगा—जो दाहिने हाथवाले हैं, वे दाहिने हाथवाले कैसे अच्छे हैं। वे उन बाग़ों में होंगे जहाँ बेकाँटे की बेरियाँ होंगी और ऊपर-तले चढ़े हुए केले, और दूर तक फैली हुई छाँव और हरदम प्रवाहित होनेवाला पानी होगा, और कभी न ख़त्म होनेवाले और

1. पानी पीने का बर्तन
2. टोटीदार बँधना।

बेरोकटोक मिलनेवाले बहुतायत मेवे होंगे ।. . . . जो बाएँ हाथवाले होंगे; हाय बाएँ हाथवालों (की बदनसीबी) का क्या पूछना—वे आग में होंगे और खौलते हुए पानी में और काले धुएँ की छाया में। जो न ठण्डा होगा और न सुखदायक। ये वे लोग होंगे जो इस अंजाम को पहुँचने से पहले (यानी संसार में) बड़ी ख़ुशहाली में रहते थे और भारी गुनाह (यानी शिर्क और कुफ्र) पर हठ करते थे और इस तरह कहा करते थे कि क्या जब हम मरकर मिट्टी हो जाएँगे और हड्डियों का पंजर रह जाएँगे, तो फिर उठा खड़े किए जाएँगे ? और क्या हमारे बाप-दादा भी उठाए जाएँगे, जो पहले गुज़र चुके हैं ? ऐ नबी ! इन लोगों से कह दीजिए कि निश्चय ही अगले और पिछले सब एक दिन ज़रूर इकट्ठा किए जाएँगे, एक निश्चित समय पर। फिर ऐ गुमराहो और झुठलानेवालो ! तुम ज़क़्क़ूम (थूहड़) के पेड़ का आहार लेनेवाले हो। उसी से तुम पेट भरोगे और ऊपर से खौलता हुआ पानी पीना होगा, फिर पीना भी प्यासे ऊँट का-सा। (मतलब यह कि) उन लोगों की क़ियामत के दिन यह मेहमानी होगी। हमने तुमको (पहली बार) पैदा किया है (जिसको तुम भी स्वीकार करते हो तो) फिर तुम (दूसरी बार पैदा किए जाने की) तसदीक़ क्यों नहीं करते।' (क़ुरआन, 56 : 1-57)

हदीसें

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब अल्लाह ने जन्नत को बनाया तो अपने ख़ास फ़रिश्ते जिबरील (अलै०) से फ़रमाया कि तुम जाओ और उसको देखो। चुनांचे वे गए और उन्होंने जाकर जन्नत को और आराम और लुत्फ़ के उन सामानों को देखा जो अल्लाह तआला ने जन्नतवालों के लिए उसमें तैयार किए हैं, और फिर अल्लाह तआला के सामने हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ सारी दुनिया के मालिक आपकी इज़्ज़त और बड़ाई की क़सम ! (आपने तो जन्नत को ऐसा हसीन और आरामदेह बनाया है कि मेरा ख़याल है कि) जो कोई भी इसका हाल सुन पाएगा, वह इसमें ज़रूर पहुँचेगा।

फिर अल्लाह ने उस जन्नत को सख़्तियों और मशक़्क़तों से घेर दिया और फिर जिबरील (अलै०) से फ़रमाया कि अब फिर जाओ और फिर उस जन्नत को देखो। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जिबरील (अलै०) दोबारा गए और जाकर जन्नत को देखा और इस बार आकर कहा कि ऐ ख़ुदा, आपकी इज़्ज़त

और अज़मत की क़सम ! अब तो मुझे डर है कि इसमें कोई भी नहीं जा सकेगा।

ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि फिर अल्लाह तआला ने जब दोज़ख़ को बनाया तो फिर जिबरील (अलै०) से फ़रमाया, "जाओ और हमारी बनाई हुई दोज़ख़ को देखो।" चुनांचे वे गए और जाकर उसे देखा और आकर अर्ज़ किया, "ऐ सारे जहान के मालिक ! आपकी इज़्ज़त की क़सम, जो कोई भी उसका हाल सुन लेगा वह कभी उसमें न जाएगा।" इसके बाद अल्लाह तआला ने दोज़ख़ को काम-वासनाओं और नफ़सानी ख़्वाहिशात से घेर दिया और फिर जिबरील (अलै०) से फ़रमाया कि अब फिर जाकर उस दोज़ख़ (नरक) को देखो। जिबरील (अलै०) फिर गए, और उसे जाकर देखा और आकर अर्ज़ किया, "ऐ ख़ुदा, आपकी इज़्ज़त व जलाल की क़सम, अब तो मुझे यह डर है कि सब लोग इसी में न पहुँच जाएँ।" (तिरमिज़ी, अबू दाऊद, नसई)

इस हदीस में प्यारे नबी (सल्ल०) ने जो कुछ दिल और दिमाग़ में बैठाना चाहा है वह यह है कि अपनी हमेशा रहनेवाली ज़िन्दगी को कामयाब करने और जन्नत का हक़दार होने के लिए यह ज़रूरी है कि इनसान ख़ुदा के हुक्मों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करे, चाहे इसमें कितनी ही तकलीफ़ें क्यों न उठानी पड़ें, क्योंकि तकलीफ़ों और मशक़्क़तों की मंज़िल तय करके ही हमेशा का आराम हासिल किया जा सकता है। अल्लाह तआला ने हमपर कुछ इबादतें फ़र्ज़ (अनिवार्य) की हैं। मिसाल के तौर पर—नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और जिहाद। इन सबका हक़ अदा करने के लिए मशक़्क़त करनी पड़ती है और जिहाद की राह में ज़िन्दगी की सबसे ज़्यादा क़ीमती चीज़ यानी जान भी न्योछावर कर देनी पड़ती है। फिर हमको दूसरों के हक़ों को अदा करना है और वे भी माली (आर्थिक) और जिसमानी (शारीरिक) दोनों प्रकार की क़ुरबानियाँ दिए बग़ैर अदा नहीं हो सकते। फिर हमें अख़लाक़ की बड़ाई—मिसाल के तौर पर सच्चाई, ईमानदारी, फ़र्ज़ को पहचानना, क़ुरबानी, शर्म आदि की ताकीद की गई है। इनपर क़ायम रहने में भी हज़ारों घाटियों से गुज़रना पड़ता है। मतलब यह कि ईमानदारी की ज़िन्दगी गुज़ारने और पैदा करनेवाले मालिक और उसकी सृष्टि (मख़लूक़) दोनों के हक़ों को अदा करने में बहुत तकलीफ़ें व मशक़्क़तें उठानी पड़ती हैं। इस बात को इस सुन्दरता के साथ बयान किया गया है कि अल्लाह तआला ने जन्नत को सख़्तियों और मशक़्क़तों से घेर दिया।

इसके विपरीत इनसान स्वभावतः गुनाहों की बातों की तरफ़ जल्दी खिँच जाता है, और बुराइयाँ आम तौर पर बड़ी आकर्षक होती हैं। रिश्वत, ग़बन, जुआ, बेईमानी, चोरी, डाकाज़नी बहुत-से लोगों को इसलिए दिलकश मालूम होती हैं कि

वे इन साधनों से सांसारिक साज़ो-सामान को जल्दी हासिल कर लेते हैं। शराबख़ोरी, बदकारी, झूठ, ग़ीबत बहुत-से लोगों के लिए इसलिए आकर्षक होती हैं कि उनसे उन्हें कुछ क्षणिक नापाक लज़्ज़तें मिल जाती हैं। माँ-बाप, रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दूसरे हक़दारों के हक़ों को मार लेना बहुत-से लोगों के लिए इसलिए राहत का कारण है कि इस तरह वे बहुत-सी माली (आर्थिक) और जिस्मानी (शारीरिक) क़ुरबानियाँ देने से बच जाते हैं। ग़रज़ कि वे काम जिन्हें गुनाह कहा गया है, बुरे कर्म करनेवाले लोगों को एक नापाक ख़ुशी और मामूली-सी राहत पहुँचाते हैं और उसी नापाक और थोड़ी-सी राहत की ख़ातिर वे गुनाह कर गुज़रते हैं, और इस तरह दोज़ख़ के हक़दार हो जाते हैं। इस हदीस में इसी हक़ीक़त को इस अन्दाज़ में बताया गया है कि अल्लाह तआला ने दोज़ख़ को काम-वासनाओं और नफ़सानी ख़्वाहिशात से घेर दिया।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैंने नहीं देखी दोज़ख़ की तरह की कोई ख़ौफ़नाक बला कि सोता हो उससे भागनेवाला और मैंने नहीं देखी जन्नत की तरह की कोई मनपसंदीदा और महबूब चीज़ कि सोता हो उसका चाहनेवाला। (तिरमिज़ी)

इस हदीस में बहुत ही असरदार अंदाज़ में यह ज़ेहननशीन कराया गया है कि अगरचे दोज़ख़ इनसान के लिए सबसे बड़ी ख़ौफ़नाक बला (विपत्ति) है। मगर इनसान ऐसा ग़ाफ़िल है कि इस बला से बचने के लिए कोशिश करने के बजाए ग़ाफ़िल पड़ा सो रहा है और जबकि जन्नत से अधिक दिल को मोहनेवाली चीज़ इनसान के लिए और कोई नहीं। लेकिन वह गाफ़िल दुनिया की ज़िन्दगी में ऐसा मस्त है कि उसे याद ही नहीं रहा कि बहुत जल्द ही कहीं जाना है, तो जहाँ जाना है वहाँ कोई अच्छा ठिकाना हासिल करने की कोशिश कर लूँ।

जन्नत (स्वर्ग)

अल्लाह की पाक किताब क़ुरआन मजीद और रसूल (सल्ल०) की हदीस़ में जन्नत के बारे में जो विवरण मिलता है; उनका अध्ययन करने से कल्पना की आँखों के सामने एक ऐसी दिल लुभानेवाली और ख़ुशनुमा दुनिया आ जाती, जहाँ आराम ही आराम है, और सकून ही सकून है। वहाँ एक हमेशा रहनेवाली ज़िन्दगी है जिसको न किसी मौत पर जाकर ख़त्म होना है और न किसी ग़म के काँटे से उलझना है।

इनसान का सांसारिक जीवन जिस तरह ग़मों से भरा रहता है, उसे सामने रखते हुए अगर एक ऐसे जीवन की कल्पना की जाए; जहाँ ग़म का वुजूद ही नहीं होगा तो ग़म का मारा दिल बेताब हो उठता है कि काश ! वहाँ पहुँचना नसीब हो जाए, जहाँ दुखों के नश्तरों से हमेशा-हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाता है।

जिस पाक सरज़मीन में ख़ूनी जंगें और उनसे पैदा होनेवाली हौलनाक हालतें नहीं होतीं, जहाँ वबाएँ (महामारियाँ) फूटकर आबादियों को वीरान नहीं बनातीं, जहाँ बीमारियों और बेरोज़गारियों की तकलीफ़ें पागल नहीं करतीं, जहाँ इनसान एक-दूसरे से हसद (ईर्ष्या) और दुश्मनी नहीं रखते, एक-दूसरे को धोखा नहीं देते, एक-दूसरे के मुँह से निवाले नहीं छीनते, एक-दूसरे की नीयतों पर हमले नहीं करते और एक-दूसरे के गले नहीं काटते, जहाँ नस्लों, रंगों और भाषा के आधार पर ख़ून की नदियाँ नहीं बहाई जातीं; जहाँ माँ-बाप के दिलों में यह डर नहीं होता कि औलाद माहौल के बुरे प्रभाव क़बूल करके कहीं बदकिरदार (दुश्चरित्र) न हो जाए, जहाँ 'कल क्या होगा' की चिंता रातों की नींदें हराम नहीं करती, जहाँ बेवफ़ाई, बेमुरव्वती, एहसान की नाक़द्री और बेवफ़ाई दिल के टुकड़े नहीं उड़ातीं, जहाँ क़ौमों की बदकिरदारियाँ और बदअमलियाँ रुसवा करनेवाले अज़ाबों और ज़िल्लतों को जनम नहीं देतीं वह सरज़मीन कितनी ख़ूबसूरत, कितनी पवित्र, कितनी महान और कितनी लुभावनी होगी। ख़ुशनसीब है वह इनसान, जो वहाँ पहुँच जाए।

क़ुरआन की आयतें और हदीसें हमें जो विस्तृत विवरण देती हैं उनसे पता चलता है कि किसी प्रकार का ग़म न होने के अलावा जन्नत में किसी प्रकार का साधारण-सा शारीरिक दुःख भी न होगा, न सर्दी की अधिकता की तकलीफ़ होगी न गर्मी की, न थकान होगी और न कोई बीमारी। इनसान एक हमेशा क़ायम रहनेवाले सुकून और आराम की हालत में रहेगा और किसी ऐसी चीज़ का वुजूद नहीं होगा जो उस सुकून में थोड़ी भी बाधा डाले।

क़ुरआन की आयतों और हदीसों में जन्नत (बहिश्त) की ख़ूबसूरती, हरियाली और मनमोहकता की बड़ी दिलकश तफ़सीलें दी गई हैं। इस सांसारिक जीवन में इनसान के लिए जो चीज़ें मनपसंद और चित्ताकर्षक रही हैं, उन्हीं का नाम लेकर वहाँ की कशिश और मनमोहकता की कल्पना कराई गई है। बाग़, पौधे, फूल, फल और बहता पानी इनसानों के लिए हमेशा आकर्षण के साधन रहे हैं। चुनांचे उस जगत् की व्याख्या पेश करने में इन्हीं चीज़ों का बार-बार ज़िक्र किया गया है। इनसान फ़ितरी तौर से इसको पसंद करता आया है कि उसका खाना, उसका लिबास और उसके रहने की जगह अच्छी से अच्छी हो। चुनांचे उसे बताया गया है कि अगर इस सांसारिक जीवन में तुमने अच्छे आचरणवालों की राह अपनाई और इन पसंदीदा चीज़ों को हराम तरीक़ों से हासिल करने की कोशिश न की तो यह सब कुछ तुम्हें मिल जाएगा और मिलेगा भी इस तरह कि फिर कभी नहीं छिनेगा। इनसान को हमेशा यह आरज़ू रही है कि उसे इज़्ज़त व आबरू हासिल हो और उसका सम्मान किया जाए। अतः उसे यक़ीन दिलाया गया है कि अगर अपने सांसारिक जीवन में उसने अल्लाह और उसके रसूल के हुक्मों के मुताबिक़ अपने फ़र्ज़ों और आम इनसानों के हक़ों को अदा किया तो आख़िरत में उसे वह इज़्ज़त मिलेगी कि सारे जगत का पालनहार अल्लाह और उसके फ़रिश्ते उसे सलाम कहेंगे।

इनसान के लिए यह चीज़ हमेशा पसंदीदा रही है कि किसी के दिल में उसके ख़िलाफ़ दुश्मनी, कीना और नफ़रत न हो। चुनांचे उसे बताया गया है कि जन्नत में किसी के दिल में किसी के ख़िलाफ़ दुश्मनी, कीना और नफ़रत नहीं होगी। जन्नतवालों के दिल परिन्दों की तरह नर्म और हसद (ईर्ष्या) से ख़ाली होंगे।

इनसान ने हमेशा ख़ूबसूरती और कमसिनी (कम उम्री) को पसन्द किया है और बदसूरती और बुढ़ापे से पनाह माँगी है। चुनांचे उसे बताया गया है कि जन्नत में सभी लोग ख़ूबसूरत और कमसिन होंगे। वहाँ बदसूरती और बुढ़ापे का नाम व निशान न होगा।

इनसान ने हमेशा सेहत, तन्दुरुस्ती और ज़िन्दगी को पसंद किया है। अतः उसे बताया गया है कि जन्नतवाले हमेशा सेहतमंद रहेंगे और कभी भी मौत के शिकार नहीं होंगे।

आख़िरत की ज़िन्दगी की यह चीज़ कि वह ज़िन्दगी स्थायी और हमेशा रहनेवाली होगी, बड़ी ही अहम चीज़ है। यह वह चीज़ है कि जितना भी इसपर ग़ौर किया जाए, यह ईमान को बढ़ाने का ज़रिया बनती है। अगर आज की छोटी-सी ज़िन्दगी में नेकी, सब्र, ईमानदारी, कर्त्तव्यपालन और ख़ुदा और उसके

रसूल (सल्ल०) की पैरवी अपनाने का नतीजा यह होता है कि एक ऐसी ज़िन्दगी ख़ुशगवार हो जाएगी जिसका शुरू का किनारा तो है लेकिन आख़िरी किनारा कोई नहीं, तो फिर यह कितना नफ़ा का सौदा है और कितना नादान व कम समझवाला है वह व्यक्ति जो यह सौदा करने में सुस्ती बरते या सिरे से उसे नफ़ा का सौदा समझने ही से इनकार कर दे। इमाम राज़ी (रह०) ने लिखा है कि एक आदमी ने वसीयत की कि मेरे माल का चौथा हिस्सा इस शहर के सबसे ज़्यादा होशियार, समझदार आदमी को दिया जाए। इस्लामी फ़िक़्ह के चार प्रमुख चारों इमामों ने एकमत होकर यह फ़ैसला किया कि चौथा हिस्सा उसको दिया जाए जो आख़िरत की फ़िक्र रखता हो और परहेज़गार हो।

आख़िरत की नेमतों में एक सबसे बड़ी नेमत यह होगी कि नाचीज़ और तुच्छ बन्दा अपने महान और अज़ीम रब का दीदार करेगा, जिसे वह इस ज़िन्दगी में कभी भी नहीं देख सकता। यह सभी लज़्ज़तों से बड़ी लज़्ज़त होगी, और फिर सभी नेमतों में से सबसे बड़ी नेमत यह होगी कि जन्नतवालों को अपने पैदा करनेवाले की हमेशा के लिए रज़ामंदी और ख़ुशनूदी हासिल हो जाएगी। वह हमेशा-हमेशा के लिए उनसे ख़ुश और राज़ी हो जाएगा और इस बात का डर पूरी तरह मिट जाएगा कि वह कभी भी उनसे नाराज़ हो। जिस इनसान को यह नेमत हासिल हो जाए तो इससे बड़ी और कौन-सी नेमत है जिसकी वह आरज़ू करे।

जन्नत से संबंधित क़ुरआन मजीद में बहुत ज़्यादा बातें आई हैं, उनमें से कुछ यहाँ नक़ल की जा रही हैं—

> "अपने परवरदिगार की मग़फ़िरत की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़ लपको जिसका फैलाव इतना है जैसे आसमान और ज़मीन का फैलाव। वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो ख़ुदा और उसके रसूलों पर ईमान लाते हैं। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसको चाहे प्रदान करे। और अल्लाह का फ़ज़्ल बहुत बड़ा है।" (क़ुरआन, 57 : 21)
>
> "और जब तू वहाँ (यानी जन्नत की तरफ़) नज़र डालेगा तो नेमत और एक बड़ी बादशाहत देखेगा।" (क़ुरआन, 76 : 20)
>
> "जन्नतवाले उस दिन अच्छी ठहरने की जगह और बेहतर आराम करने की जगह में होंगे।" (क़ुरआन, 25 : 24)
>
> "और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए वे जन्नत के हरे-भरे बाग़ों में होंगे। जो कुछ वे चाहेंगे उनके परवरदिगार के यहाँ वह सब कुछ मौजूद होगा, यही बड़ा फ़ज़्ल है। यही वह चीज़ है जिसकी

ख़ुशख़बरी ख़ुदा अपने बन्दों को देता है जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल अमल किए।" (क़ुरआन, 42 : 22, 23)

"तो कोई व्यक्ति भी नहीं जानता कि लोगों के नेक अमलों (कर्मों) के बदले में कैसी-कैसी आँख की ठंडक उनके लिए ग़ैब के परदे में छुपाकर रखी गई है।" (क़ुरआन, 32 : 17)

"परहेज़गारों के लिए जिस जन्नत का वादा किया जा रहा है उसकी मिसाल यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही होंगी, उसके फल और उसकी छाया सदैव बाक़ी रहनेवाली होगी। यह है उन लोगों का अंजाम जो परहेज़गारी करते रहे।" (क़ुरआन, 13 : 35)

"न उस (जन्नत) में उन्हें कोई तकलीफ़ छुएगी और न वे उससे बाहर निकाले जाएँगे।" (क़ुरआन, 15 : 48)

"न उसमें सूरज की तपिश देखेंगे और न कड़ाके की सर्दी।" (क़ुरआन, 76 : 13)

"(जन्नतवालों की इतनी इज़्ज़त बढ़ा दी जाएगी कि) उन्हें परवरदिगार रहमान की ओर से सलाम कहा जाएगा।" (क़ुरआन, 36 : 58)

"और (जन्नतवाले) कहेंगे कि सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हमसे ग़म को दूर किया। बेशक हमारा परवरदिगार बख़्शनेवाला और क़द्र करनेवाला है, जिसने हमें अपने फ़ज़्ल से सदैव रहने की जगह ठहराया। इसमें न हमें कोई मशक़्क़त उठानी पड़ती है और न हमें कोई थकान ही आती है।" (क़ुरआन, 35 : 34, 35)

"और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उनके पास (बधाई देने) आएँगे, और (कहेंगे कि) तुमपर सलाम हो इसलिए कि तुमने सब्र किया था—तो आख़िरत का घर क्या ही अच्छा है!" (क़ुरआन, 13 : 23, 24)

"अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उनकी मेहमानदारी के लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे जिनमें वे हमेशा रहेंगे। वहाँ से कहीं और जाना न चाहेंगे।' (क़ुरआन, 18 : 107, 108)

"उनके लिए वहाँ मेवे होंगे और उनके लिए वह (सब कुछ) होगा, जो वे माँगेंगे। परवरदिगार मेहरबान की तरफ़ से उन्हें सलाम कहा जाएगा।" (क़ुरआन, 36 : 57, 58)

"तू उस दिन मुसलिम मर्दों और मुसलिम औरतों को देखोगे कि उनका नूर उनके आगे-आगे और उनकी दाहिनी तरफ़ चल रहा होगा। (उनसे

कहा जाएगा) आज तुम लोगों के लिए ख़ुशी है, बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, इन्हीं में हमेशा रहोगे, यह है बड़ी कामयाबी।"

(क़ुरआन, 57 : 12)

"और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे, उनको गिरोह बना-बनाकर जन्नत की तरफ़ ले जाया जाएगा, यहाँ तक कि जब वे जन्नत के पास पहुँचेंगे, और उसके दरवाज़े खुले होंगे और जन्नत की हिफ़ाज़त करनेवाले उनसे 'सलाम अलैक' करके कहेंगे कि तुम अच्छे रहे, सो इसमें हमेशा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ और यह कहेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है, जिसने अपना वादा हमें सच कर दिखाया और हमको उस ज़मीन का मालिक बनाया कि हम जन्नत (बहिश्त) में जहाँ चाहें रहें। तो अमल करनेवालों का क्या ही अच्छा बदला है, और तू फ़रिश्तों को देखेगा कि आसमान के चारों तरफ़ घेरा बाँधे अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तसबीह (गुणगान) कर रहे हैं। और लोगों के बीच इनसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, और यह आवाज़ होगी कि सारी तारीफ़ें ख़ुदा ही के लिए हैं जो सारे जहान का परवरदिगार है।"

(क़ुरआन, 39 : 73-75)

"(नेक अमल करनेवाले लोगों से कहा जाएगा) ऐ मुतमइन रूह तू अपने पालनहार की तरफ़ चल, तू उससे ख़ुश, (और) वह तुझसे ख़ुश। फिर हमारे बन्दों में शामिल हो और हमारी जन्नत में जा दाख़िल हो।"

(क़ुरआन, 89 : 27-30)

"ये (नेक अमल करनेवाले लोग) ख़ुदा के गिरोह हैं। जान लो कि अल्लाह का गिरोह ही कामयाबी हासिल करेगा।" (क़ुरआन, 58 : 22)

"कितने चेहरे (होंगे कि) उस दिन चमकते होंगे, हँसते और ख़ुशियाँ मनाते।" (क़ुरआन, 80 : 38-39)

"कितने चेहरे (होंगे कि) उस दिन तरोताज़ा होंगे, जो अपने परवरदिगार को देख रहे होंगे।" (क़ुरआन, 75 : 22, 23)

"तू उन (नेकी करनेवालों) के चेहरों पर नेमत की ताज़गी महसूस करेगा।" (क़ुरआन, 83 : 24)

"और जो कुछ मलिनता उनके दिलों में एक-दूसरे की ओर से होगी हम उसे निकाल देंगे।"

"वह उस (जन्नत) में सिवाय पहली मौत के (जिसका मज़ा चख चुके)

और मौत का मज़ा नहीं चखेंगे, और अल्लाह उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लेगा।" (क़ुरआन, 44 : 56)

"उनका पालनहार उनको अपनी मेहरबानी और ख़ुशनूदी (प्रसन्नता) और ऐसे बाग़ों की शुभ-सूचना (बशारत) देता है जिसमें उनको सदैव रहनेवाली नेमत मिलेगी।" (क़ुरआन, 9 : 21)

हज़रत अबू सईद (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि (जब जन्नती जन्नत में पहुँच जाएँगे और उन्हें वहाँ की नेमतें अता हो जाएँगी, तो) अल्लाह उन्हें संबोधित करके फ़रमाएँगे कि ऐ जन्नतवालो ! वे (यानी जन्नतवाले) अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार, हम हाज़िर हैं, आपके दरबार में हाज़िर हैं और सारी भलाई और ख़ैर आप ही के क़बज़े में है।

फिर अल्लाह तआला उन बन्दों से फ़रमाएँगे कि क्या तुम ख़ुश हो ?

ये जन्नती लोग अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! जब आपने हमें यहाँ वह कुछ नसीब फ़रमाया है जो आपने किसी मख़लूक़ को नहीं दिया था, तो फिर हम क्यों राज़ी और ख़ुश न होंगे।

इसके बाद अल्लाह तआला फ़रमाएँगे कि क्या मैं तुमको इन सबसे अच्छी और श्रेष्ठ दूसरी चीज़ दूँ ?

वे बन्दे अर्ज़ करेंगे कि परवरदिगार ! वह क्या चीज़ है जो इस जन्नत और इसकी नेमतों से भी अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) है ?

अल्लाह तआला फ़रमाएँगे कि मैं अब तुमको अपनी स्थायी और हमेशा रहनेवाली रज़ामंदी और ख़ुशनूदी का तोहफ़ा देता हूँ। इसके बाद अब मैं तुमसे कभी नाराज़ नहीं होऊँगा। (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बिजली (रज़ि०) से रिवायत है कि (एक रात) हम अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास बैठे थे। आप (सल्ल०) ने चाँद की तरफ़ देखा, और यह चौदहवीं रात थी। फिर आप (सल्ल०) ने हमें सम्बोधित करके फ़रमाया, "यक़ीनन तुम अपने परवरदिगार को इसी तरह देखोगे जैसे कि इस चाँद को देख रहे हो। तुम्हें इसके देखने के लिए कोई जतन और कोशिश नहीं करनी पड़ेगी, और कोई परेशानी नहीं होगी। अतः तुम अगर यह कर सको कि सूरज निकलने से पहली नमाज़ (यानी फ़ज्र की नमाज़) और सूरज डूबने से पहलेवाली नमाज़ (यानी अस्र की नमाज़) के मुक़ाबले में कोई चीज़ तुमपर ग़ालिब न आए तो ज़रूर ही ऐसा करो।"

इसके बाद आप (सल्ल०) ने यह आयत पढ़ी—

"और अपने रब की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान कर, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले।" (क़ुरआन, 20 : 130)

इस हदीस में रसूल (सल्ल०) ने फ़ज्र की नमाज़ और अस्र की नमाज़ की अहमियत बयान की है कि जिस इनसान को इस बात की ख़्वाहिश हो कि क़ियामत के दिन अपने पालनहार का दीदार करने का सौभाग्य हासिल करे, उसे इन दोनों नमाज़ों की पाबंदी करनी चाहिए। इन दोनों नमाज़ों की फ़ज़ीलत (महत्ता) बयान करने से मुराद यह नहीं कि बाक़ी तीन नमाज़ों की पाबंदी ज़रूरी नहीं। नमाज़ें तो पाँचों फ़र्ज़ हैं। यहाँ सिर्फ़ दो नमाज़ों की ख़ास फ़ज़ीलत बताई गई है।

हज़रत अबू रज़ीन उक़ैली (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने एक दिन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से निवेदन किया, "ऐ अल्लाह के रसूल! क्या क़ियामत में हममें से हर एक अपने रब को अकेला देख सकेगा?"

आपने फ़रमाया, "हाँ, देख सकेगा।"

मैंने अर्ज़ किया, "क्या इसकी कोई निशानी और मिसाल है?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ऐ अबू रज़ीन, क्या चौदहवीं रात को तुममें से हर एक चाँद को बग़ैर भीड़भाड़ के नहीं देखता!"

मैंने अर्ज़ किया, "हाँ, बेशक! चाँद को तो हम सब इसी तरह देखते हैं।"

आपने फ़रमाया, "वह तो अल्लाह की मख़लूक़ (सृष्टि) में से बस एक छोटी-सी मख़लूक़ है, और अल्लाह तो बड़ा रोबवाला और निहायत अज़मतवाला है, फिर उसके लिए क्या चीज़ मुशकिल है।" (अबू दाऊद)

हज़रत अबू सईद (रज़ि०) और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि (जन्नती जब जन्नत में पहुँच जाएँगे, तो) अल्लाह तआला की ओर से एक पुकारनेवाला उन्हें मुख़ातिब करके पुकारेगा कि यहाँ सेहत ही तुम्हारा हक़ और तंदुरुस्ती ही तुम्हारे लिए नसीब है। इसलिए अब तुम कभी बीमार नहीं पड़ोगे, और यहाँ तुम्हारे लिए ज़िन्दगी और हयात ही है, इसलिए अब तुम्हें मौत कभी नहीं आएगी, (और यहाँ) तुम्हारे लिए जवानी और शबाब है। इसलिए अब तुम्हें बुढ़ापा नहीं आएगा और तुम्हारे वास्ते यहाँ चैन और आराम है, इसलिए अब कभी तुम्हें-तंगी और तकलीफ़ नहीं होगी। (मुसलिम)

हज़रत सुहैब रूमी (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब जन्नती जन्नत में पहुँच जाएँगे तो अल्लाह तआला उनसे इरशाद फ़रमाएँगे कि क्या तुम चाहते हो कि मैं तुमको एक चीज़ और भी प्रदान करूँ? वे बंदे अर्ज़ करेंगे कि आपने हमारे चेहरे रौशन किए और दोज़ख़ से बचाकर जन्नत में दाख़िल

किया। (अब इसके आगे और क्या चीज़ हो सकती है जिसकी हम ख़्वाहिश करें।)

हुज़ूर (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि उन बन्दों के इस जवाब के बाद यकायक परदा उठ जाएगा। और वे अल्लाह के चेहरे और उसके जमाल (सौन्दर्य) को बेपर्दा देखेंगे। और उनका यह हाल होगा कि जो कुछ अब तक उन्हें मिला था, उन सभी से ज़्यादा महबूब और प्यारी चीज़ उनके लिए यही दीदार (दर्शन) की नेमत होगी। यह कहने के बाद आपने क़ुरआन मजीद की यह आयत तिलावत की—

> "जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छी बंदगीवाली ज़िन्दगी गुज़ारी उनके लिए अच्छी जगह है (यानी जन्नत) और इसके अलावा एक नेमत और भी (यानी अल्लाह का दीदार)।" (क़ुरआन, 10 : 26)

हज़रत अूब हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "जन्नत में एक ऐसा पेड़ है कि सवार उसकी छाया में सौ साल चले और फिर भी उसको पार न कर सके। और जन्नत में तुममें से किसी की कमान के बराबर की जगह भी इस सारी दुनिया से बेहतर है जिसपर सूरज निकलता और डूबता है।" (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि मैंने अपने नेक बंदों के लिए वह कुछ तैयार कर रखा है जो न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी इनसान के दिल में उसका ख़याल गुज़रा। (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जन्नत में सौ दर्जे (श्रेणियाँ) हैं। उनमें से हर दो दर्जों के बीच इतना फ़ासला है कि जितना कि आसमान और ज़मीन के दरमियान है, और फ़िरदौस जन्नत के तमाम दर्जों से आला (उत्तम) और बेहतर है, और उसी फ़िरदौस से जन्नत की चारों नहरें निकली हैं और फ़िरदौस के ऊपर अर्शे इलाही (अल्लाह का तख़्त) है। जब तुम ख़ुदा से जन्नत माँगो तो 'जन्नतुल-फ़िरदौस' माँगो। (तिरमिज़ी)

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जन्नत में एक बाज़ार है जिसमें हर जुमा को जन्नती जमा होंगे और वहाँ उत्तरी हवा चलेगी जो जन्नतवालों के मुँह और कपड़ों में ख़ुशबू डालेगी और उनके हुस्न व जमाल में बढ़ोत्तरी हो जाएगी। (मुसलिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो लोग जन्नत में सबसे पहले दाख़िल होंगे वे चौदहवीं रात के चाँद की तरह होंगे, और उनके बाद जो जमाअत दाख़िल होगी, वह उस रौशन सितारे

की तरह होगी जो सूरज और चाँद से कम और दूसरे सितारों से ज़्यादा रौशन है, और जन्नतवालों के दिल एक व्यक्ति के दिल की तरह होंगे (यानी आपस में इतना सहयोग (इत्तिफ़ाक़) और मुहब्बत होगी कि) न तो उनमें (कोई) विभेद होगा और न नफ़रत व दुश्मनी। (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा चैन से और ख़ुश रहेगा। फ़िक्र व ग़म उसके पास न आएगा और न तो उसके कपड़े पुराने होंगे और न जवानी ख़त्म होगी।" (मुसलिम)

हज़रत अबू सईद (रज़ि०) और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जन्नत में एलान किया जाएगा कि (ऐ जन्नतवालो!) तुम तन्दुरुस्त रहोगे और कभी बीमार नहीं होगे, और तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे और कभी नहीं मरोगे, और तुम (हमेशा) चैन और आराम (ही) से रहोगे, (कभी) फ़िक्र व ग़म तुम्हारे पास नहीं आएगा। (मुसलिम)

हज़रत अबू सईद (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जन्नतवाले अपने ऊपर की मंज़िलवालों को इस तरह देखेंगे जिस तरह तुम इस रौशन सितारे को देखते हो जो निकलने और डूबने के वक़्त आसमान के क्षितिज (उफ़ुक़) में होता है, और यह ऊँचे घर (बालाख़ाने) बुज़ुर्गी और मरतबा के फ़र्क़ के कारण होंगे जो जन्नतवालों के बीच पाया जाएगा।

सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या ये ऊँचे घर नबियों के मकान होंगे और नबियों के सिवा उनमें कोई नहीं जा सकेगा?

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क्यों नहीं, क़सम है उस सत्ता की जिसके हाथ में मेरी जान है—उनमें वे लोग जा सकेंगे जो ख़ुदा पर ईमान लाए और पैग़म्बरों को सच्चा माना।" (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जन्नत में एक गिरोह ऐसे लोगों का दाख़िल होगा जिनके दिल परिन्दों के दिलों की तरह होंगे (यानी बहुत नर्म और डाह-जलन से ख़ाली)। (मुसलिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुममें से एक मामूली आदमी का जन्नत में यह मरतबा होगा कि अल्लाह तआला उससे फ़रमाएँगे कि आरज़ू (इच्छा) ज़ाहिर कर। वह अपनी आरज़ूएँ ज़ाहिर करना शुरू करेगा और सबको पूरा किया जाएगा। फिर उससे कहा जाएगा कि तेरे दिल में जितनी आरज़ूएँ हैं तूने पूरी कर लीं? वह कहेगा कि

हाँ। अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि वह सब चीज़ें जो तूने माँगीं, उतनी ही और तुझको दी जाती हैं। (मुसलिम)

हज़रत इमाम शाफ़ई (रह०) फ़रमाते हैं कि जबसे मुझे मालूम हुआ है कि जन्नत में साथियों, माँ-बाप और नेक लोगों से मुलाक़ातें होंगी, उस वक़्त से मुझे जन्नत की आरज़ू व तमन्ना और ज़्यादा हो गई है।

जहन्नम (नरक)

इनसानों के आमाल दुरुस्त रखने के लिए अच्छे बदले के साथ-साथ सज़ा भी बहुत ज़रूरी है। हालाँकि यह बात अपनी जगह दुरुस्त है कि हर इनसान की तबीअत और स्वभाव दूसरे से अलग होता है। कुछ लोगों को अच्छे बदले की उम्मीद और उसका शौक़ सज़ा के डर की तुलना में बहुत जल्द सुधार देता है। लेकिन कुछ लोगों को सज़ा का डर अच्छे बदले की उम्मीद की तुलना में बहुत जल्द सीधे रास्ते पर ला देता है। फिर भी इनसानी समाज को सामूहिक रूप से दुरुस्त रखने के लिए दोनों चीज़ों का होना बहुत ज़रूरी है। तबलीग़ (प्रचार) करनेवाले के लिए ज़रूरी है कि वह इनसानों को नेकी के अच्छे अंजाम का विवरण देकर उनके दिलों में आख़िरत की कामयाबी हासिल करने का शौक़ पैदा करने की कोशिश करे। लेकिन वह अपने फ़र्ज़ों को ठीक-ठीक अदा नहीं कर सकेगा, अगर उसने उन्हें बदअमली और नाफ़रमानी की तकलीफ़देह सज़ा से भी वाक़िफ़ न कराया। व्यक्ति और गिरोह दोनों को दुरुस्त रखने के लिए क़ानून की ताक़त और सज़ाओं की व्यवस्था (निज़ाम) ज़रूरी है।

चुनांचे हम देखते हैं कि अल्लाह तआला की पाक किताब क़ुरआन मजीद और नबी (सल्ल०) की हदीस शरीफ़ दोनों में इसका पूरा-पूरा ख़याल रखा गया है कि जहाँ इनसानों को नेक कर्मों का अच्छा अंजाम बताया जाए वहाँ उन्हें बुरे आमाल की हौलनाक सज़ाओं से भी डराया जाता रहे, ताकि उनके दिलों में वह ईमान जागता रहे जिसके बारे में कहा गया है कि—

"ईमान—ख़ौफ़ और उम्मीद के दरमियान होता है।"

अल्लाह की किताब और पवित्र हदीसों में जहन्नम (नरक) की सज़ाओं का जो विवरण पेश किया गया है, उनसे मालूम होता है कि जहन्नम एक बहुत ही हौलनाक जगह होगी। इसकी हौलनाकियों का नक़्शा इस तरह खींचा गया है कि दिल सीनों के अंदर दहल जाते हैं। इन विवरणों से यह भी पता चलता है कि जहन्नम में सिर्फ़ शारीरिक कष्ट ही नहीं होगा, बल्कि ज़िल्लत और रुसवाई की तकलीफ़ और पछतावे व शर्मिन्दगी की तकलीफ़ भी होगी। इनसान जब यह बुरा अंजाम देख लेगा तो वह तड़प-तड़प उठेगा कि काश! हमें फिर दुनिया में जाने का मौक़ा मिले तो अब हम बड़े ही नेक बनकर ज़िन्दगी गुज़ारें। मगर यह ख़्वाहिश सिर्फ़ एक फ़िज़ूल ख़्वाहिश होगी जिसके पूरा होने की कोई उम्मीद नहीं होगी। फिर इस इंतिहाई तकलीफ़देह हालत में एक और तकलीफ़ की बात यह

होगी कि इस अज़ाब में कोई किसी की मदद को नहीं आएगा और कोई किसी के दुख को दूर नहीं कर सकेगा। जिन मालों और औलादों की मुहब्बत में अंधे होकर किसी इनसान ने यह अज़ाब समेटे होंगे वे उस दिन ज़र्राभर भी काम नहीं आ सकेंगे। सिर्फ़ अपनी अकेली जान होगी जो अपने बुरे कर्मों के अंजाम तले पिसी चली जा रही होगी।

क़ुरआन पाक से यह भी पता चलता है कि जहन्नमियों ने दुनिया में जिन गुमराह करनेवाले रहनुमाओं के पीछे चलकर गुमराहियाँ अपनाई होंगी, उस दिन वे उन्हें इतने बुरे लगेंगे कि वे ख़ुदा से दुआ माँगेंगे—"ऐ ख़ुदा! इन्हें दुगुना अज़ाब दे। ये ख़ुद भी गुमराह थे और इन्होंने हमें भी गुमराह किया।" यह वह वक़्त होगा कि इन गुमराह रहनुमाओं और उनकी पैरवी करनेवालों के बीच इज़्ज़त और मुहब्बत के तमाम ताल्लुक़ात टूट चुके होंगे और वे एक-दूसरे से बेज़ार हो रहे होंगे।

मुख़्तसर (संक्षिप्त) में यह कि दोज़ख़ एक ऐसी जगह होगी जहाँ हर प्रकार की तकलीफ़ के सामान होंगे—जिस्मानी तकलीफ़ के भी, ज़ेहनी तकलीफ़ के भी और रूहानी तकलीफ़ के भी। क़ुरआन मजीद की ये आयतें और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की हदीसें स्पष्ट कर देती हैं कि वह किस प्रकार की हौलनाक और तकलीफ़देह जगह होगी।

> "जब वह (जहन्नम) उन (जहन्नमियों) को दूर करके फ़ासले से देखेगी तो वह उसका चीख़ना और चिंघाड़ना सुनेंगे।" (क़ुरआन, 25 : 12)
>
> "जब वे उसमें डाले जाएँगे तो वे उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह उबल रही होगी। क़रीब है कि ग़ुस्से से फट जाए। जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा तो उसके रक्षक उनसे पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डरानेवाला नहीं आया था? वे कहेंगे : क्यों नहीं, ज़रूर हमारे पास डरानेवाला आया था, लेकिन हमने उसे झुठलाया और कहा कि ख़ुदा ने कुछ भी अवतरित नहीं किया, तुम ख़ुद ही एक बड़ी दीवानगी में पड़े हो और (फिर वे दोज़ख़वाले पछतावे व शर्मिन्दगी की शिद्दत से) कहेंगे कि हम अगर (उस डरानेवाले की बात) सुन लेते या अक़्ल ही से काम लेते तो (आज) हम दोज़ख़वालों में से न होते। इस प्रकार अपने जुर्म का इक़रार करेंगे। धिक्कार (लानत) है दोज़ख़वालों पर।" (क़ुरआन, 67 : 7-11)
>
> "तो उस आग से डरो जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं।"
>
> (क़ुरआन, 2 : 24)

"उस (जहन्नम) के सात दरवाज़े हैं। हर एक दरवाज़े के लिए उनमें से बाँटा हुआ एक हिस्सा है।" (क़ुरआन, 15 : 44)

"और जब इनकार करनेवाले जहन्नम के सामने लाए जाएँगे (तो उनसे कहा जाएगा कि) तुम अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में मज़े उड़ा चुके और उनसे फ़ायदा उठा चुके तो आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी। यह इसका बदला (है) कि तुम बिना किसी हक़ के ज़मीन में अकड़कर चलते थे और इसका बदला (है) कि तुम नाफ़रमानियाँ किया करते थे।"

(क़ुरआन, 46 : 20)

"आज तुमको अपमानजनक यातना दी जाएगी, इसलिए कि तुम ख़ुदा पर नाहक़ झूठ बोला करते थे और उसकी आयतों के मुक़ाबले में अकड़ते थे।" (क़ुरआन, 6 : 93)

"और जिसने हमारी याद से मुँह मोड़ा तो उसकी ज़िन्दगी तंगी में गुज़रेगी और क़ियामत के दिन हम उसको अंधा उठाएँगे। वह कहेगा कि ऐ मेरे परवरदिगार! तूने मुझे अंधा क्यों उठाया जबकि मैं तो देखता था। अल्लाह फ़रमाएगा : ऐसा ही (है), हमारी आयतें तेरे पास आईं, मगर तूने उनकी कुछ ख़बर न ली, और इसी तरह आज तेरी ख़बर नहीं ली जाएगी। जो हद से बढ़ गया और अपने परवरदिगार की आयतों पर ईमान न लाया, हम उसको ऐसा ही बदला दिया करते हैं, और आख़िरत का अज़ाब (यातना) बहुत ही कठोर और अधिक स्थाई है।"

(क़ुरआन, 20 : 124-127)

"और जब वे (जहन्नमवाले) ज़ंजीरों में जकड़े हुए उसके किसी तंग कोने में डाले जाएँगे तो उस मौक़े पर वे मौत माँगेंगे।" (क़ुरआन, 25 : 13)

"और जब वे अज़ाब देखेंगे तो दिल ही दिल में पछताएँगे, और जो लोग इनकार करनेवाले हैं उनकी गरदनों में हम तौक़ (पट्टा) डालेंगे, उनको सिर्फ़ उसी का बदला दिया जाएगा जो वे करते थे।"

(क़ुरआन, 34 : 33)

"और उन्हें खौलता पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आँतों को काट डालेगा।" (क़ुरआन, 47 : 15)

"जहन्नमवाले गर्म हवा और खौलते हुए पानी में होंगे।"

(क़ुरआन, 56 : 42)

"जब कभी भी वे ग़म की वजह से उस (जहन्नम) से निकलने का इरादा

करेंगे, फिर उसी में लौटा दिए जाएँगे और (उनसे कहा जाएगा कि तुम) चखो मज़ा जलने की अज़ाब (यातना) का।" (क़ुरआन, 22 : 22)

"और जो जहन्नम में होंगे वे जहन्नम के दारोग़ा से कहेंगे कि अपने परवरदिगार से दुआ करो कि वह एक दिन हमसे अज़ाब (यातना) हलका कर दे। वे जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुली दलीलें लेकर नहीं आए थे? वे (जवाब में) कहेंगे कि क्यों नहीं, (बेशक आए थे)। वे (दारोग़ा) कहेंगे कि फिर तुम ख़ुद ही दुआ कर लो, और इनकार करनेवालों की दुआ तो (अब) किसी काम की नहीं।"

(क़ुरआन, 40 : 49, 50)

"और जिसका आमालनामा (कर्म-पत्र) बाएँ हाथ में दिया जाएगा, वह कहेगा कि काश! मुझको मेरा आमालनामा न मिला होता, और मुझको अपने हिसाब की ख़बर ही न हुई होती कि क्या है। काश! मरने से मेरा अन्त हो गया होता। मेरी दौलत मेरे काम न आई। मुझसे मेरी बादशाहत लुट गई। (फिर उसके बारे में हुक्म दिया जाएगा कि) इसको पकड़ो और इसके गले में तौक़ (पट्टा) डालो। फिर इसको जहन्नम में धकेल दो। फिर एक ज़ंजीर से, जिसकी नाप गज़ों में सत्तर गज़ है, उसको ख़ूब जकड़ दो। यह तो बुज़ुर्ग (महिमावान) अल्लाह पर ईमान नहीं लाता था और न ही मिसकीन-मुहताजों को खाना खिलाने पर उभारता था; तो आज यहाँ कोई भी इसका दोस्त नहीं।"

(क़ुरआन, 69 : 25-35)

"आग उनके मुँह झुलस देगी और वे उसमें कुरूप हो रहे होंगे। (उनसे पूछा जाएगा कि) क्या ऐसा नहीं था कि मेरी आयतें तुम्हारे सामने पढ़ी जाती थीं तो तुम उन्हें झुठलाते थे? वे कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमपर हमारी बदनसीबी ग़ालिब आ गई थी और हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे परवरदिगार! हमें इससे निकाल। अगर हम फिर (बुरे काम) करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं। ख़ुदा फ़रमाएगा कि पड़े रहो इसी में अपमानित होकर और मुझसे बात न करो। मेरे बन्दों में से एक गिरोह जो कहा करता था कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आए, अतः तू हमें बख़्श दे और हमपर रहम कर और तू सब रहम करनेवालों से बढ़कर रहम करनेवाला है, तो तुमने उन (नेक लोगों) की हँसी उड़ाई यहाँ तक कि उनके कारण तुमने मेरी याद भी भुला दी और तुम उनपर हँसा करते थे।" (क़ुरआन, 23 : 104-110)

"और वे उसमें चिल्लाएँगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें निकाल ताकि हम उन कर्मों के ख़िलाफ़, जो हम किया करते थे, नेक कर्म करें। (तो उन्हें कहा जाएगा कि) क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी, जिसमें नसीहत पकड़नेवाला नसीहत पकड़ता और तुम्हारे पास डरानेवाला भी आया था, तो अब मज़ा चखो। ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं है।"

(क़ुरआन, 35 : 37)

"जो लोग इनकार करनेवाले हैं, अल्लाह के यहाँ न तो उनके माल (धन) ही उनके कुछ काम आएँगे और न उनकी औलाद ही, और यही हैं जहन्नम का ईंधन।" (क़ुरआन, 3 : 10)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की हदीसें भी जहन्नम के बारे में बहुत कुछ जानकारियाँ देती हैं—

हज़रत अनस (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उस शख़्स से, जिसे सबसे ज़्यादा आसान और हलका अज़ाब दिया जाएगा, फ़रमाएगा कि अगर तेरे पास दुनिया की चीज़ों में से कोई चीज़ होती और तू उसे देकर इस अज़ाब से छूट जाता तो क्या तू ऐसा करने पर तैयार होता? वह कहेगा : "जी हाँ !" अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि जब तू आदम (अलै०) की पीढ़ी में था तो मैंने तुझसे इससे अधिक आसान चीज़ की ख़्वाहिश की थी, वह यह कि मेरे साथ दूसरों को शरीक (साझीदार) न करना, मगर तूने मेरे साथ दूसरों को शरीक करने पर ही हठ की।

(बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत अबू बर्दा (रज़ि०) अपने वालिद (बाप) से नक़ल करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जहन्नम में एक नाला है, जिसे हबहब कहते हैं। उसमें वह इनसान होगा जो घमण्डी और नाफ़रमान होगा। (दारमी)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि दोज़ख़ में सिर्फ़ बदबख़्त (अभागा) ही दाख़िल होगा। पूछा गया : ऐ अल्लाह के रसूल ! बदबख़्त कौन है ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बदबख़्त वह है जिसने ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने के लिए उसकी इताअत नहीं की और उसकी नाफ़रमानी से बाज़ नहीं आया। (इब्न माजा)

हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जहन्नमवालों में सबसे हलके अज़ाबवाला वह इनसान होगा जिसकी चप्पलें और उन चप्पलों के तस्मे आग के होंगे। उनकी गर्मी से

उसका दिमाग़ इस तरह खौलेगा और जोश मारेगा कि जिस तरह चूल्हे पर देग खौलती है और उसमें जोश आता है। वह यह नहीं ख़याल होगा कि कोई उससे ज़्यादा अज़ाब में भी है, हालाँकि वह जहन्नमियों में सबसे हलके अज़ाबवाला होगा। (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम्हारी इस दुनिया की आग जहन्नम की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है। अर्ज़ किया गया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! यही (दुनिया की आग) काफ़ी थी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जहन्नम की आग दुनिया की आग के मुक़ाबले में उनहत्तर गुना बढ़ा दी गई है और हर गुने की तपिश दुनिया की आग की तपिश के बराबर है। (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत समुरा बिन जुन्दुब (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जहन्नमवालों में से कुछ वे लोग होंगे जिनको आग उनके टख़नों तक पकड़ेगी और कुछ वे होंगे जिनको आग उनकी जाँघों तक पकड़ेगी, और कुछ वे होंगे जिनको आग उनकी कमरों तक पकड़ेगी, और कुछ वे होंगे जिनको आग उनकी हँसली (गले) तक पकड़ेगी। (मुसलिम)

हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर (सल्ल०) को फ़रमाते सुना : "मैंने तुम्हें जहन्नम की आग से बाख़बर कर दिया है। मैंने तुम्हें जहन्नम के अज़ाब से आगाह कर दिया है।" आप यही बात बार-बार फ़रमाते थे। (दारमी)

हज़रत अली (रज़ि०) के पोते इमाम ज़ैनुल आबिदीन बड़े ही नेक और इबादतगुज़ार बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। आप सफ़र में होते या घर पर कभी तहज्जुद[1] की नमाज़ नहीं छोड़ते। एक बार आप मसजिद में नमाज़ पढ़ रहे थे कि घर में आग लग गई। पास-पड़ोस के लोग दौड़ पड़े। बड़ा शोर व ग़ुल हुआ। लोगों ने आपसे कहा : ऐ रसूल (सल्ल०) के नवासे के बेटे, आग लग गई। लेकिन आप इतमीनान से सजदे में पड़े रहे और आग बुझा दी गई।

जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो लोगों ने कहा कि हज़रत हमने आपको आवाज़ें दीं, मगर आपने तवज्जोह नहीं फ़रमाई। आख़िर आपको किस चीज़ ने इस आग से इस क़द्र बेपरवा कर दिया ?

आपने फ़रमाया, "जहन्नम की आग ने।"

---

1. रात के तीसरे पहर में पढ़ी जानेवाली नफ़्ल नमाज़।

जन्नत के हक़दार कौन होंगे?

अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद में कई आयतें ऐसी आई हैं, जिनमें उन सिफ़तों को गिनाया गया है जो इनसान अपने अन्दर पैदा करके जन्नत का हक़दार हो सकता है। फ़रमाया—

"और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उन्हें ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी।" (क़ुरआन, 2 : 25)

"जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहे उनका सवाब उनके परवरदिगार के यहाँ उन्हें मिलेगा, और उनपर न ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे।" (क़ुरआन, 2 : 277)

"सच्चे मुसलमान तो बस वही हैं कि जब अल्लाह का नाम लिया जाता है तो उनके दिल दहल जाते हैं और जब अल्लाह की आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे उनके ईमान को और भी बढ़ा देती हैं, और (हर हाल) में अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं।" (क़ुरआन, 8 : 2)

"और ये लोग ऐसे हैं कि अपने रब की प्रसन्नता की चाह में सब्र करते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हमने उनको रोज़ी दी है, उसमें से चुपके भी और ज़ाहिर करके भी ख़र्च करते हैं और बुराई को भलाई से दूर करते हैं।" (क़ुरआन, 13 : 22)

"यक़ीनन कामयाबी पाई ईमान लानेवालों ने, जो अपनी नमाज़ में विनम्रता अपनाते हैं और जो व्यर्थ बातों से बचनेवाले हैं, और जो ज़कात के तरीक़े पर अमल करनेवाले हैं और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 23 : 1-5)

"और जो अपनी अमानतों और अपने वादों का ख़याल रखनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 23 : 8)

"(और मोमिनों को अल्लाह की ओर से पुकार होगी कि) ऐ मेरे बन्दो! तुमपर आज कोई ख़ौफ़ नहीं और न तुम ग़मगीन होगे। (ये वे बन्दे होंगे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और (हमारे) आज्ञाकारी थे।" (क़ुरआन, 43 : 68, 69)

"बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है फिर

(उसपर) क़ायम रहे, उन लोगों पर कोई ख़ौफ़ नहीं होगा और न वे ग़मगीन होंगे।" (क़ुरआन, 46 : 13)

"वही तो है जिसने ईमानवालों के दिलों में जमाव पैदा किया, ताकि अपने (पहले) ईमान के साथ उनका ईमान और ज़्यादा हो जाए।" (क़ुरआन, 48 : 4)

"जो लोग अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर (पूरा-पूरा) ईमान रखते हैं, आप उनको न देखेंगे कि वे ऐसे लोगों से दोस्ती रखते हों जो अल्लाह और उसके रसूल के विरोधी हैं, चाहे वे उनके बाप हों या उनके बेटे, या उनके भाई या उनके घराने के लोग ही क्यों न हों। इन लोगों के दिलों में अल्लाह ने ईमान अंकित कर दिया है और उनको अपनी तरफ़ से एक रूह प्रदान करके उनको ताक़त बख़्शी है। वह उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी होगा और वे अल्लाह से राज़ी होंगे। ये लोग अल्लाह की पार्टी के लोग हैं। ख़ूब अच्छी तरह सुन लो कि अल्लाह ही की पार्टी कामयाब होनेवाली है।" (क़ुरआन, 58 : 22)

"(ये वे लोग हैं) जो ख़ुशहाली और तंगी (दोनों में) ख़र्च करते हैं और ग़ुस्से को पी जाते हैं और लोगों को माफ़ करनेवाले हैं। और अल्लाह नेक काम करनेवालों को दोस्त रखता है।" (क़ुरआन, 3 : 134)

"और ये वे लोग हैं कि जब कोई अनुचित काम कर बैठते हैं या गुनाह में पड़कर वे अपने ऊपर ज़ुल्म कर बैठते हैं, तो अल्लाह को याद कर लेते हैं और अपने गुनाहों की माफ़ी चाहने लगते हैं। और अल्लाह के सिवा कौन गुनाह बख़्शता है, और वह अपने किए पर जानते-बूझते हठ नहीं करते। ऐसे लोगों का बदला उनके रब की तरफ़ से माफ़ी (क्षमादान) है और (बहिश्त के) बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और अच्छे कर्म करनेवालों के लिए कैसा अच्छा बदला है।"

(क़ुरआन, 3 : 135, 136)

"जो लोग अल्लाह को खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर (बराबर) याद करते रहते हैं और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते रहते हैं।" (क़ुरआन, 3 : 191)

"लेकिन जो लोग अल्लाह से डरें उनके लिए बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। ये मेहमानी होगी अल्लाह की

ओर से, और जो चीज़ें ख़ुदा के पास हैं वे नेक बन्दों के लिए सबसे अच्छी हैं।" (क़ुरआन, 3 : 198)

"जिनकी जानें (रूहें) फ़रिश्ते ऐसी हालत में क़ब्ज़ करते हैं कि वह पाक होते हैं।" (क़ुरआन, 16 : 32)

"और जो सच्ची बात लेकर आया और उसको सच जाना, यही लोग परहेज़गार हैं।" (क़ुरआन, 39 : 33)

"जो ख़ुदा से बेदेखे डरा और रुजू रहनेवाला दिल लेकर आया।" (क़ुरआन 50 : 33)

"वे लोग रात को बहुत कम सोते थे और रात के आख़री हिस्से में इसतिग़फ़ार (गुनाहों से माफ़ी की दुआ) किया करते थे। और उनके माल में माँगनेवाले और न माँगनेवाले का हक़ था।" (क़ुरआन 51 : 17-19)

"और जो अपने परवरदिगार के हुज़ूर (समक्ष) में खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिशों से रोकता रहा, तो बस (उसका) जन्नत ही ठिकाना है।" (क़ुरआन, 79 : 40, 41)

"क्या तुमने यह खयाल कर रखा है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, जबकि अल्लाह ने अभी उनको परखा ही नहीं जो तुममें जिहाद (जान तोड़ कोशिश) करनेवाले हैं, और न सब्र करनेवालों को परखा है।" (क़ुरआन, 3 : 142)

"और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन्होंने मुहाजिरीन (शरणार्थियों) को जगह दी और मदद की, वही पक्के मुसलमान हैं। उनके लिए माफ़ी है और इज़्ज़त की रोज़ी।" (क़ुरआन, 8 : 74)

"और मुहाजिरीन और अनसार में से जो (इस्लाम में) आगे बढ़नेवाले, प्रथम रहनेवाले हैं और वे जिन्होंने नेक बातों में उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, और वे उससे राज़ी हुए।" (क़ुरआन, 9 : 100)

"और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए, उनके आमाल (कर्मों) को अल्लाह हरगिज़ बेकार न होने देगा। उन्हें उनके मक़सद को पहुँचा देगा। और उनकी हालत दुरुस्त रखेगा और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा, जिसकी उन्हें (ख़ूब) पहचान करा देगा।" (क़ुरआन, 47 : 5, 6)

"तो क्या वह व्यक्ति जो यक़ीन रखता है कि जो कुछ तेरी तरफ़ तेरे परवरदिगार की ओर से उतारा गया है वह हक़ है, उसके बराबर हो जाएगा जो (सीधे मार्ग से) अन्धा है। बात यह है कि नसीहत तो वही ग्रहण करते हैं जो अक़्लवाले हैं, जो अल्लाह के वादे को पूरा करते हैं और क़ौल व क़रार (प्रतिज्ञा) को नहीं तोड़ते, और वे जो उस रिश्ते को जोड़े रखते हैं जिसके जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और अपने परवरदिगार से डरते हैं, और बुरे हिसाब से डरते रहते हैं, और वे जो अपने परवरदिगार की ख़ुशी चाहने के लिए सब्र करते और नमाज़ पढ़ते हैं, और जो माल हमने उन्हें दिया है उसमें से छिपाकर और एलानिया (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते और बुराई को भलाई से दूर करते हैं। यही वे लोग हैं जिनके लिए आख़िरत का घर है (यानी) हमेशा रहने के बाग़ जिनमें वे ख़ुद और जो उनके बाप-दादा और बीवियों और औलाद में से नेक होगा, दाख़िल होंगे, और फ़रिश्ते उनपर हर दरवाज़े से दाख़िल होंगे, (और कहेंगे कि) तुमपर सलामती है इसलिए कि तुमने सब्र किया था। अतः क्या ही अच्छा है आख़िरत का घर!"

(क़ुरआन, 13 : 19-24)

"और जो अल्लाह से दुआएँ माँगते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमें हमारी बीवियों और औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमको परहेज़गारों का पेशवा (नायक) बना।" (क़ुरआन, 25 : 74)

"और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, हम उनको जन्नत के ऊँचे मकानों में ज़रूर जगह देंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे हमेशा उन्हीं में रहेंगे। नेक अमल करनेवालों का बदला क्या ही अच्छा है।—उन लोगों के लिए जिन्होंने सब्र से काम लिया और जो अपने रब पर भरोसा करते हैं।" (क़ुरआन, 29 : 58, 59)

"और हमने इनसान को अपने माँ-बाप के साथ नेकी करने की ताकीद की।" (क़ुरआन, 46 : 15)

"वे मन्नतों को पूरा करते हैं और उस दिन से डरते हैं, जिसकी मुसीबत हर तरफ़ फैली हुई होगी। और वे ख़ुदा की मुहब्बत के लिए मुहताज, यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं, (और कहते हैं कि) हम तो तुमको सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी (प्रसन्नता) के लिए खिला रहे हैं। हम तुमसे न कोई बदला चाहते हैं, न शुक्रगुज़ारी। बेशक हम अपने परवरदिगार के उस दिन से डरते हैं जो मुँह बिगाड़ देगा, और माथे पर बल डाल देगा। तो अल्लाह

भी उनको उस दिन की मुसीबत से बचा लेगा, और उनपर ताज़गी (प्रफुल्लता) और ख़ुशी डालेगा।" (क़ुरआन, 76 : 7-11)

"बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, और ईमानवाले मर्द और ईमानवाली औरतें, फ़रमांबरदार मर्द और फ़रमांबरदार औरतें, और सच बोलनेवाले मर्द और सच बोलनेवाली औरतें, और सब्र करनेवाले मर्द अैर सब्र करनेवाली औरतें, और विनम्रता अपनानेवाले मर्द और विनम्रता अपनानेवाली औरतें, और ख़ैरात करनेवाले मर्द और ख़ैरात करनेवाली औरतें, और रोज़ा रखनेवाले मर्द और रोज़ा रखनेवाली औरतें, और अपनी शर्मगाहों (गुप्त इन्द्रियों) की हिफ़ाज़त करनेवाले मर्द और हिफ़ाज़त करनेवाली औरतें, और ख़ुदा को अधिक से अधिक याद करनेवाले मर्द और याद करनेवाली औरतें—इन सबके लिए अल्लाह ने गुनाहों की माफ़ी और बड़ा बदला तैयार कर रखा है।"

(क़ुरआन, 33 : 35)

"और रहमान के ख़ास बन्दे वे हैं जो ज़मीन पर विनम्रतापूर्वक चाल चलते हैं, और जब जाहिल उनसे (बेवक़ूफ़ी की) बातें करते हैं तो वे कह देते हैं कि—सलाम ! और जो रातों को अपने परवरदिगार के आगे सजदा करते हैं और खड़े होते हैं और जो दुआ माँगते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार ! जहन्नम के अज़ाब (यातना) को हमसे दूर रख। उसकी यातना तो चिमट जानेवाली है। निश्चय ही वह बुरी जगह है; चाहे उसमें थोड़ा ठहरना हो या हमेशा ठहरना हो। और जो ख़र्च करते हैं, तो फ़िज़ूल ख़र्च नहीं करते और न बहुत तंगी करते हैं, बल्कि बीच की राह अपनाते हैं और जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे माबूद को नहीं पुकारते और किसी जान को जिसे ख़ुदा ने हराम किया हो क़त्ल नहीं करते सिवाय हक़ के और (जो) बदकारी नहीं करते।" (क़ुरआन, 25 : 63-68)

"और जो झूठी गवाही नहीं देते और जब बेहूदा कामों के पास से होकर गुज़रते हैं तो सज्जन व्यक्ति की तरह गुज़र जाते हैं, और जो (ऐसे हैं कि) जब उनको उनके परवरदिगार की आयतें सुनाकर नसीहत की जाती है तो वे अंधे और बहरे होकर उनपर नहीं गिरते।"

(क़ुरआन, 25 : 72, 73)

"और जो अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलेगा, उसको अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; वे उनमें हमेशा रहेंगे, और यही बड़ी कामयाबी है।" (क़ुरआन, 4 : 13)

"और तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है ! वह है गर्दन (किसी ग़ुलाम) का छुड़ा देना या भूख के दिन यतीम रिश्तेदार या दुर्दशाग्रस्त मुहताज व ग़रीब को खाना खिलाना, इसके अलावा उन लोगों में होना जो ईमान लाए और एक-दूसरे को सब्र की हिदायत करते रहे, और एक-दूसरे को रहम करने की हिदायत करते रहे।"

(क़ुरआन, 90 : 12-17)

"जिसके आमाल (कर्म) तौल में अधिक वज़नी ठहरेंगे, वह मनचाहा ऐश में होगा।" (क़ुरआन, 101 : 6-7)

"बेशक जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते रहते हैं और उन्होंने नमाज़ पढ़ी और जो माल हमने उन्हें दिया है उसमें से छिपाकर और खुले तौर पर ख़र्च किया वे ऐसे व्यापार की आस लगाए हुए हैं, जिसमें घाटा नहीं है।" (क़ुरआन, 35 : 29)

अल्लाह की इन पाक आयतों के आधार पर जन्नत के हक़दार लोगों की विशेषताएँ (सिफ़ात) निम्नलिखित हैं :

- वे ईमान लाते हैं।
- नेक कर्म करते हैं।
- नमाज़ पढ़ते हैं।
- ज़कात अदा करते हैं।
- जब अल्लाह का नाम लिया जाता है तो अल्लाह के डर से उनके दिल काँप जाते हैं।
- जब वे अल्लाह की आयतें सुनते हैं तो उनका ईमान और अधिक बढ़ जाता है।
- वे अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं।
- वे अल्लाह की ख़ुशनूदी की ख़ातिर सब्र से काम लेते हैं।
- कोई उनसे बदसुलूकी करे तो वे जवाब में अच्छे सुलूक करते हैं।
- नमाज़ पढ़ते हैं तो पूरी तल्लीनता और लगन से पढ़ते हैं।
- वे व्यर्थ बातों से दूर रहते हैं।
- वे अपने आपकी इसलाह (सुधार) करने की कोशिश करते रहते हैं।
- वे अपनी शर्मगाह (गुप्तेन्द्रिय) की हिफ़ाज़त करते हैं और पाक दामन रहते हैं।
- वे अमानतों की हिफ़ाज़त करते हैं।

- वे वादों को पूरा करते हैं।
- वे अल्लाह की आयतों पर ईमान लाते हैं।
- वे अल्लह के फ़रमांबरदार रहते हैं।
- वे अल्लाह की राह में छिपकर भी और एलानिया भी ख़र्च करते हैं।
- वे कहते हैं कि हमारा परवरदिगार एक है, फिर उसी पर क़ायम रहते हैं।
- ये वे हैं कि अल्लाह ने उनके दिलों में संजीदगी और सब्र पैदा किया हुआ है।
- वे अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं।
- वे अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के विरोधियों को राज़दार दोस्त नहीं बनाते चाहे वे रिश्तेदार ही क्यों न हों।
- चाहे ख़ुशहाली की हालत हों या तंगी की, वे दोनों हालतों में ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं।
- वे ग़ुस्से पर क़ाबू रखते हैं।
- वे लोगों को माफ़ करते हैं।
- वे लोगों के साथ भलाई का सुलूक करते हैं।
- अगर उनसे कोई गुनाह हो जाए तो वे तुरन्त अल्लाह को याद करने लगते हैं और गुनाह की माफ़ी माँगने लगते हैं।
- वे अपने गुनाहों पर हठ नहीं करते।
- वे खड़े, बैठे, लेटे (हर हालत में) अल्लाह को याद करते हैं।
- वे आसमानों और ज़मीन की पैदाइश पर ग़ौर करते हैं।
- वे अल्लाह से डरते हैं।
- जिस वक़्त फ़रिश्ते उनकी रूह क़ब्ज़ करते हैं, वे पाक होते हैं।
- वे सच्ची बात को सच जानते हैं।
- उनका दिल अल्लाह की तरफ़ रुजू करनेवाला दिल होता है।
- वे रातों को कम सोते हैं और रात के आख़िरी हिस्से में गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं।
- वे माँगनेवालों और न माँगनेवालों, दोनों प्रकार के ज़रूरतमंदों की माली मदद (आर्थिक सहायता) करते हैं।
- वे क़ियामत के दिन अपने 'रब' के सामने खड़े होने से डरते हैं।

- वे अपने नफ़्स (मन) को बुरी ख़्वाहिशों से रोकते हैं।
- वे अल्लाह की राह में 'जिहाद' करते हैं।
- वे हिजरत करते हैं और मुहाजिरों की मदद करते हैं।
- वे ज़रूरत के वक़्त अल्लाह की राह में जान भी दे देते हैं।
- वे अल्लाह की भेजी हुई तालीम (शिक्षा) को सच्चा समझते हैं।
- वे रिश्तेदारों से संबंध जोड़े रखते हैं।
- वे बुरे हिसाब से डरते हैं।
- वे अकड़बाज़ और घमंडी नहीं, बल्कि ज़मीन पर आजिज़ी (विनम्रता) के साथ चलते हैं।
- वे अल्लाह से भली दुआएँ माँगते रहते हैं।
- वे माँ-बाप के साथ नेकी करते रहते हैं।
- अगर उन्होंने कोई नज़्र (मन्नत) मानी हुई हो तो उसे पूरा करते हैं।
- वे अल्लाह की मुहब्बत के लिए ज़रूरतमंदों को खाना खिलाते हैं और उनसे इसका न कोई बदला और न शुक्रिया चाहते हैं।
- वे सच बोलते हैं।
- वे ख़ाकसारी (विनम्रता) का रवैया अपनाते हैं।
- वे रोज़ा रखते हैं।
- वे अल्लाह को बहुत अधिक याद करते हैं।
- अगर जाहिल उनसे जिहालत का सुलूक करते हैं तो सलाम करके एक तरफ़ हो जाते हैं।
- रातों को खड़े होकर इबादत करते हैं।
- दोज़ख की यातना (अज़ाब) से नजात की दुआएँ करते रहते हैं।
- वे न फ़िज़ूलख़र्च होते हैं और न कंजूस।
- वे किसी को (नाहक़) क़त्ल नहीं करते।
- वे बदकार नहीं होते।
- वे झूठी गवाही नहीं देते।
- बेहूदा कामों के पास से गुज़रना पड़े तो पूरे वक़ार और संजीदगी के साथ गुज़र जाते हैं।
- वे अपने परवरदिगार की आयतों पर ग़ौर करते हैं और उन्हें समझते हैं।

उनपर अंधे-बहरे होकर नहीं गिरते।

- अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के हुक्मों पर चलते हैं।
- लोगों को गुलामी या क़र्ज़ की लानत के फन्दे से आज़ाद कराते हैं।
- वे यतीम, रिश्तेदारों और मिसकीनों को खाना खिलाते हैं।
- वे एक-दूसरे को सब्र करने की हिदायत करते हैं।
- वे एक-दूसरे को रहम (दया) करने की हिदायत करते हैं।
- वे अल्लाह की किताब पढ़ते हैं।

जो लोग इन गुणों (सिफ़ात) से परिपूर्ण होंगे, वे आख़िरत की ज़िन्दगी में कामयाबी और सफलता प्राप्त करेंगे, और हमेशा-हमेशा के लिए अपने पैदा करनेवाले परवरदिगार की ख़ुशी हासिल कर लेंगे और यही असल कामयाबी है।

जहन्नम के हक़दार कौन होंगे?

नीचे की आयतों में वे तमाम बुरे आचरण बताए गए हैं जिनके अपनानेवाले जहन्नम के पात्र (हक़दार) हो जाते हैं :

"और जो उनमें से यह दावा करे कि ख़ुदा नहीं (बल्कि) मैं पूज्य हूँ, तो हम उसको जहन्नम की सज़ा देंगे। सरकशों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।" (क़ुरआन, 21 : 29)

"इसमें शक नहीं कि जो अल्लाह के साथ (किसी को) शरीक करेगा, उसपर अल्लाह ने 'जन्नत' हराम कर दी है और उसका ठिकाना जहन्नम है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।" (क़ुरआन, 5 : 72)

"और जो तुममें से अपने दीन से फिर जाए और कुफ़्र ही की हालत में मरे, तो ऐसे लोगों का किया कराया दुनिया और आख़िरत में अकारथ गया और यही हैं जहन्नमी, वे हमेशा उसी में रहेंगे।" (क़ुरआन, 2 : 217)

"उन (नाफ़रमानों) के दिल हैं जिनसे वे समझते नहीं, और उनकी आँखें हैं जिनसे वे देखते नहीं और उनके कान हैं जिनसे सुनते नहीं। वे जानवरों की तरह हैं, बल्कि वे उनसे भी गए गुज़रे हैं, और यही लोग ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।" (क़ुरआन, 7 : 179)

"वे गुनहगारों से पूछते हैं कि तुम्हें किस चीज़ ने जहन्नम में डाला? वे कहेंगे कि हम नमाज़ियों में से नहीं थे और मुहताज को खाना नहीं खिलाते थे, और इधर-उधर की बातें बनानेवालों के साथ हम भी बातें बनाया करते थे, और हम बदला पाने के दिन (यानी क़ियामत) को झुठलाते थे, यहाँ तक कि हमें मौत आ गई।" (क़ुरआन, 74 : 40-47)

"(अल्लाह ने शैतान से फ़रमाया) चला जा, जो कोई भी उनमें से तेरी पैरवी करेगा, तो निश्चय ही जहन्नम तुम्हारा पूरा बदला है।" (क़ुरआन, 17 : 63)

"और जो लोग इनकार करनेवाले हैं उनके हिमायती शैतान हैं कि उनको रौशनी से निकालकर अंधकार में धकेलते हैं। यही लोग जहन्नमवाले हैं। वे हमेशा जहन्नम में रहेंगे।" (क़ुरआन, 2 : 257)

"बेशक, जिन लोगों ने हमारी आयतों से इनकार किया, निश्चय ही उनको जहन्नम (आग) में दाख़िल करेंगे।" (क़ुरआन, 4 : 56)

"बल्कि उन्होंने क़ियामत को झुठलाया और जो क़ियामत को झुठलाएगा, उसके लिए हमने जहन्नम तैयार की है।" (क़ुरआन, 25 : 11)

"जिन लोगों ने अल्लाह के सामने हाज़िर होने को झुठलाया, निस्संदेह ! वे लोग घाटे में रहे; यहाँ तक कि जब क़ियामत एकदम उनपर आ मौजूद होगी तो वे चिल्ला उठेंगे कि अफ़सोस हमारी कोताही पर जो क़ियामत के बारे में हमसे हुई! और वे अपने (गुनाहों के) बोझ अपनी पीठों पर लादे होंगे। देखो, कितना बुरा बोझ है जो ये उठा रहे हैं !" (क़ुरआन, 6 : 31)

"और नूह की क़ौम ने भी जब रसूलों को झुठलाया तो हमने उनको डुबो दिया और लोगों (की शिक्षा) के लिए उन्हें एक निशानी बना दिया।" (क़ुरआन, 25 : 37)

"ये वे लोग हैं जो इस किताब को झुठलाते हैं और उन किताबों को भी जो हमने अपने पैग़म्बरों के ज़रिए से भेजीं। अत: इनको आख़ीर में हक़ीक़त मालूम हो जाएगी।" (क़ुरआन, 40 : 70)

"ग़रज़ कि घमंड करनेवालों का क्या ही बुरा ठिकाना है।" (क़ुरआन, 16 : 29)

"(जहन्नमियों से कहा जाएगा कि) यह है वह आग जिसे तुम झुठलाया करते थे।" (क़ुरआन, 52 : 14)

"बेशक, अल्लाह मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) और इनकार करनेवालों— सबको जहन्नम में जमा करनेवाला है।" (क़ुरआन, 4 : 140)

"जो लोग इनकार और ज़ुल्म करते रहे, उनको ख़ुदा न तो बख़्शेगा और न उन्हें जहन्नम के रास्ते के सिवा कोई रास्ता दिखाएगा, जिसमें वे हमेशा- हमेशा रहेंगे।" (क़ुरआन, 4 : 168, 169)

"और उस दिन हम जहन्नम उन इनकार करनेवालों पर पेश करेंगे जिनकी आँखों पर मेरी याद से परदा पड़ा था और वे सुन भी न सकते थे।" (क़ुरआन, 18 : 100, 101)

"तो क्या ये लोग जिन्होंने इनकार किया है, इस ख़याल में हैं कि मुझे छोड़कर मेरे बंदों को हिमायती बना लें ? निश्चय ही हमने जहन्नम को इनकार करनेवालों की मेहमानी के लिए तैयार कर रखा है।" (क़ुरआन, 18 : 102)

"यह जहन्नम उनका बदला है, इसलिए कि उन्होंने इनकार किया और

हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई।" (क़ुरआन, 18 : 106)

"और जो लोग इनकार करनेवाले हैं (दुनिया में इस तरह) रहते-बसते और खाते (पीते) हैं, जिस तरह चौपाए खाते हैं, और उनका ठिकाना जहन्नम है।" (क़ुरआन, 47 : 12)

"हाँ, जो मुँह मोड़े और इनकार करे, तो अल्लाह उसको बड़ा अज़ाब (यातना) देगा।" (क़ुरआन, 88 : 23, 24)

"जिन्होंने अपने 'दीन' को हँसी-खेल बना रखा था, और दुनिया की ज़िन्दगी उन्हें धोखे में डाले हुए थी; तो आज हम भी उनको भुला देंगे, जिस तरह इन्होंने उस दिन के पेश आने को भुला दिया . . .।"

(क़ुरआन, 7 : 51)

". . . . और जिस अज़ाब की हँसी उड़ाते थे, वह उनपर आ धमकेगा।"

(क़ुरआन, 45 : 33)

"जिस दिन नाफ़रमान (पछतावे की अधिकता के कारण) अपने हाथ काटेगा (और) कहेगा कि ऐ काश ! मैंने रसूल की राह अपनाई होती।"

(क़ुरआन, 25 : 27)

"और क़ियामत के दिन तू देखेगा कि जिन लोगों ने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है उनके मुँह काले होंगे।" (क़ुरआन, 39 : 60)

"बल्कि (उस इनकार करनेवाले ने) झुठलाया और मुँह मोड़ा, फिर अकड़ता हुआ अपने घरवालों की तरफ़ चलता बना। (तो ऐ शख़्स) तुझपर धिक्कार है ! फिर धिक्कार है ! फिर (ऐ शख़्स) तुझपर धिक्कार है ! ! ! फिर धिक्कार है !" (क़ुरआन, 75 : 32-35)

"और जिसने कंजूसी की और बेपरवाई दिखाई और अच्छी बात को झूठा जाना तो हम मुश्किल जगह उसके लिए आसान कर देंगे (यानी उसके लिए वे आमाल आसान हो जाएँगे, जिनके कारण वह मुश्किल जगह यानी जहन्नम में जाए)।" (क़ुरआन, 92 : 8-10)

"और जो लोग बन्दगी को बुरा समझते और घमंड करते थे, अल्लाह उन्हें दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा।" (क़ुरआन, 4 : 173)

"और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाएँगे और उनसे अकड़ बैठेंगे, वही जहन्नमवाले हैं कि वे उसी में हमेशा रहेंगे।" (क़ुरआन, 7 : 36)

"तो जिसने सरकशी की और दुनिया की ज़िन्दगी को प्राथमिकता दी तो उसका ठिकाना बस जहन्नम है।" (क़ुरआन, 79 : 37-39)

"बेशक वे लोग जिन्होंने ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों को मुसीबत में डाला, फिर तौबा न की, निस्संदेह उनके लिए अज़ाब (यातना) है जहन्नम का, और उनके लिए अज़ाब है भड़कती आग का।"

(क़ुरआन, 85 : 10)

"क्या तुम (अल्लाह की) किताब के एक हिस्से पर ईमान रखते हो और दूसरे हिस्सों का इनकार करते हो? तो तुममें से जो भी यह काम करे, उसकी सज़ा इसके सिवा क्या हो सकती है कि दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई हो और क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब की तरफ़ भेज दिए जाएँगे।" (क़ुरआन, 2 : 85)

"और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे और अल्लाह की नियत की हुई सीमाओं से आगे बढ़े तो अल्लाह उसको जहन्नम में दाख़िल करेगा।" (क़ुरआन, 4 : 14)

"और बेशक बदकार (बुरे काम करनेवाले) जहन्नम में होंगे।"

(क़ुरआन, 82 : 14)

"और जिन्होंने बुराइयाँ कमाईं, तो उनकी बुराई की सज़ा उसी के बराबर मिलेगी और रुसवाई उनपर छाई होगी—उन्हें अल्लाह से बचानेवाला कोई नहीं होगा। (उनके चेहरे ऐसे काले होंगे) मानो कि उनके चेहरों को रात के काले टुकड़ों से ढाँप दिया गया है. . .।" (क़ुरआन, 10 : 27)

"और जो लोग बुरी चालें चलते हैं, उनके लिए सख़्त अज़ाब है।"

(क़ुरआन, 35 :10)

"और जो लोग सोना-चाँदी जमा क़रते रहते हैं और उसको ख़ुदा की राह में ख़र्च नहीं करते, उनको दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो।"

(क़ुरआन, 9 : 34)

क़ुरआन मजीद की उक्त आयतों के आधार पर जहन्नम (नरक) में जानेवालों के निम्नलिखित गुण होंगे—

- जो अल्लाह को नहीं मानते और स्वयं के पूज्य होने का दावा करते हैं।
- जो अल्लाह के साथ दूसरों को साझी (शरीक) ठहराते हैं।
- जो दीन के प्रति उद्दंडता और संरकशी दिखाते हैं और दीन से फिर जाते हैं।
- जो अपने दिल, आँखों और कानों से सही काम लेकर सच्चाई को नहीं पहचानते और जानवरों की तरह आख़िरत की फ़िक्र से बेपरवा होकर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

- जो नमाज़ नहीं पढ़ते।
- जो मुहताजों की मदद नहीं करते।
- जो बेहूदा बकवास और हीले-बहाने करते हैं।
- जो क़ियामत को झुठलाते हैं।
- जो शैतान की पैरवी करते हैं (और उसकी चाल चलते हैं)।
- जो अल्लाह का इनकार करनेवाले हैं।
- जो अल्लाह की आयतों को झुठलाते और उनका इनकार करते हैं।
- जो क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने हाज़िर होने को नहीं मानते।
- जो पैग़म्बरों को झुठलाते हैं।
- जो अल्लाह की भेजी हुई किताबों को झुठलाते हैं।
- जो घमंड और अभिमान करते हैं।
- जो जहन्नम को झुठलाते हैं।
- जो मुनाफ़िक़ (कपटी) हैं।
- जो ज़ुल्म करते हैं।
- जो अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल रहते हैं।
- जो अल्लाह को छोड़कर बन्दों को अपना कार्य-साधक समझते हैं।
- जो अल्लाह और उसके पैग़म्बरों की हँसी उड़ाते हैं।
- जो नाफ़रमानी करते हैं।
- जो दीन को हँसी-खेल बना लेते हैं।
- जो अज़ाब की हँसी उड़ाते हैं।
- जो (अल्लाह के) नाफ़रमान हैं।
- जो अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं।
- जो अकड़ते हैं।
- जो बन्दगी से अपने को दूर रखते हैं।
- जो सरकश हैं।
- जो दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ायदों को आख़िरत के फ़ायदों पर प्राथमिकता देते हैं।
- जो ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों को तकलीफ़ देते हैं।
- जो अल्लाह की किताब के कुछ हिस्सों को मानते हैं और कुछ हिस्सों को नहीं मानते।

- जो अल्लाह और रसूल के हुक्मों की नाफ़रमानी करते हैं।
- जो अल्लाह की नियत की हुई हदों को तोड़ते हैं।
- जो बदकार (दुराचारी) हैं।
- जो बुराइयाँ कमाते हैं।
- जो बुरी चालें चलते हैं।
- जो लोग माल के लोभ में सोना-चाँदी जमा करते और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते।

ये वे लोग हैं जो जहन्नम के हक़दार होंगे, जब तक कि वे इन गुनाहों से तौबा न करें और इन्हें छोड़ न दें।

आख़िरत की चाह की भावना

राहें कितनी ही कठिन क्यों न हों, अगर मंज़िले मक़सूद का शौक़ तेज़ होगा तो इनसान जैसे-तैसे उन मुश्किल राहों को तय कर ही लेगा। राहें कितनी ही दिल को लुभानेवाली क्यों न हों अगर दिल में पक्का यक़ीन हो कि अपनी मंज़िल इन राहों के मुक़ाबले में ज़्यादा दिलफ़रेब और ख़ुश करनेवाली हैं तो इनसान कभी राहों की दिलफ़रेबियों और मनोहरता में खोकर बैठ नहीं जाएगा, बल्कि असल मंज़िल की तरफ़ बढ़ने की कोशिश करता रहेगा; ताकि बेहतर और स्थायी ख़ुशी हासिल कर सके।

यही हाल हमारी इनसानी ज़िन्दगी का है। अगर दिलों में यह ख़याल ज़िन्दा रहे कि यह ज़िन्दगी जो हम गुज़ार रहे हैं सिर्फ़ राह की हैसियत रखती है और असल मंज़िल वही है जो मौत के बाद मिलेगी, तो फिर इस राह पर काँटे उगे हों या फूल खिले हों, समझदार राही राह को राह ही समझेगा और इसे मंज़िले मक़सूद नहीं बनाएगा। अगर रास्ते में काँटे उगे होंगे, वह हँसते-मुस्कुराते उनकी तकलीफ़ें सहता सफ़र जारी रखेगा और अगर फूल खिले हों तो उसके लिए इतनी ख़ुशी काफ़ी होगी कि रास्ता चलते हुए काँटों की तकलीफ़ नहीं सहनी पड़ रही है और ख़ुशबू रूह (आत्मा) को सुगंधित कर रही है। बाक़ी वह उन फूलों से लुत्फ़ उठाने के लिए राह को मंज़िल बनाकर वहाँ बैठ नहीं जाएगा, बल्कि सही मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही रहेगा।

दुनिया की ज़िन्दगी गुज़ारते हुए जो कठिन ज़िम्मेदारियाँ पूरी करनी पड़ती हैं और हक़ की राह पर क़ायम रहने के लिए जिन कठिनाइयों से गुज़रना पड़ता है उन्हें काँटे समझ लीर्जिए।

दुनिया की ज़िन्दगी गुज़ारते हुए जो ऐश व आराम, इज़्ज़त व अज़मत, ख़ुशहाली व बेफ़िक्री हासिल होती है, उन्हें फूल समझ लीजिए।

जिस अक़्लमंद इनसान का ईमान है कि इनसानी ज़िन्दगी का यह पहला चरण (Stage) जो पैदाइश से लेकर मौत तक चलता है बाद में आनेवाले दोनों चरणों से ज़्यादा नापाएदार और अस्थायी है और इनसानी ज़िन्दगी का वह तीसरा चरण जो क़ियामत से शुरू होकर हमेशा-हमेशा के लिए क़ायम रहता है, सबसे ज़्यादा इस बात का हक़ रखता है कि उसे ख़ुशगवार बनाने की कोशिश की जाए। वह समझदार इनसान न ज़िन्दगी के काँटों की तकलीफ़ से हतोत्साहित और बददिल होगा और न फूलों की महक उसे मंज़िल से ग़ाफ़िल करेगी। अगर

उसकी ज़िन्दगी में काँटें आएँगे तो सब्र और दिल की मज़बूती से उसकी तकलीफ़ को बरदाश्त करेगा, और आगे बढ़ता चला जाएगा। और अगर उसकी ज़िन्दगी में फूल खिलेंगे तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करेगा कि उसने अपनी मेहरबानी से उसके सफ़र को ख़ुशगवार बना दिया है, मगर वह उन फूलों भरी राह को कभी मंज़िल बनाने का ख़याल भी नहीं करेगा, मंज़िल तो वही है जो हक़ीक़त में है।

अक़्लवाला और समझदार वह है जो अपने फ़ायदे और नुक़सान को अच्छी तरह समझे। जिसने अस्थायी और बाक़ी न रहनेवाली ख़ुशी हासिल करने की धुन में हमेशा रहनेवाली और उच्चता के शिखर पर पहुँची हुई ख़ुशी को नज़रअंदाज़ कर दिया, उसने बिलकुल ही नासमझी और बदअक़्ली का सबूत पेश किया।

हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि होशियार और ताक़तवर, वह है जो अपने मन की इच्छा (नफ़्स) को क़ाबू में रखे और मौत के बाद के लिए कर्म करे, और नासमझ व कमज़ोर वह है जो अपने आपको मन की इच्छाओं के अधीन कर दे और अल्लाह से उम्मीदें बाँधे। (तिरमिज़ी, इब्न माजा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने रसूल (सल्ल०) से पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! बताइए कि आदमियों में कौन ज़्यादा होशियार और दूर दृष्टिवाला है?" आप (सल्ल०) ने बताया, "वह जो मौत को अधिक याद करता है और मौत के लिए अधिक से अधिक तैयारी करता है। जो लोग ऐसे हैं, वही अक़्लमन्द और होशियार हैं। उन्होंने दुनिया की भी इज़्ज़त हासिल की और आख़िरत की इज़्ज़त और सम्मान भी।"

(मो'अजम सग़ीर—तिबरानी)

सांसारिक जीवन में हासिल होनेवाली इज़्ज़त और प्रतिष्ठा की चरमसीमा, सत्ता और सम्पत्ति समझी गई है। शासन, विशेषकर निरंकुश शासन में शासकवर्ग को ऐश व आराम हासिल करने और इस अस्थायी ज़िन्दगी को ज़्यादा से ज़्यादा ख़ुशहाल बनाने के लिए अपार साधन उपलब्ध होते थे और उन लोगों ने उन साधनों से लाभ भी उठाए, मगर ज़िन्दगी के इन फूलों ने उनकी वाटिकाओं को ज़रा भी पाएदार न बनाया और वे उसी तरह जल्दी से अपने अंजाम को पहुँच गए, जिस तरह वे पहुँच जाते हैं जिन्हें ये साधन प्राप्त नहीं होते। ज़रा दुनिया के उन बड़े-बड़े सम्राटों के आख़िरी क्षणों पर ग़ौर कीजिए जिन्हें सांसारिक जीवन में शान व शौकत, ऐश व आराम और इज़्ज़त व मरतबा सब कुछ हासिल था।

बनू उमैया के मशहूर ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक को जब अपने मरने का यक़ीन

हो गया तो उसने कहा—"जब से मैं पैदा हुआ हूँ, मुझे यह आरज़ू रही कि मैं किसी तरह अपने आपको ख़ुश कर सकूँ, मगर मुझे कभी सच्ची ख़ुशी हासिल न हो सकी। मैंने हुकूमत का बोझ इसलिए अपने सिर लिया था कि बादशाहत इनसान की तरक़्क़ी की सबसे ऊँची चोटी है, लेकिन मुझे धोखा हुआ। मैंने जो कुछ किया है उसपर बहुत ही शर्मिन्दा और अफ़सोस करनेवाला हूँ, मगर शर्मिन्दगी और अफ़सोस का वक़्त गुज़र चुका है। और मैं नाकाम व नामुराद और गुनाहों का बोझ दुनिया से लेकर जा रहा हूँ। मैंने जो रास्ता अपने लिए चुना वह पूरी तरह ग़लत था। मेरे हाल और अंजाम से नसीहत हासिल करो।"

बनू अब्बास के मशहूर खलीफ़ा हारून रशीद को जब मौत ने आ पकड़ा तो वह 'तूस' के इलाक़े में था। जिस घर में वह ठहरा हुआ था उसी में अपने लिए क़ब्र खुदवाई। जब क़ब्र बनकर तैयार हो गई तो, कुछ हाफ़िज़ों ने क़ब्र में उतरकर क़ुरआन मजीद ख़त्म किया। हारून रशीद ने कहा, "लोगो ! गवाह रहना कि मैं अल्लाह पर ईमान रखता हूँ और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को सच्चे दिल से माननेवाला हूँ। मैं नाफ़रमानी और गुनाह का पुतला हूँ, जिसने सारी उम्र ग़म दूर करने की कोशिश की, लेकिन फिर भी ग़म दूर न कर सका। मैंने बेहद ग़म से भरी हुई और फ़िक्र की ज़िन्दगी गुज़ारी है। हुकूमत के कामों और हुकूमत की लानतों ने मुझे अकसर अल्लाह और मज़हब से ग़ाफ़िल रखा है। अल्लाह मुझे माफ़ करे। मुझे ज़िन्दगी का कोई दिन ऐसा याद नहीं है जो मैंने बेफ़िक्री के साथ गुज़ारा हो। अब मैं मौत के किनारे हूँ। मौत मुझे तुम सबसे जुदा कर देगी और यह क़ब्र जो इस वक़्त मुँह खोले मेरे सामने है मेरे जिस्म को निगल लेगी। यही हर इनसान का अंजाम है, मगर इनसान अपने अंजाम से मेरी तरह ग़ाफ़िल रहता है।"

ख़लीफ़ा हारून रशीद के बेटे 'मामून रशीद' के दौर को बनू अब्बास का सुनहरा दौर कहते हैं। जब मामून की आख़िरी घड़ी आई तो वक़्त का एक मशहूर भाषाविद् (ज़बानदान) जाहिज़ हालचाल मालूम करने के लिए आया। देखा कि किसी जानवर की खाल का बिछौना बिछा था, उसपर रेत पड़ी थी। ख़लीफ़ा उस रेत पर लोट रहा था और ये शब्द ज़बान पर थे—

> "ऐ वह कि जिसकी बादशाही कभी ख़त्म न होगी, उसपर रहम फ़रमा जिसकी बादशाही जा रही है। ऐ वह जो कभी नहीं मरेगा, उसपर रहम कर जो मर रहा है।"

जाहिज़ ने कहा, "अल्लाह, अमीरुल मोमिनीन की इज़्ज़त और शान को बढ़ाए और तन्दुरुस्ती बख़्शे !"

मामून ने कहा, "मेरी तन्दुरुस्ती की दुआ न करो, बल्कि मेरे लिए मग़फ़िरत (क्षमा-याचना) की दुआ करो।" फिर कहा, "ऐ ख़ुदा ! तूने हमें हुक्म दिया और हमने नाफ़रमानी की। तू मुझे बख़्श दे, क्योंकि तू बड़ा ही रहीम है।"

इसके बाद रूह परवाज़ कर गई।

बनू अब्बास के ख़लीफ़ा वासिक़ बिल्लाह ने मरते वक़्त यह शेर पढ़ा—

भाव : "मौत में सब बराबर के शरीक (सहभागी) हैं। न बाज़ारी लोग बचेंगे, न बादशाह ही ज़िन्दा रहेंगे। ग़रीबों को उनकी क़ब्र में ग़रीबी ने कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया और न अमीरों को उनकी अमीरी कुछ भी फ़ायदा पहुँचाएगी।"

फिर हुक्म दिया कि फ़र्श उठा दिया जाए और अपना गाल ज़मीन पर रखकर चिल्लाया—"ऐ वह जिसकी बादशाही न ख़त्म होनेवाली है ! उसपर रहम कर जिसकी बादशाही ख़त्म हो गई।"

यह कहा और इंतिक़ाल कर गया।

सिकन्दरे आज़म (Alexander the Great) जिसकी फ़तह ने दुनिया के एक बहुत बड़े हिस्से को उलट-पलटकर रख दिया था, जब मौत उसके सामने आई तो वह कह उठा—

"मैं दुनिया को जीतना चाहता था, मगर मौत ने बहुत जल्द ठीक जवानी की हालत में मुझे जीत लिया। मैं सोच रहा हूँ कि उस दिन के लिए मैंने कितने इनसानों का ख़ून बहाया और जो तलवार से बच गए, उन्हें किस तरह तबाह किया, और आज मैं क्या लेकर जा रहा हूँ !"

नेपोलियन जो दुनिया के बड़े विजेताओं में गिना जाता था, जब उसकी मौत आई तो वह 'सेंट हेलना' में क़ैद था। मरते वक़्त उसने कहा—

"मायूसी मेरे यहाँ गुनाह थी। मगर मुझसे ज़्यादा मायूस इनसान दुनिया में कोई नहीं है। मैं दुनिया में दो चीज़ों का भूखा था—एक हुकूमत का और दूसरे मुहब्बत का। हुकूमत बड़े संघर्ष के बाद मुझे मिली, मगर मेरा साथ न दे सकी। अगर साथ देती भी तो कितने दिन के लिए, जिसका अंजाम आज मेरे सामने है। मुहब्बत को मैंने बहुत तलाश किया मगर मैं उसे हासिल न कर सका। मैंने जिससे मुहब्बत की उसने मुझे धोखा दिया। शायद मुहब्बत का जवाब धोखा और दग़ा ही होता होगा। अगर किसी इनसान की ज़िन्दगी का मक़सद यही है जो मेरा रहा है तो वह ज़िन्दगी बेकार है। मेरे नज़दीक दुनिया मायूसी है और मायूसी ही का नाम दुनिया है।"

ये उन सुलतानों और बादशाहों के आख़िरी क्षण हैं, जिन्होंने बादशाहत को

बादशाहत की ख़ातिर चाहा। अब ज़रा उन पाकबाज़ हस्तियों के आख़िरी लम्हों का भी अवलोकन कर लीजिए, जिन्होंने बादशाहत की क़तई ख़्वाहिश न की। जिन्हें जनता ने अपनी मरज़ी से सरदारियाँ दीं और चूँकि वे सरदारियों के ख़्वाहिशमंद नहीं थे, इसलिए उन्होंने उन सरदारियों को शानोशौकत और ऐशो आराम का साधन बनाने के बजाए उन्हें ज़िम्मेदारियाँ समझा और उम्र के आख़िरी लम्हात तक ज़िम्मेदारियों के एहसास से काँपते रहे।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) की हालत ख़राब हो गई और समझ लिया गया कि नबी (सल्ल०) के इस पाकबाज़ साथी का आख़िरी वक़्त आ गया है तो आपने अपने जानशीन (उत्तराधिकारी) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) को संबोधित करके कुछ नसीहतें कीं। फ़रमाया—

"मैं तुम्हें एक वसीयत करता हूँ। अगर तुमने उसे याद रखा तो दुनिया की कोई चीज़ तुम्हें मौत से ज़्यादा पसंदीदा न होगी, और मौत का आना यक़ीनी है। और अगर तुमने मेरी वसीयत को भुला दिया तो फिर दुनिया की कोई चीज़ तुम्हारे लिए मौत से अधिक नापसंदीदा न होगी; हालाँकि तुम किसी तरह भी मौत से नहीं बच सकते। याद रखो तुमपर तुम्हारे ख़ुदा के कुछ हक़ रात में हैं जिनको दिन में हरगिज़ क़बूल नहीं करेगा, और कुछ हक़ दिन में हैं जिनको वह रात में हरगिज़ क़बूल नहीं करेगा, और याद रखो अल्लाह उस वक़्त तक नफ़्ल इबादतों को क़बूल नहीं करेगा, जब तक फ़र्ज़ों को पूरी तरह अदा न कर लो।

क़ियामत के दिन हश्र के मैदान में उन लोगों का पलड़ा हलका होगा जो बातिल (झूठ) की पैरवी कर रहे हैं। बेशक बातिल बहुत ही हलका और बेवज़न है, और जिस पलड़े में बातिल रखा जाए उसे हलका होना ही चाहिए। क़ियामत के दिन भारी पलड़ा उन लोगों का होगा जो इस संसार में हक़ की पैरवी करते रहे और हक़ बहुत ही भारी और वज़नी है। जिस पलड़े में हक़ रखा जाएगा, उसे भारी और वज़नी होना ही चाहिए। अगर तुमने मेरी यह वसीयत याद रखी तो तुम्हारे लिए मौत से ज़्यादा पसंदीदा चीज़ कोई न होगी। और अगर तुमने यह वसीयत भुला दी तो ग़ायब (परोक्ष) चीज़ों में मौत से ज़्यादा कोई चीज़ तुम्हारे लिए नापसंदीदा न होगी, लेकिन याद रखो तुम उससे भाग नहीं सकोगे।"

बनू उमैया के जग प्रसिद्ध, सच्चरित्र (पाकबाज़), दीनदार ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) की वफ़ात की घटनाएँ अत्यन्त प्रभावकारी और दिल को छूनेवाली हैं। आपकी मौत से संबंधित एक रिवायत आपकी बीवी हज़रत फ़ातिमा बिन्त अब्दुल मलिक की है। बयान करती हैं कि एक दिन मैंने उनसे कहा कि मैं

आपके पास से चली जाऊँ। आप सोए नहीं हैं, शायद आपको नींद आ जाए। यह कहकर मैं दूसरे कमरे में चली गई। वहाँ से मैंने सुना कि आप बार-बार क़ुरआन की यह आयत पढ़ रहे थे—

"यह आख़िरत का घर है। इसे हम उन लोगों के लिए बनाते हैं जो ज़मीन में न बड़ाई चाहते हैं, न फ़साद करते हैं और अंजाम तो परहेज़गारों ही के लिए है।" (क़ुरआन)

फिर देर तक मुझे हरकत महसूस न हुई। मैंने ख़िदमत करनेवाले नौकर से कहा कि जाकर देखो तो सही। उसने जाकर देखा, तो ज़ोर से चिल्लाया। मैंने जाकर देखा तो आपको मुर्दा पाया। एक हाथ मुँह पर और दूसरा आँखों पर रखे थे।

आपकी मौत के बारे में एक और उल्लेख मिलता है कि आख़िरी लम्हों में आपने सबको चले जाने का हुक्म दिया। सब चले गए। आपकी बीवी फ़ातिमा और उनके भाई मुसलिमा बिन अब्दुल मलिक दरवाज़े पर रहे। उन लोगों के कानों में यह आवाज़ आई—

"क्या मुबारक चेहरे हैं जो न आदमियों के हैं, न जिन्नों के।"

इसके बाद ऊपर लिखी आयत पढ़कर ख़ामोश हो गए। मुसलिमा ने बहन से कहा कि इंतिक़ाल हो गया। जाकर देखा तो वाक़ई इंतिक़ाल हो चुका था।

ख़लीफ़ा बनने के बाद आपने फ़क़ीराना ज़िन्दगी अपना ली। बैतुलमाल (राजकोष) में से सिर्फ़ इतना वज़ीफ़ा लेते थे जिससे मामूली दर्जे की गुज़र-बसर हो सके। बीवी-बच्चे भी इंतिहाई सादा ज़िन्दगी बसर करते थे। आपकी वफ़ात के वक़्त मुसलिमा ने कहा—"ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने अपनी औलाद के मुँह में कभी यह माल न जाने दिया। इसलिए आप उनको ऐसी हालत में छोड़ जाते हैं कि उनके पास कुछ नहीं। काश! आप मुझे या अपने ख़ानदान के किसी और व्यक्ति को उनके बारे में कुछ वसीयत कर जाते।"

यह बात सुनकर आपने फ़रमाया—"तुम्हारा यह कहना कि मैं तुम्हें या ख़ानदान के किसी और को उनके बारे में वसीयत कर जाऊँ तो उनके बारे में मेरा वारिस और मेरा वली सिर्फ़ ख़ुदा है और वही नेक लोगों का वली (संरक्षक) होता है। मेरे लड़के अगर ख़ुदा से डरेंगे तो ख़ुदा उनके लिए कोई सूरत निकाल देगा।"

फिर आपने अपने लड़कों को बुलाया और आँसुओं भरी आँखों से उन्हें देखकर फ़रमाया, "मेरी जान उन नौजवानों पर क़ुरबान जिन्हें मैंने मुहताज और मुफ़लिस छोड़ा है। लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि मैंने उन्हें अच्छी हालत में छोड़ा

है।——लड़को ! तुम किसी अरब या किसी ज़िम्मी[1] से नहीं मिलोगे जिसपर तुम्हारा हक़ न होगा। लड़को ! तुम्हारे बाप को दो बातों में से एक का इख़तियार था, एक यह कि तुम लोग दौलतमंद हो जाओ और वह जहन्नम में दाख़िल हो, या तुम लोग मुहताज रहो और वह जन्नत में जाए, लेकिन यह बात कि 'तुम मुहताज रहो और वह जन्नत में जाए' उसको ज़्यादा महबूब (पसंद) थी इसकी तुलना में कि तुम लोग दौलतमंद हो और वह आग में जाए। उठो, ख़ुदा तुमको महफ़ूज़ रखे !"

लोगों को उनकी वफ़ात की ख़बर मिली तो आम और ख़ास, आलिम व जाहिल, मुसलिम व ग़ैर मुसलिम सब मातम करने लगे। बसरा के लोगों का क़ायदा था कि जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) का दूत (क़ासिद) बसरा में आता तो चूँकि आम तौर पर वह वज़ीफ़ों की वृद्धि या किसी अछूती बात का हुक्म या किसी बुराई से रुकने का फ़रमान लाता, इसलिए लोग उसका इस्तिक़बाल (स्वागत) करके उसको मसजिद तक लाते और वह उनको ख़त पढ़कर सुनाता। इसलिए जब उनकी वफ़ात की ख़बर आई तो लोगों ने पहले की तरह दूत का इस्तिक़बाल किया, लेकिन जब उसने रोकर उन्हें आपकी मौत की ख़बर सुनाई तो सब रो पड़े।

हज़रत हसन बसरी (रह०) को जब आपकी मौत की ख़बर पहुँची तो बोल उठे—

"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।"

यानी 'हम सब अल्लाह ही के लिए हैं और हमें उसी की तरफ़ लौटकर जाना है।'

तमाम उलेमा व फ़ुक़हा आपकी बीवी फ़ातिमा के पास ताज़ियत[2] के लिए गए और कहा—

"यह मुसीबत तमाम उम्मत के लिए आम है।"

अब्दुल मलिक बिन उमैर ने आपकी अख़लाक़ी ख़ूबियाँ बयान करके कहा—

"अमीरुल मोमिनीन ! ख़ुदा आपपर रहम करे ! आप निगाहों को झुकाए रहते थे, पाक दामन थे, हक़ के साथ दरियादिल और कंजूसी के साथ कंजूस थे। ग़ुस्से के वक़्त ग़ुस्सा होते थे और ख़ुश होने के वक़्त ख़ुश होते थे। न दिल्लगी करते थे, न किसी पर ऐब लगाते थे, और न किसी की ग़ीबत करते थे।"

---

1. अर्थात ग़ैर मुसलिम
2. मृतक के संबंधियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करना।

मुजाहिद का बयान है कि मैं जा रहा था कि एक क़िबती[1] ने मुझसे पूछा कि कहाँ से आ रहे हो? क्या तुम हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) की मृत्यु के समय मौजूद थे? मैंने कहा : "हाँ! यह सुनकर वह रो पड़ा और उनके लिए रहमत की दुआ माँगी। मैंने कहा : तुम उनके लिए क्यों रहमत की दुआ माँगते हो? वे तो तुम्हारे मज़हब के माननेवाले न थे? उसने कहा : मैं उनपर नहीं रोता। मैं तो उस नूर पर रोता हूँ जो ज़मीन पर था और अब बुझ गया।

ये थे वे अक़लमंद, दूरंदेश लोग जिन्होंने ज़िन्दगी की अस्थिरता और आख़िरत की हमेशगी को सही मानों में समझ लिया था। उन्होंने फ़ायदेमंद और इज़्ज़त की ज़िन्दगियाँ गुज़ारीं और पुरसुकून और बावक़ार (स्वाभिमान की) मौतें हासिल कीं। उन्होंने ज़िन्दगी में बेइंतिहा नेकियाँ कीं, मगर फिर भी आख़िरत की पूछताछ से काँपते और डरते रहे, क्योंकि वे उस हक़ीक़त को जानते थे जो उतबा बिन उबैदा की बयान की गई रिवायत में पाई जाती है।

उतबा बयान करते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अगर कोई व्यक्ति अपनी पैदाइश के दिन से मौत के दिन तक बराबर अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए सजदे में पड़ा रहे तो क़ियामत के दिन अपने इस अमल को भी मामूली और तुच्छ जानेगा। (मुसनद अहमद)

ख़ुद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) का एक बयान है कि "जो मामला पेश आना है वह निकट है लेकिन मौत उससे भी निकट है।"

ऐसे ही हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि०) फ़रमाते हैं—"सबसे ज़्यादा सटीक और असरदार नसीहत यह है कि इनसान क़ब्रिस्तान को देखकर नसीहत हासिल करे।"

सभी इलहामी मज़ाहिब (ईश्वरीय धर्मों) ने इनसान को स्पष्ट रूप से बताया है कि नेकी करनेवालों की आख़िरत (परलोक) की ज़िन्दगी कभी न ख़त्म होनेवाली और ग़म और तकलीफ़ से पूरे तौर पर ख़ाली होती है। इसके विपरीत मौजूदा ज़िन्दगी पूरी तरह अस्थायी और अपनी अत्यन्त ख़ुशगवारी की हालत में भी ग़म के काँटों से शायद ही कभी ख़ाली होती है। इसके बाद भी आख़िर क्या बात है कि हम इस खुली हक़ीक़त को भुलाकर इस सांसारिक जीवन ही को मक़सद बना लेते हैं।

इसकी तह में बड़ी हद तक यही बात है कि ईमान की कमज़ोरी के धुँधलकों में अंजाम नज़रों से ओझल हो जाता है और नापाएदार ज़िन्दगी की मुहब्बत ग़ालिब आ जाती है। हालाँकि जब यह मुहब्बत ग़ालिब आ जाती है तो ख़ुद इस

---

1. प्राचीन मिस्री क़ौम–"क़िब्त" से संबंध रखनेवाला व्यक्ति।

नापाएदार ज़िन्दगी में भी अपने चाहनेवालों को ज़िल्लत और रुसवाई का शिकार बना देती है।

हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत पर वह वक़्त आनेवाला है जब दूसरी क़ौमें (स्वादिष्ट निवाला समझकर) उनपर इस तरह टूट पड़ेंगी जिस तरह खानेवाले दस्तरख़्वान पर टूट पड़ते हैं।"

इसपर किसी ने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उस ज़माने में हमारी तादाद इतनी कम हो जाएगी कि हमें निगल लेने के लिए क़ौमें एक होकर हमपर टूट पड़ेंगी?"

आपने फ़रमाया, "नहीं, उस वक़्त तुम्हारी तादाद कम न होगी, अलबत्ता तुम बाढ़ में बहनेवाले तिनकों की तरह बेवज़न होगे और तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से तुम्हारा रोब निकल जाएगा और तुम्हारे दिलों में बुज़दिली और कायरता पैदा हो जाएगी।" इसपर एक आदमी ने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! यह बुज़दिली क्यों पैदा हो जाएगी?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "इस वजह से कि तुम दुनिया से मुहब्बत करने लगोगे और मौत से भागने और नफ़रत करने लगोगे।" (अबू दाऊद)

दुनिया की यह मुहब्बत जिसकी निन्दा की गई है, वह मुहब्बत है जो आख़िरत (परलोक) से ग़ाफ़िल कर देती है और इनसान हर क़ीमत पर ज़िन्दगी से चिमटे रहने ही को अहमियत देता है, चाहे उन्हें ऐसा करने से कितनी ही व्यक्तिगत और क़ौमी ज़िल्लत का सामना क्यों न करना पड़ता हो। जब दुनिया से इस प्रकार की मुहब्बत पैदा हो जाए तो इसका लाज़मी नतीजा यह होगा कि हक़ और सच्चाई की राह में जान देने से जी चुराया जाएगा और जब कोई क़ौम हक़ की राह में जान देने से जी चुराए और ज़िन्दगी को एक अनमोल मोती की तरह सैंत-सैंतकर रखने पर पिल पड़े तो उसका लाज़मी नतीजा यह होता है कि उस क़ौम में बुज़दिली और कायरता पैदा हो जाए, दुश्मनों के दिल से उनका रोब और दबदबा निकल जाए, वह बाढ़ में बहनेवाले तिनकों की तरह बेवज़न होकर रह जाए और दूसरी क़ौमें उसे नर्म चारा समझकर इस तरह उसपर टूट पड़ें जिस तरह खानेवाले दस्तरख़्वान पर टूट पड़ते हैं।

इसके विपरीत जिन समझदार लोगों के ज़ेहन में आख़िरत का स्थायित्व बैठ चुका होता है और उस स्थायी ज़िन्दगी को ख़ुशगवार बनाने का उत्साह ग़ालिब हो चुका होता है, उन्हें दुनिया के हक़ीर (तुच्छ) साज़ो सामान कभी भी इस तरह प्रभावित नहीं करते कि वे उनके लिए सच्चाई और दयानतदारी की राह से

विचलित हो जाएँ। आख़िरत की पूछताछ का ख़ौफ़ उन्हें अपने आमाल (कर्मों) के बारे में इतना चौकन्ना रखता है कि वे ख़ुद अपने मुहासिब बन जाते हैं। इस बात का ख़याल कि एक दिन उन्हें ख़ुदा के आगे जाकर अपने कर्मों का हिसाब देना है, उन्हें मजबूर करता है कि वह वक़्त आने से पहले ख़ुद बार-बार अपना हिसाब लेते रहें।

हज़रत इबराहीम बिन यज़ीद तमीमी ने, जो एक बुज़ुर्ग ताबई थे, एक बार अपने अमीर बाप को इस बात पर टोका कि आप मामूली कपड़े क्यों पहनते हैं? बाप ने जवाब दिया, "बेटा! जब से मैं बसरा में आया, मैंने हज़ारों (दिरहम) पैदा किए; मगर मेरी ख़ुशी में कोई बढ़ोत्तरी न हुई, इसलिए लिबास मेरे लिए ख़ुशी का कोई सामान नहीं। मैं तो आख़िरत के हिसाब-किताब से डरता हूँ, क्योंकि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सहाबी हज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) से सुना है कि क़ियामत के दिन एक दिरहम रखनेवाले से ज़्यादा दो दिरहम रखनेवाले से हिसाब होगा।"

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने एक हरे-भरे पेड़ को देखा तो फ़रमाया, "काश! मैं पेड़ होता कि आख़िरत की ज़िम्मेदारी से छूट जाता।"

आपने बाग़ में पक्षियों को चहचहाते देखा तो ठंडी आह भरकर कहा, "पक्षियो! तुम्हें मुबारक हो, मज़े से चुगते-फिरते हो, उड़ते-फुदकते हो, पेड़ों की शाख़ों पर बैठे हो और क़ियामत में तुम्हारा कोई हिसाब-किताब नहीं होगा। काश! अबू बक्र तुम्हारी तरह होता!"

हज़रत उसमान ग़नी (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "दुनिया ख़ुदा की सराय है जो आख़िरत के मुसाफ़िरों के लिए नियत (वक़्फ़) है। अपना तोशा (पाथेय) ले ले और जो कुछ सराय में है उसका लालच न कर।"

एक बार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने सेनापति हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) को हिदायत करते हुए फ़रमाया, "मान-सम्मान से भागो तो मान-सम्मान तुम्हारे पीछे फिरेगा, और मौत पर दिलेर हो ताकि तुम्हें हमेशा रहनेवाली ज़िन्दगी बख़्शी जाए।"

जिस इमतिहान को इनसान अधिक अहमीयत देता है उसी की तैयारी करता है। एक होनहार और तेज़ छात्र के लिए इमतिहान की तैयारी के दिनों का हर पल बहुत ही क़ीमती होता है। इन तैयारी के दिनों में तमाम ग़ैर ज़रूरी काम छोड़ दिए जाते हैं। कभी-कभी रातों की नींद भी कम कर दी जाती है और खाने में भी इस ख़याल से कमी कर दी जाती है कि ज़्यादा खाना खा लिया तो ज़्यादा नींद आएगी और तैयारी में बाधा होगी।

यह तो उन इमतिहानों का हाल है जिनपर बहरहाल ज़िन्दगी और मौत निर्भर नहीं होती, और जिनमें एक बार फ़ेल हो जाने के बाद दोबारा इमतिहान में बैठने का मौक़ा भी मौजूद होता है।

तो फिर क्या सूरत होगी उस इमतिहान की जिसपर हमेशा रहनेवाली नजात (मुक्ति) निर्भर है और जिसमें एक बार असफल हो जाने के बाद कोई दूसरा अवसर दोबारा इमतिहान देने का हासिल नहीं हो सकता। यही थोड़ा-सा समय तैयारी के लिए मिला है जिसे हम दुनियावी ज़िन्दगी कह सकते हैं, यह थोड़ा-सा समय हाथ से निकल गया तो फिर इसका एक सेकण्ड भी दोबारा नहीं मिल सकेगा।

क़ुरआन पाक की सूरा फ़ातिर, आयत 37 में अल्लाह तआला ने जहन्नमवालों के बारे में फ़रमाया है—

> "और वे उसमें चिल्लाएँगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमें निकाल, ताकि हम जो अमल किया करते थे उनके ख़िलाफ़ नेक अमल करें। (तो उनसे कहा जाएगा कि) क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी जिसमें नसीहत पकड़नेवाला नसीहत पकड़ता।"

क़ुरआन की इस पाक आयत पर जितना भी ग़ौर किया जाए कम है। अब हम जबकि ज़िन्दा हैं और मौत सामने नज़र नहीं आ रही—यही वह वक़्त है जिसमें नसीहत पकड़नेवाले को नसीहत पकड़ लेनी चाहिए वरना कुछ अजब नहीं कि वह वक़्त सिर पर आ जाए कि हम तड़प-तड़पकर दरख़्वास्त करें कि दोबारा अमल करने का मौक़ा दिया जाए, मगर हमें वही जवाब दिया जाए जो नाफ़रमानों को दिया जाता है कि—

> "क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी जिसमें नसीहत पकड़नेवाला नसीहत पकड़ता।"

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो व्यक्ति भी मरेगा उसे शर्मिन्दगी और पछतावा ज़रूर होगा।" लोगों ने पूछा कि हुज़ूर! उसे पछतावा क्यों होगा और उसका कारण क्या होगा?

आपने फ़रमाया, "कि अगर वह मरनेवाला नेक कर्म करनेवाला होगा तो उसे पछतावा और शर्मिन्दगी होगी कि मैंने नेक कर्मों में और ज़्यादा तरक़्क़ी क्यों नहीं की, और अगर वह बुरे कर्म करनेवाला होगा तो उसको इसका पछतावा और शर्मिन्दगी होगी कि मैं बुरे कामों से दूर क्यों न रहा।" (तिरमिज़ी)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ फ़रमाते हैं, "अपनी ज़िन्दगी के उस दिन पर रो जो

गुज़र गया और तुमने उसमें नेकी न की।"

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने फ़रमाया, "व्यस्तता (मशग़ूलियत) से पहले फ़ुरसत को और मौत से पहले बुढ़ापे को ग़नीमत जान।"

हज़रत अली (रज़ि०) का फ़रमान है, "आरंभिक उम्र में जो समय गँवाया है, अन्तिम उम्र में उसका तदारुक (क्षतिपूर्ति) कर ताकि अंजाम अच्छा हो।"

मौत एक अटल हक़ीक़त है और अटल होने के अलावा वह हर वक़्त क़रीब भी है। अगर इनसान अपनी स्वाभाविक उम्र पूरी करके बूढ़ा होकर भी दुनिया से जाए तो भी उसे उस वक़्त यही महसूस होगा कि मौत तो बहुत ही जल्द आ गई। अफ़सोस कि हम कैसे नादान थे कि उस वक़्त को भूले रहे। उस जान को शर्मिन्दगी से बचानेवाली चीज़ अगर है तो यही है कि उस अटल और क़रीबी हादसे को अकसर याद रखा जाए और उसकी तैयारी करते रहें। हज़रत अली (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि "जो व्यक्ति कल को अपनी मौत का दिन समझता है, मौत के आने से उसे कोई तकलीफ़ महसूस नहीं होती।"

और हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"मौत से बढ़कर कोई सच्ची और उम्मीद से बढ़कर कोई झूठी चीज़ नहीं।"

आप (सल्ल०) ही का यह कथन है—"तुम्हारे दिलों से अगर मौत का यक़ीन दूर न होता तो निरर्थक उम्मीदों का ग़रूर और फ़रेब तुमपर ग़ालिब न आता।"

मौत के यक़ीन से मुराद वह यक़ीन है जो दिलों में इस तरह नक़्श हो जाता है कि फिर आमाल उस यक़ीन के ख़िलाफ़ नहीं जा सकते। यही यक़ीन है, जो फ़िज़ूल उम्मीदों के फ़रेब को ग़ालिब नहीं आने देता। वरना मामूली यक़ीन तो हर इनसान को होता ही है मगर वे आमाल के सुधार के लिए काफ़ी नहीं होता।

हज़रत मुजद्दिद अलिफ़ सानी सरहिन्दी रह० फ़रमाते हैं कि "आख़िरत का काम आज कर, दुनिया का काम कल पर छोड़ दे।"

यह बात अपनी जगह सत्य है कि इनसान का दिल हर वक़्त एक जैसी हालत पर क़ायम नहीं रह सकता। बड़े-बड़े नेकी करनेवालों पर भी ऐसे क्षण आएँगे जब आख़िरत का ख़याल अगर उनके दिलों से बिलकुल निकला न होगा, लेकिन कुछ मद्धिम ज़रूर पड़ गया होगा। मगर यह मानवीय स्वभाव (फितरत) है और इससे कुछ हरज नहीं होता। जो कुछ अपेक्षित (मतलूब) है वह यह है कि आख़िरत के ख़याल को बार-बार ज़ेहन में ताज़ा किया जाता रहे और दिल को ज़्यादा देर तक ग़फ़लत में न पड़ा रहने दिया जाए।

हज़रत हंज़ला बिन रबीअ (रज़ि०) से रिवायत है कि एक दिन मुझे हज़रत

अबू बक्र (रज़ि०) मिले और उन्होंने पूछा कि हज़ला ! क्या हाल है ?

मैंने उनसे कहा कि हंज़ला तो मुनाफ़िक़ हो गया है। उन्होंने फ़रमाया कि पाक है ख़ुदा, यह तुम क्या कह रहे हो? मैंने कहा कि बात यह है कि जब हम अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास होते हैं और आप (सल्ल०) जहन्नम और जन्नत का बयान फ़रमाकर हमें नसीहत करते हैं तो हमारा यह हाल हो जाता है कि मानो कि हम जहन्नम और जन्नत को आँखों से देख रहे हैं। फिर जब हम आपकी मजलिस से निकलकर घर आते हैं तो बीवी, बच्चे, ज़मीन और खेती-बाड़ी के काम हमें अपनी तरफ़ मशग़ूल कर लेते हैं और फिर हम बहुत कुछ भूल जाते हैं।

अबू बक्र (रज़ि०) ने सुनकर फ़रमाया कि इस तरह की हालत तो हमें भी पेश आती है। इसके बाद मैं और अबू बक्र (रज़ि०) दोनों चल दिए और ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। मैंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! हंज़ला तो मुनाफ़िक़ हो गया।

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क्या बात है ?"

मैंने अर्ज़ किया कि हालत यह है कि जब हम आपके पास होते हैं और आप जहन्नम और जन्नत का बयान फ़रमाकर हमें नसीहत करते हैं तो ऐसा हो जाता है मानो कि जहन्नम और जन्नत हमारी आँखों के सामने है, फिर जब हम आपकी मजलिस से निकलकर घर आते हैं तो बीवी-बच्चे और खेती-बाड़ी के धंधे हमें अपने में मशग़ूल कर लेते हैं तो हम बहुत कुछ भूल जाते हैं।

यह सुनकर हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़सम है उस रब की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है ! अगर तुम्हारा हाल हमेशा वह रहे जो मेरे पास होता है और तुम हमेशा ज़िक्र में मशग़ूल रहो तो फ़रिश्ते तुम्हारे बिस्तरों और रास्तों पर तुमसे मुसाफ़ा किया करें, लेकिन ऐ हंज़ला ! (अल्लाह ने इसको लाज़िम नहीं किया, बल्कि) बस इतना ही काफ़ी है कि समय-समय पर यह होता रहे। यह बात आपने तीन बार दोहराई। (मुसलिम)

आख़िरत के हिसाब-किताब के बारे में हुज़ूर (सल्ल०) से जो विवरण मिलता है उनमें "आसान हिसाब" का भी ज़िक्र है।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने कुछ नमाज़ों में हुज़ूर (सल्ल०) को यह दुआ करते सुना—"ऐ अल्लाह ! मेरा हिसाब आसान कर।" मैंने पूछा कि आसान हिसाब का क्या मतलब? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि आसान हिसाब यह है कि बन्दे के आमालनामे (कर्म-पत्र) पर नज़र डाली जाए

और उसपर ध्यान न दिया जाए (यानी कुछ पूछताछ और जिरह न की जाए, बल्कि अल्लाह माफ़ कर दे)। बात यह है कि जिसके हिसाब में उस दिन जिरह की गई ऐ आइशा (रज़ि०) ! वह तबाह हो जाएगा। (मुसनद अहमद)

आख़िरत की तैयारी के बारे में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ने एक बड़ी ही दिल को छू लेनेवाली रिवायत बयान की है। बयान करते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "जो शख़्स डरता है वह शुरू रात में चल देता है और जो शुरू रात में चल देता है वह हिफ़ाज़त के साथ अपनी मंज़िल पर पहुँच जाता है। याद रखो अल्लाह का सौदा सस्ता नहीं, बहुत मँहगा और बहुत क़ीमती है। याद रखो अल्लाह का वह सौदा जन्नत है।" (तिरमिज़ी)

हज़रत उसमान (रज़ि०) ने आख़िरत के बारे में कहा—

- ताज्जुब है उसपर जो दुनिया को फ़ानी (नश्वर) जानता है और फिर उससे लगाव रखता है।
- ताज्जुब है उसपर जो तक़दीर को पहचानता है और फिर जानेवाली चीज़ का ग़म करता है।
- ताज्जुब है उसपर जो हिसाब को सच जानता है और फिर माल जमा करता है।
- ताज्जुब है उसपर जो जहन्नम को पूरी तरह सच जानता है और फिर गुनाह करता है।
- ताज्जुब है उसपर जो जन्नत पर ईमान रखता है और फिर दुनिया के साथ आराम पकड़ता है।
- ताज्जुब है उसपर जो शैतान को दुश्मन जानता है और फिर उसकी पैरवी करता है।
- ताज्जुब है उसपर जो अल्लाह को हक़ जानता है और फिर ग़ैरों का ज़िक्र करता है और उनपर भरोसा रखता है।

इनसानी ज़िन्दगी पर आख़िरत के अक़ीदे का असर

इनसान की फ़ितरत है कि वह उन चीज़ों को बेमानी समझती है जिनका कोई नतीजा न निकलता हो। इनसान को बुराइयों से रोकने और भलाइयों पर उभारने के लिए यह ज़रूरी था कि उसे दोनों के नतीजों से परिचित करा दिया जाता। आख़िरत का अक़ीदा इसी ज़िम्मेदारी को पूरा करता है।

यह अक़ीदा इनसान को साफ़-साफ़ बताता है कि अगर वह अपनी ज़िन्दगी अल्लाह का नाफ़रमान बंदा बनकर गुज़ारेगा तो आख़िरकार किन तकलीफ़ों से दोचार होगा और अगर फ़रमाँबरदार बंदा बनकर गुज़ारेगा तो उसके लिए कैसे-कैसे आँख की ठण्डक के सामान हैं।

इस किताब में आख़िरत के अक़ीदे का जितना विस्तार से बयान आ चुका है उससे यह आसानी से समझा जा सकता है कि अगर यह अक़ीदा अच्छी तरह दिल में बैठ जाए तो यह इनसानी सीरत (चरित्र) पर कितना गहरा और दूर तक असर डालता है। यहाँ ऐसे कुछ स्पष्ट गुणों का वर्णन किया जा रहा है, जो इस अक़ीदे पर जमने के कारण इनसान में लाज़िमी तौर पर पैदा हो जाते हैं। उनमें से पहला गुण ईमानदारी है।

ईमानदारी

व्यक्तिगत ज़िन्दगी हो या सामाजिक ज़िन्दगी, ईमानदारी इनसानी ज़िन्दगी को सुखी और शांतिमय बनाने में बहुत अहम भूमिका निभाती है। शिक्षक ईमानदार और सच्चे होंगे तो क़ौम की शिक्षा का स्तर ऊँचा हो जाएगा। डॉक्टर ईमानदार होंगे तो समाज में सेहत और तन्दुरुस्ती आम होगी, व्यापारी ईमानदार और सच्चे होंगे तो जन-सामान्य की ज़िन्दगी में आसानियाँ पैदा होंगी और थोड़ी आमदनियाँ भी अच्छे स्तर की ज़िन्दगी बना सकेंगी। इंजीनियर, ओवरसियर, मिस्त्री और कारीगर ईमानदार होंगे तो इमारतें मज़बूत बनेंगी, सड़कें मज़बूत और टिकाऊ साबित होंगी और नहरों की हालत ठीक रहेगी। जज और मजिस्ट्रेट ईमानदार होंगे तो इनसाफ़ ख़रीदना नहीं पड़ेगा कि ग़रीब सिर्फ़ इसलिए अपने हक़ से महरूम हो जाएँ कि वे इनसाफ़ की क़ीमत नहीं अदा कर सकते। अफ़सर और शासक-वर्ग ईमानदार होंगे तो देश की प्रतिरक्षा मज़बूत, बन्दोबस्त अच्छे क़िस्म का और ख़ुशहाली और बेफ़िक्री आम हो जाएगी और विदेशों में स्थापित किए हुए

दूतावास सच्चे होंगे तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की शोहरत, इज़्ज़त और साख बढ़ेगी और यह शोहरत, इज़्ज़त और साख देश की अनगिनत समस्याएँ हल करेगी और अनगिनत समस्याओं को पैदा होने से रोकेगी। मतलब यह कि ग़ौर करें तो पता चलता है कि समाज के लिए असीमित दुख सिर्फ़ बुरे आचरण और बेईमानी के कारण पैदा होते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "जिस क़ौम में ख़ियानत का बाज़ार गर्म हो जाएगा, अल्लाह उस क़ौम (समुदाय) के दिलों में दुश्मन का ख़ौफ़ और दहशत बिठा देगा और जिस समाज में बदकारी की बीमारी आम हो जाएगी, वह तबाह और विनष्ट होकर रहेगा, और जिस सोसायटी में नाप-तौल में बेईमानी का रिवाज हो जाएगा, वह ज़रूर अकाल और भुखमरी का शिकार होगी और जहाँ ग़लत फ़ैसले होंगे वहाँ निश्चित रूप से ख़ून-ख़राबा आम होगा और जो क़ौम भी धोखेबाज़ी और फ़रेब करेगी, उसपर हर हाल में दुश्मन का कब्ज़ा होकर रहेगा।" (मिशकात)

आख़िरत के अक़ीदे का केन्द्र बिन्दु चूँकि यही है कि एक दिन अल्लाह के सामने हाज़िर होकर अपने कर्मों का जवाब देना है इसलिए यह मुमकिन ही नहीं कि एक व्यक्ति सही मानों में आख़िरत की जज़ा (पुरस्कार) और सज़ा पर ईमान रखता हो और फिर ईमानदार न हो। अत: हम देखते हैं कि इस्लामी इतिहास की वह मशहूर और महबूब हस्तियाँ जिन्होंने अत्यन्त ईमानदारी से काम लेते हुए ऐसे रौशन नमूने छोड़े जो आज तक भूले-भटकों को राह पर लगाने का काम कर रहे हैं। ये सब लोग आख़िरत पर बड़ा पुख़्ता (ठोस) अक़ीदा रखते थे।

इन्हीं बरकतवाली हस्तियों में हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) भी थे। आपने अपनी शासन-व्यवस्था की बुनियाद ही आख़िरत के डर पर रखी थी और हालाँकि आपने मात्र कुछ साल ही हुकूमत की मगर उन चंद सालों में इतने सुधार हुए कि सल्तनत धार्मिक, नैतिक (अख़लाक़ी) और आर्थिक तीनों लिहाज़ से कहीं से कहीं जा पहुँची। आपके शासनकाल में आपकी दीनदारी से भरपूर और बुद्धिमत्तापूर्ण नीति के कारण अनेक इलाक़ों में लोग इस तेज़ी से मुसलमान हुए कि जिज़िया[1] की आमदनी में अचानक असाधारण कमी आ गई। इसपर किसी इलाक़े के अधिकारी ने शिकायत लिख भेजी कि जिज़िए में कमी आ जाने के कारण मुझे क़र्ज़ लेना पड़ा है। अधिकारी की इस शिकायत पर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) बहुत नाराज़ हुए और जवाब दिया कि अल्लाह के रसूल

1. इस्लामी हुकूमत में ग़ैर मुसलिमों से उनकी जान-माल की रक्षा हेतु लिए जानेवाला कर।

(सल्ल०) हादी[1] बनाकर भेजे गए थे, ज़िज़िया (कर) वुसूल करनेवाला अधिकारी बनाकर नहीं भेजे गए थे।

सुलतान नासिरुद्दीन महमूद देहली के तख़्त के मालिक होने के बावजूद अपने व्यक्तिगत ख़र्च के लिए ख़ज़ाने से एक पैसा भी नहीं लेते थे। वे अपने हाथ से क़ुरआन मजीद लिखकर रोज़ी कमाते थे। घर में कोई नौकरानी व दासी न थी और महारानी (मलिका) को अपने हाथ से खाना पकाना पड़ता था। एक दिन उन्होंने सुलतान से कहा कि मुझे खाना पकाने में तकलीफ़ होती है, क्या अच्छा हो कि आप मेरे लिए एक नौकरानी (दासी) रख दें। सुलतान ने जवाब दिया कि तुम्हारी ख़्वाहिश तो ठीक है, मगर क्या करूँ? मैं ख़ज़ाने का मालिक नहीं हूँ। इसका मालिक मेरी प्रजा है, इसमें से कुछ भी नहीं ले सकता। अपने हाथ से जो कुछ कमाता हूँ, उसमें इतनी गुंजाइश नहीं कि लौण्डी (नौकरानी) रख सकूँ। इसलिए सब्र करो, अल्लाह सब्र का बदला ज़रूर देता है।

शाम (सीरिया) देश को फ़तह करने के बाद एक बार हज़रत उमर (रज़ि०) ने अपना एक दूत क़ैसर के पास भेजा। आपकी बीवी उम्मे कुलसूम ने उस दूत के हाथ इत्र की शीशियाँ क़ैसर की बीवी के पास तोहफ़े में भेजीं। क़ैसर की बीवी ने शीशियों से इत्र निकाल लिया और उसे क़ीमती मोतियों से भरकर हज़रत उम्मे कुलसूम के पास भेज दिया। हज़रत उमर (रज़ि०) को इस घटना की ख़बर हुई तो इन मोतियों में से थोड़े से अपनी बीवी को देकर बाक़ी सरकारी ख़ज़ाने में जमा करा दिए और फ़रमाया, "बेशक इत्र तुम्हारा ही था; मगर जिस आदमी के हाथ तुमने इत्र भेजा वह सरकारी दूत था और उसका ख़र्च बैतुलमाल (राजकोश) से दिया गया था। इसलिए इन मोतियों पर सरकार का हक़ ज़्यादा और तुम्हारा कम है। ईमानदारी इसी को कहते हैं।"

इन बुज़ुर्ग हस्तियों के अमल का तरीक़ा ऐसा सिर्फ़ इसलिए था कि वे आख़िरत की पूछताछ से भयभीत रहते थे। उनमें इस पूछताछ और जवाबदेही के एहसास के कारण जो दियानतदारी और ईमानदारी पैदा हुई, वह उनकी प्रजा के लिए अल्लाह की रहमत साबित हुई।

इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) कपड़े के व्यापारी थे। उन्होंने अपने काम करनेवालों को यह हुक्म दे रखा था कि अगर किसी कपड़े में कोई ख़राबी या नुक़्स हो, तो ग्राहक को पहले वह नुक़्स बता दो। एक दिन किसी नौकर ने कोई नुक़्सवाला कपड़ा बेच दिया और ग्राहक को नुक़्स न बता सका। इमाम साहब ने ग्राहक को

---

1. सही रास्ता बतानेवाला। —अनुवादक

तलाश करवाया, लेकिन वह न मिला। आख़िर उन्होंने कपड़े की क़ीमत को ख़ैरात (दान) कर दिया, मगर ख़ुद इस्तेमाल न किया।

अबू ग़ालिब लुग़वी बहुत बड़े लेखक गुज़रे हैं। उन्होंने शब्दकोश-विज्ञान (फ़न्ने लुग़त) पर एक किताब लिखी जो बहुत जल्द चारों तरफ़ मशहूर हो गई। मर्सिया के ताक़तवर बादशाह अमीर मुजाहिद ने अबू ग़ालिब को एक हज़ार अशर्फ़ियाँ[1] भेजीं और फ़रमाइश की कि किताब के शुरू में यह लिख दिया जाए कि यह किताब अबू ग़ालिब ने अमीर मुजाहिद के लिए लिखी। अबू ग़ालिब ने ये अशर्फ़ियाँ वापस भेज दीं और कहला भेजा कि मैंने यह किताब न तुम्हारे कहने पर लिखी, न तुम्हारे वास्ते लिखी। मैंने तो इसे लोगों के फ़ायदे के लिए लिखा है। मैं इन अशर्फ़ियों की ख़ातिर न अपने आपको धोखा देना चाहता हूँ, न लोगों को।

बहादुरी

हज़रत जाबिर (रज़ि०) बयान करते हैं कि उहुद की लड़ाई में एक व्यक्ति (सहाबी) ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा कि बताइए, अगर मैं क़त्ल हो जाऊँ तो किस जगह होऊँगा। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जन्नत में।" उसके हाथ में कुछ खजूरें थीं। उसने उन खजूरों को फेंक दिया और जिहाद में लग गया, यहाँ तक कि शहीद हो गया। (बुख़ारी)

मुसलमानों की आरंभिक शताब्दियों के हालात में ऐसी अनगिनत घटनाएँ मिलती हैं, जिनसे मालूम होता है कि उन लोगों को मौत इतनी प्रिय हो गई थी जितनी दूसरे लोगों को ज़िन्दगी। वे तो सिर्फ़ अपनी आख़िरत की बेहतरी के ख़्वाहिशमन्द थे। चुनांचे जिस वक़्त वे महसूस करते थे कि आख़िरत की बेहतरी अब मौत के मुँह में जानेवाली है, तो वे बिना झिझक मौत के मुँह में जा घुसते थे। उनकी बहादुरी और हिम्मत का कोई ठिकाना न था। बीसियों ने सैकड़ों के, सैकड़ों ने हज़ारों के और हज़ारों ने लाखों के मुँह फेर दिए। मुसलमानों और ईरानियों की जंगों के दौरान एक बार ईरानी मुसलमानों की बहादुरी से इस क़द्र भयभीत हुए कि चीख़ते हुए भागे कि :

"देवाँ अमदन्द" यानी देव (प्रेत) आ गए।

वे प्रेत तो नहीं थे आम इनसान ही थे, मगर अल्लाह पर मज़बूत ईमान और आख़िरत के अक़ीदे की पुख़्तगी ने उनमें वह बेमिसाल बहादुरी और साबित

---

1. सोने के सिक्के।

क़दमी (जमाव) पैदा कर दी थी कि दुनियापरस्त ईरानियों को वे प्रेत ही लगते थे। उन ख़ुदापरस्तों को पक्का यक़ीन हासिल हो चुका था कि मौत का वक़्त और मौत की जगह दोनों नियत हो चुके हैं। और अब उनमें कोई तबदीली नहीं आ सकती। जंग के मैदान में जाने से मौत अपने निश्चित समय से पहले नहीं आ जाएगी और घर बैठे रहने से उसे टाला नहीं जा सकता। वे इस आयत पर दिल से ईमान लाए हुए थे :

"(ऐ नबी ! उनसे कह दो) कि अगर तुम अपने घरों में भी होते तो जिनके लिए क़त्ल किया जाना लिखा जा चुका होता वे (स्वयं) अपने क़त्ल की जगहों की ओर निकल आते।" (क़ुरआन, 3 : 154)

अतः यह ईमान न उन्हें बुज़दिल होने देता था और न भागने का ख़याल दिल में आने देता था। जिस मुजाहिद के दिल में पूरा यक़ीन हो कि शहादत की मौत के बाद की ज़िन्दगी उससे पहले की ज़िन्दगी की तुलना में ज़्यादा मधुर और श्रेष्ठ होगी, वह मौत को ज़िन्दगी पर क्यों न प्राथमिकता देगा। पहले दौर के मुसलमान की बेमिसाल बहादुरी का यही रहस्य (राज़) था।

यरमूक की जंग इस्लामी जिहाद के इतिहास में बहुत नुमायाँ मक़ाम रखती है। एक तरफ़ मुसलमान थे और दूसरी तरफ़ ईसाई रूमी। रूमी यरमूक की जंग से पहले की शिकस्तों (पराजयों) के कारण बहुत ज़्यादा जोश में आए हुए थे। उनकी फ़ौज के तीस हज़ार लड़ाकुओं ने तो फ़तह (विजय) या मौत की क़सम खाकर पाँवों में बेड़ियाँ पहन ली थीं कि भागने का ख़याल भी न आए। हज़ारों पादरी और बिशप[1] हाथों में सलीबें (क्रास) लिए आगे-आगे थे और हज़रत मसीह (अलै०) का नाम ले-लेकर ईसाइयों को जोश दिला रहे थे। मगर सारे साज़ व सामान मुसलमानों के ईमानी जोश और अनुपम वीरता के सामने बेकार साबित हुए। आख़िरकार ईसाइयों के क़दम उखड़ गए। एक लाख के क़रीब ईसाई मारे गए। हज़रत उमर (रज़ि०) को जब इस फ़तह की ख़बर मिली तो अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए सजदे में गिर गए। उस मिसाली दौर में कामयाबियों का शुक्रिया अदा करने और ख़ुशी को प्रकट करने का यही इस्लामी तरीक़ा था। खेल-कूद और दुराचार के प्रदर्शनों से कामयाबियों की ख़ुशियाँ नहीं मनाई जाती थीं।

प्यारे रसूल (सल्ल०) के मुबारक ज़माने की पहली नियमित जंग 'बद्र' की जंग थी। इस मौक़े पर एक सहाबी साद बिन ख़ुसैमा (रज़ि०) के बाप ने अपने

---

1. बड़ा पादरी या धर्माध्यक्ष

बेटे से फ़रमाया कि तुम घर पर रहो और मैं मैदाने जिहाद में निकलता हूँ। मगर साद (रज़ि०) ज़िद करते थे कि आप घर पर रहें और मैं मैदाने जिहाद की तरफ़ जाता हूँ। आख़िर नौबत क़ुरआ (दोनों के नाम की परची) डालने पर पहुँची। ख़ुदा की क़ुदरत कि क़रआ बेटे के नाम निकला। हज़रत साद (रज़ि०) ने बाप से अर्ज़ किया कि अगर कोई और मामला होता तो मैं अपनी जान पर आपको तर्जीह देता लेकिन यह तो जन्नत हासिल करने का मामला है। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला मुझे शहादत अता करेगा।

हज़रत साद (रज़ि०) उन बारह ख़ुशनसीब में से हैं, जिन्होंने बद्र की लड़ाई में शहादत पाई। बद्र की लड़ाई ही का वाक़िआ है कि मुशरिकों की फ़ौज हमला करते हुए आगे बढ़ी तो हुज़ूर (सल्ल०) ने मुसलमानों को संबोधित करते हुए ऊँची आवाज़ में फ़रमाया : "ऐ लोगो ! उस जन्नत को हासिल करने के लिए आगे बढ़ो जिसकी चौड़ाई सारे जगत (कायनात) के बराबर है।" हज़रत उमैर बिन हम्माम अनसारी (रज़ि०) यह सुनकर बोले : "ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या जन्नत की चौड़ाई कायनात के बराबर है ?" हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया : "हाँ !" उमैर (रज़ि०) यह सुनकर बोले : "वाह, वाह !"

हुज़ूर (सल्ल०) ने उनके "वाह, वाह" कहने की वजह पूछी तो उन्होंने बताया कि मैं इस उम्मीद पर यह लफ़्ज़ कह रहा हूँ कि शायद मैं भी जन्नतवालों में से हो जाऊँ। हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "तुम यक़ीनन जन्नतवालों में से हो।" इसपर हज़रत उमैर (रज़ि०) ने थैले में से खजूरें निकालकर खाना शुरू कर दीं, लेकिन तुरन्त ही यह कहकर खजूरें दूर फेंक दीं कि अगर मैं खजूरों के खाने तक ज़िन्दा रहूँ तो दुनिया में यह एक लम्बी ज़िन्दगी होगी।

फिर दुश्मनों पर टूट पड़े और लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

हज़रत अनस बिन नज़र (रज़ि०) किसी मजबूरी के कारण बद्र की लड़ाई में शामिल न हो सके थे। उहुद में आपको शामिल होने का मौक़ा मिला। उहुद में जब मुसलमानों की एक ग़लती के कारण जीत, हार में बदल गई, मुसलमानों की कतारें टूट गईं, हुज़ूर ज़ख़्मी हो गए और मुनाफ़िक़ों ने आप (सल्ल०) के शहीद होने की झूठी अफ़वाह फैला दी, तो हज़रत अनस (रज़ि०) जंग के मैदान में इस तरह बोले—

"ऐ अल्लाह ! मैं मुसलमानों की ग़लती और कमज़ोरी की वजह से माफ़ी चाहता हूँ और मुशरिकों के बुरे इरादों से नफ़रत ज़ाहिर करता हूँ।"

यह कहकर जंग के मैदान में कूद पड़े। दूसरी तरफ़ से साद बिन मुआज़

(रज़ि०) आ रहे थे। हज़रत अनस (रज़ि०) ने उनसे कहा, "ऐ साद ! आओ जन्नत में चलें। ख़ुदा की क़सम मुझे उहुद पहाड़ के दर्रे से जन्नत की ख़ुशबू आ रही है।" यह कहकर इस ज़ोर का हमला किया कि मुशरिकों की क़तारें उलट दीं, और बहादुरी की दाद देते हुए शहीद हो गए। लड़ाई के बाद जब जंग के मैदान से उनका जिस्म उठाया गया तो उसपर तीरों, तलवारों और नेज़ों के अस्सी से ज़्यादा ज़ख़्म पाए गए।

इन पाकबाज़ और जान पर खेल जानेवालों की निगाह में मौत कोई चीज़ ही नहीं थी। अरब के कुछ काफ़िरों ने एक बार यह चाल चली कि मुसलमान बनकर हुज़ूर (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और माँग की कि इस्लाम सिखानेवालों की एक जमाअत हमारे साथ भेजी जाए जो हमें इस्लाम के तरीक़ों को सिखाए। हुज़ूर (सल्ल०) ने अहले सुफ़्फ़ा (हमेशा रसूल के साथ रहकर तालीम पानेवाले) को उनके साथ भेज दिया। जंगल में जाकर उन दग़ाबाज़ों ने मुसलमानों की इस जमाअत को बड़ी बेदर्दी से क़त्ल कर डाला। एक सहाबी हराम बिन मलहान (रज़ि०) को जब पीछे से नेज़ा घोंपा गया तो उन्होंने गिरते हुए कहा, "काबा के रब की क़सम ! मैं तो कामयाब हो गया।"

यह बहादुरी और हिम्मत सिर्फ़ तन्दुरुस्त और ठीक-ठाक अंग रखनेवाले लोगों ही में नहीं पाई जाती थी, बल्कि माज़ूर और अपंग लोग भी शहादत पाने के शौक़ से परिपूर्ण होते थे।

हज़रत अम्र बिन जमूह (रज़ि०) के पाँव में चोट आ गई थी, जिसके कारण वे लँगड़ाकर चलते थे। इस माज़ूरी के कारण उनपर जिहाद अनिवार्य (फ़र्ज़) नहीं था। इसी कारण बद्र की लड़ाई में भी उन्हें साथ नहीं ले जाया गया था। उहुद की लड़ाई का वक़्त आया तो फिर उनके बेटों ने उन्हें रोका; लेकिन वे न माने। मामला हुज़ूर (सल्ल०) तक पहुँचा। आप (सल्ल०) ने भी समझाया कि तुम माज़ूर हो, जिहाद तुमपर फ़र्ज़ नहीं।

मगर उनके सिर पर शहादत की धुन सवार थी। निवेदन किया, "ऐ अल्लाह के रसूल ! ये लड़के मुझे आपके साथ चलने से रोक रहे हैं, लेकिन ख़ुदा की क़सम ! मुझे उम्मीद है कि मैं इसी लँगड़े पाँव से घिसटता हुआ जन्नत में पहुँच जाऊँगा। हुज़ूर (सल्ल०) ने उनका यह जज़्बा देखकर ज़्यादा मना करना मुनासिब न समझा। उहुद की लड़ाई में जब मुसलमान तितर-बितर हो गए तो अम्र बिन जमूह (रज़ि०) ने अपने बेटे को साथ लेकर मुशरिकों पर एक ज़ोरदार हमला किया और दोनों बाप-बेटों ने शहादत हासिल कर ली।

उनकी लाश देखकर हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला अपने

बन्दों की क़सम पूरी कर देता है। अम्र बिन जमूह (रज़ि०) उन्हीं में से हैं और मैं उन्हें उसी लँगड़े पाँव के साथ जन्नत में जाते देख रहा हूँ।"

हज़रत अम्र बिन जमूह (रज़ि०) ने मैदाने जिहाद (युद्ध-क्षेत्र) का रुख़ करते हुए दुआ की थी कि "ऐ ख़ुदा ! मुझे शहादत नसीब कर और अब ज़िन्दा घर वापस न लाना।"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ि०) का मामला इससे भी ज़्यादा हैरतअंगेज़ है। आप नेत्रहीन (नाबीना) थे। हुज़ूर (सल्ल०) जब किसी ज़रूरत के कारण मदीने से बाहर जाते थे तो मसजिदे नबवी का इमाम उन्हीं को मुक़र्रर करके जाया करते थे।

माज़ूरी के बावजूद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ि०) के शहादत के शौक़ का यह हाल था कि कई बार जंगों में शरीक हुए। कहा करते थे कि—

"और कुछ नहीं कर सकता हूँ तो क्या इस्लामी फ़ौज का झण्डा थामकर खड़ा भी नहीं रह सकता हूँ। अलम (झंडा) मेरे हाथ में देकर दोनों क़तारों के बीच मुझे खड़ा कर दो। इंशाअल्लाह भागूँगा हरगिज़ नहीं।"

अतः ख़िलाफ़ते राशिदा के दौर की मशहूर जंग क़ादसिया में ज़िरह-बकतर पहने इस्लामी फ़ौज का झण्डा हाथ में लेकर खड़े थे कि उसी हालत में शहादत नसीब हुई।

सब्र और जमाव

आख़िरत का अक़ीदा जंगी हौसले के अलावा इनसान को वह सब्र और मज़बूती भी प्रदान करता है, जिससे वह जीवन की आम तकलीफ़ें, महरूमियों और परेशानियों को हँसते हुए सहन कर लेता है। अल्लाह और आख़िरत के दिन पर सही मानों में ईमान लानेवाला इनसान इन आज़माइशों और तकलीफ़ों को सुकून और वक़ार के साथ बर्दाश्त कर लेगा जो एक आम दुनियापरस्त इनसान को विलाप करने और होशो हवास खो देने पर मजबूर कर दें।

आख़िरत की तैयारी करने की भावना रखनेवाले इनसान के लिए जानलेवा मुसीबतें इसलिए हलकी हो जाती हैं कि एक तरफ़ तो उसे ज़िन्दगी के संक्षिप्त और अस्थायी होने का दिल से यक़ीन होता है और दूसरे वह जानता है कि अल्लाह ने सब्र का बदला कितना ज़्यादा रखा है। जब ज़िन्दगी स्वयं अत्यन्त अस्थायी चीज़ है तो फिर उसके अन्दर आनेवाली मुसीबत तो उससे भी ज़्यादा अस्थायी हुई। अब अगर इस अस्थायी परिस्थिति में सब्र और बरदाश्त से काम लेने का इनाम इतना बड़ा हो कि ख़ुद अल्लाह फ़रमाए कि "निस्संदेह अल्लाह

सब्र करनेवालों के साथ है।" और प्यारे रसूल (सल्ल०) का स्पष्ट कथन हो कि "जिस मुसलमान को भी कोई दिली तकलीफ़, शारीरिक तकलीफ़ और कोई बीमारी व रंज-ग़म और दुख पहुँचता है; यहाँ तक कि अगर उसे एक काँटा भी चुभ जाता है (और वह इसपर सब्र करता है) तो अल्लाह उसके गुनाहों को माफ़ कर देता है।" (बुख़ारी, मुसलिम)

तो फिर यह कितने नुक़सान का सौदा होगा कि इनसान रोना-पीटना और शिकवे-शिकायत करके अपने बड़े पुरस्कार और रुतबे से अपने आपको वंचित कर ले।

आख़िरत की भावना रखनेवाले इनसानों के दिल व दिमाग़ में यही सच्चाई घर कर चुकी होती है और इसकी यह छाप बहुत ही परेशानी की हालत में भी उन्हें सँभाले रखती है।

यह एक सच्चाई है कि बड़े से बड़े दुख के समय भी अगर दिल में यह ख़याल पैदा हो जाए कि तकलीफ़ तो अभी ख़त्म हुआ चाहती है तो फिर हिम्मत बँध जाती है और उसे बरदाश्त करने की ताक़त बढ़ जाती है और फिर अगर साथ ही यह भी पूरा यक़ीन हो कि इस तकलीफ़ का अंजाम अत्यन्त मधुर होगा तो फिर उसे बरदाश्त करना और भी अधिक आसान हो जाता है। नीचे की आयत और हदीसें सब्र की अहमियत और सब्र करनेवाले (धैर्यवान) को प्राप्त होनेवाले पुरस्कार को विस्तार के साथ बयान करती हैं—

> "हम ज़रूर तुम्हें ख़ौफ़, भूख, मालों, जानों और फलों की कमी में डालकर तुम्हारी आज़माइश करेंगे और उनको ख़ुशख़बरी दे दीजिए जो (मुसीबत पड़ने पर) सब्र करते हैं और कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की ओर हमें पलटकर जाना है। उनपर उनके पालनहार की ओर से बड़ी अनुकंपाएँ होंगी और उसकी कृपा होगी, और ऐसे ही लोग हिदायत की राह पर हैं।" (क़ुरआन, 2 : 155-157)

हुज़ूर (सल्ल०) का इरशाद है कि मोमिन का मामला भी ख़ूब ही है कि वह जिस हाल में भी होता है ख़ैर ही समेटता है। अगर वह दुख, बीमारी और तंगदस्ती से दोचार होता है तो सकून के साथ बरदाश्त करता है और यह आज़माइश उसके हक़ में भलाई साबित होती है और अगर उसको ख़ुशी और ख़ुशहाली नसीब होती है तो अल्लाह का शुक्र अदा करता है और यह ख़ुशहाली उसके लिए भलाई का सबब बनती है। (मुसलिम)

हज़रत अनस (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने

फ़रमाया कि जितनी सख़्त आज़माइश और मुसीबत होती है उतना ही बड़ा उसका सिला (बदला) होता है, और अल्लाह जब किसी गिरोह से मुहब्बत करता है तो उनको (और अधिक निखारने और सोना बनाने के लिए) आज़माइश में डाल देता है। अतः जो लोग अल्लाह की मरज़ी पर राज़ी रहें तो अल्लाह भी उनसे राज़ी होता है और जो इस आज़माइश में अल्लाह से नाराज़ हों तो अल्लाह भी उनसे नाराज़ हो जाता है। (तिरमिज़ी)

हज़रत अबू मूसा अशअरी बयान करते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब किसी बन्दे का कोई बच्चा मर जाता है तो अल्लाह अपने फ़रिश्तों से पूछता है कि क्या तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की जान क़ब्ज़ कर ली? वे कहते हैं : 'जी हाँ।' फिर वह उनसे पूछता है कि 'तुमने उसके जिगर के टुकड़े की जान निकाल ली?' वे कहते हैं : 'जी हाँ।' फिर वह पूछता है : 'तो मेरे बन्दे ने क्या कहा?' वे कहते हैं कि इस मुसीबत में उसने तेरी हम्द की और 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'[1] पढ़ा। तो ख़ुदा उनसे फ़रमाता है : 'मेरे उस बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम 'बैतुल हम्द' (अर्थात शुक्र का घर) रखो।
(तिरमिज़ी)

हज़रत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का फ़रमान है कि "ऐ आदम के बेटे ! अगर तूने शुरू ज़माने में [2] सब्र किया और मेरी रिज़ा व सवाब की नीयत की तो मैं जन्नत से कम और उसके अलावा कोई और सवाब तुझे दिया जाए उसपर राज़ी नहीं होऊँगा।" (इब्ने माजा)

हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मोमिन को शारीरिक तकलीफ़ या बीमारी या किसी और वजह से जो भी दुख पहुँचता है तो अल्लाह उसके कारण उसके गुनाहों को इस तरह झाड़ देता है जैसे पेड़ अपने पत्तों को झाड़ देता है।"
(बुख़ारी, मुसलिम)

ये वे शिक्षाएँ हैं जिनमें यह साफ़ तौर पर बताया गया है कि इस दुनिया की ज़िन्दगी में सब्र व धैर्य आख़िरत की ज़िन्दगी को किस तरह सँवार देते हैं। अतः हम देखते हैं कि आख़िरत के अक़ीदे पर सही मानों में ईमान लानेवाले और अपनी आख़िरत की ज़िन्दगी को अधिक से अधिक अच्छी बनाने की लालसा रखनेवाले इनसानों ने ज़िन्दगी की बड़ी-बड़ी हिला देनेवाली तकलीफ़ें किस धैर्य

---

1. अर्थात हम अल्लाह ही के हैं और उसी की तरफ़ लौटकर जानेवाले हैं।
2. यानी किसी सदमे के पहुँचने के आरंभिक ज़माने में।

के साथ बरदाश्त कर लीं।

एक बार हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर (रज़ि०) का बेटा एक घोड़े पर सवार हुआ। घोड़े ने उसे नीचे गिरा दिया और वह मर गया। इसके बाद ही हज़रत उरवा के पैर में एक अत्यन्त ज़हरीला फोड़ा निकला। डॉक्टरों ने कहा कि पैर काट देना चाहिए नहीं तो ज़हर सारे शरीर में फैलकर मौत का कारण बनेगा। हज़रत उरवा ने अपना पैर कटवाने के लिए आगे बढ़ाया। जब पैर कटने लगा तो कुछ आदमी सँभालने के लिए आए। हज़रत उरवा ने पूछा, "तुम्हारा क्या काम है?" उन्होंने जवाब दिया कि तकलीफ़ की शिद्दत में सब्र का दामन हाथ से छूट जाता है, इसलिए हम आपको सँभालने के लिए आए हैं।

हज़रत उरवा (रज़ि०) ने कहा : "इनशाअल्लाह, मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत नहीं होगी।"

डॉक्टरों ने औज़ारों से आपका पैर काटा। आप पूरे हिम्मत और इतमीनान के साथ बैठे रहे और ज़बान अल्लाह की याद और गुणगान में व्यस्त रही। जब ख़ून बंद करने के लिए ज़ख़्म को दाग़ा गया तो दर्द की ज़्यादती से बेहोश हो गए। जब होश में आए तो कटा हुआ पैर मँगवाकर देखा और उसे उलट-पलटकर फ़रमाया, "उस ज़ात (ऐश्वर्य) की क़सम जिसने तुझसे मेरा बोझ उठवाया! उसे ख़ूब मालूम है कि मैं तेरे साथ किसी हराम रास्ते पर नहीं चला।"

बेटे की मौत और पैर के कटने पर भी हज़रत उरवा (रज़ि०) सब्र व शुक्र करते और कहते, "अल्लाह तेरा शुक्र है कि मेरे चार हाथ पैर में से तूने एक ही लिया और तीन बाक़ी रखे और चार बेटों में से एक ही लिया और तीन बाक़ी रखे। अगर तूने कुछ लिया है तो बहुत कुछ बाक़ी रखा है। अगर कुछ मुसीबत में डाला है तो बहुत दिन आराम में भी रख चुका है।"

लाहौर की 'जामिआ अश-रफ़िया' के संस्थापक मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहब की टाँग में कोई ऐसी तकलीफ़ हो गई कि टाँग काटने का फ़ैसला हुआ। आपने भी अपनी टाँग होश में कटवाई। आपरेशन करनेवाले सर्जन भी परेशान थे कि होश में इतना बड़ा आपरेशन कैसे होगा! मगर मुफ़्ती साहब ने 'उफ़' भी न की। इस हैरतअंगेज़ सब्र व ज़ब्त की वजह उन्होंने ख़ुद बताई कि इस तकलीफ़ के वक़्त वह उस तकलीफ़ के अज्र को इस तरह अपने सामने साकार किए रहे कि दर्द के कारण बेक़रार होने की नौबत ही न आई।

हज़रत अबू तलहा (रज़ि०) का लड़का बीमार था। वह बच्चे को उसी हाल में छोड़कर अपने काम पर चले गए। उनके जाने के बाद बच्चे का इंतिक़ाल हो

गया। उनकी बीवी ने लोगों से कह दिया कि अबू तलहा (रज़ि०) को बच्चे की मौत की ख़बर न होने पाए। शाम को वे अपने काम से वापस आए तो बच्चे का हाल पूछा। बोलीं : "पहले से ज़्यादा सकून में है।" यह कहकर अबू तलहा (रज़ि०) के लिए खाना लाईं। वे इतमीनान से खाना खाकर लेट गए। कुछ देर बाद उस नेक बीवी ने निहायत हकीमाना अन्दाज़ में पूछा कि अगर किसी को कोई चीज़ उधार दे दे और फिर वापस माँगे, तो क्या उसको यह अधिकार प्राप्त है कि चीज़ को रोक ले? हज़रत अबू तलहा (रज़ि०) ने कहा : "भला यह अधिकार कैसे प्राप्त हो सकता है?" निहायत धैर्यवान बीवी ने कहा कि अच्छा फिर अपने बेटे पर भी सब्र कर लीजिए।

जब हुज़ूर (सल्ल०) को इस औरत के इस बेमिसाल सब्र की ख़बर मिली तो उन दोनों मियाँ-बीवी के हक़ में दुआ फ़रमाई।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) की माँ हज़रत असमा (रज़ि०) सख़्त बीमार पड़ीं। वह उनकी इयादत के लिए आए। माँ ने बेटे से कहा : "बेटे दिल में यह आरज़ू है कि दो बातों में से एक जब तक न देख लूँ, अल्लाह मुझे ज़िन्दा रखे—या तो तू मैदाने जंग में शहीद हो जाए और मैं तेरी शहादत की ख़बर सुनकर सब्र का सुअवसर प्राप्त करूँ या तू फ़तह पा जाए और मैं तुझे फ़ातेह (विजयी) देखकर अपनी आँखें ठण्डी करूँ।"

अल्लाह तआला की क़ुदरत कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) ने माँ की ज़िन्दगी ही में शहादत हासिल कर ली। शहादत के बाद हज्जाज ने उनकी लाश को सूली पर लटका दिया। हज़रत असमा (रज़ि०) उस वक़्त बहुत कमज़ोर हो चुकी थीं, मगर वहाँ तशरीफ़ लाईं जहाँ उनके जिगर के टुकड़े की लाश लटक रही थी, बड़े सब्र और वक़ार के साथ बोलीं, "क्या इस सवार के लिए अभी वक़्त नहीं आया कि घोड़े की पीठ पर से नीचे उतरे?"

जब हुज़ूर (सल्ल०) उहुद की जंग से वापस तशरीफ़ लाए तो औरतें अपने-अपने संबंधियों और रिश्तेदारों का हाल मालूम करने आईं। जब हिमना बिन्त जहश आईं तो हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अपने भाई अब्दुल्लाह पर सब्र करो। उन्होंने सब्र के साथ 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ा और मग़फ़िरत की दुआ की। फिर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अपने मामूँ हम्ज़ा पर भी सब्र करो। उन्होंने 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ा और मग़फ़िरत की दुआ की।

ग़म और तकलीफ़ के वक़्त ग़म का इज़हार करना एक फ़ितरी (स्वाभाविक) बात है। अतः आँसुओं पर कोई पाबन्दी नहीं, अलबत्ता इस बात का पूरा ख़याल

रखना चाहिए कि सब्र व शुक्र का दामन हाथ से न छूटने पाए। ग़म की ज़्यादती के कारण गिरेबान फाड़ना, गालों पर तमाँचे मारना, सिर और सीना पीटना, विलाप करना और अल्लाह और तक़दीर के शिकवे करना—ये सब ऐसी बातें हैं जो एक ईमानवाले की शान के ख़िलाफ़ हैं।

हुज़ूर (सल्ल०) के बेटे आप (सल्ल०) की गोद में थे और आख़िरी साँस ले रहे थे। आप (सल्ल०) की आँखों से आँसू टपकने लगे। आपने फ़रमाया, "ऐ इबराहीम! हम तेरी जुदाई से दुखी हैं, मगर ज़बान से वही निकलेगा जो परवरदिगार की मरज़ी के मुताबिक़ होगा।" (मुसलिम)

हज़रत उसामा (रज़ि०) बिन ज़ैद से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्ल०) की बेटी हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) ने आपके पास कहला भेजा कि मेरे बच्चे का आख़िरी दम है और चल-चलाव का समय है। अतः इस वक़्त आप तशरीफ़ ले आएँ। आपने इसके जवाब में सलाम कहला भेजा और संदेश दिया कि बेटी! अल्लाह तआला किसी से जो कुछ ले वह भी उसी का है और किसी को जो कुछ भी दे वह भी उसी का है। और हर चीज़ के लिए उसकी तरफ़ से एक मुद्दत और वक़्त मुक़र्रर है। इसलिए चाहिए कि तुम सब्र करो और अल्लाह से इस सदमे के अज्र और सवाब की चाहनेवाली बनो। बेटी ने भी आप (सल्ल०) के पास पैग़ाम भेजा और क़सम दी कि इस समय अवश्य ही तशरीफ़ ले आएँ।

अतः आप (सल्ल०) उठकर चल दिए और आपके साथियों (सहाबा) में से साद बिन उबादा, मआज़ बिन जबल, उबैय बिन काब, ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) और कुछ और सहाबी भी आपके साथ हो लिए। वहाँ पहुँचने के बाद वह बच्चा उठाकर आपकी गोद में दिया गया। उसका साँस उखड़ रहा था। उसके इस हाल को देखकर आपकी आँखों से आँसू बहने लगे। हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि०) को ताज्जुब हुआ कि आप रो रहे हैं। शायद वे समझते थे कि ग़म के वक़्त रोना भी सही नहीं। उन्होंने हैरानी से कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! यह क्या?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "यह रहमत (करुणा) के उस जज़्बे का असर है जो अल्लाह ने अपने बन्दों के दिल में रख दिया है और अल्लाह की रहमत उन्हीं बन्दों पर होगी, जिनके दिलों में रहमत का यह जज़्बा होगा।" (बुख़ारी, मुसलिम)

इन कुछ आख़िरी हदीसों से स्पष्ट हो जाता है कि सुकून और वक़ार के साथ ग़म का प्रकट कर लेना और आँसू बहाना बेसब्री नहीं, बल्कि ग़म व तकलीफ़ की हालत में ज़बान और जिस्म के साथ जो फ़िज़ूल और शिकवा भरी हरकतें की जाती हैं, वह बेसब्री है। अतः आख़िरत की चाह की भावना रखनेवाले लोग बेहिस और पत्थर दिल नहीं हो जाते कि उनपर अपने और दूसरे लोगों के दुखों

का कोई असर ही न हो। बल्कि इनसान होने के नाते रंज व ग़म से अनिवार्य रूप से प्रभावित होते हैं, लेकिन उनके ग़म में न अतिशयोक्ति होती है और न सीमा का उल्लंघन होता है और न वे मातम मनाने के वे तरीक़े अपनाते हैं जो एक धैर्यवान और शुक्रगुज़ार मोमिन की शान से गिरे हुए हों।—इसकी वजह वही है जो बयान हो चुकी कि वे बुद्धिजीवी अच्छी तरह जानते हैं कि दुख एक अस्थायी चीज़ है और सब्र व धैर्य का फल बड़ा ही मीठा है।

उदारता और विशाल हृदयता

सैर व तफ़रीह करनेवालों का एक गिरोह 'सवात' की घाटी में फिर रहा था। गिरोह का हर व्यक्ति 'सवात' के मनोहर दृश्य (मंज़र) से अत्यन्त प्रभावित हो रहा था सिवाय एक व्यक्ति के। इसका कारण यह नहीं कि उस एक व्यक्ति को वह आकर्षक नहीं लग रहे थे। वह यक़ीनन उनकी ख़ूबसूरती को महसूस कर रहा था, मगर दूसरे लोगों की तरह उसे वे दृश्य 'हद से ज़्यादा' ख़ूबसूरत नहीं लग रहे थे। यही नहीं बल्कि जब दूसरे लोग ख़ुशी से बेक़रार होकर वाह ! वाह ! करते और एक-दूसरे को पुकार-पुकारकर किसी गिरते पानी या लहलहाती हरी घास की तरफ़ तवज्जोह दिलाते जिसे दूसरे बहरहाल देख ही रहे होते थे, तो वह व्यक्ति जी ही जी में हैरान हो-हो जाता कि दृश्य तो कोई संदेह नहीं कि आकर्षक हैं, मगर इतना आपे से बाहर होनेवाली बात आख़िर कौन-सी है।

कुछ समय गुज़रने के बाद वह व्यक्ति उस भरे मजमे में अपने आपको बड़ा ही अजनबी-सा महसूस करने लगा। उसे शर्म-सी आने लगी कि साथी कहेंगे कि वह ऐसा बदशौक़ है कि प्रकृति के रोमांचकारी दृश्य उसपर अप्रभावी हैं। वह दूसरों के साथ सहयोग करने के लिए ऊपरी दिल से उसी तरह "वाह ! वाह !" करने लगा, जिस तरह दूसरे लोग कर रहे थे। मगर यह "वाह ! वाह !" ज़्यादा तो ज़बान से ही निकल रही थी, दिल से नहीं।

उसे अपने आप पर ताज्जुब हो रहा था कि वह आख़िर साथियों की अधीरमय प्रशंसा-भावना का हिस्सेदार क्यों नहीं बन रहा। मगर घर वापस पहुँचने से पहले उसे इस रहस्य का बोध हो गया। वह सवात की घाटी के मनमोहक दृश्य से बहुत ज़्यादा इसलिए प्रभावित न हो सका कि वह कश्मीर की घाटी में रह चुका था और वहाँ के दृश्यों को देख चुका था। बस सिर्फ़ यही कारण था कि सवात की ख़ूबसूरती ने उसपर कोई असाधारण प्रभाव न डाला।

चूँकि आँख उस दृश्य की अपेक्षा एक अच्छे दृश्य का अवलोकन कर चुकी थी तो वह फिर उन दृश्यों से जो पहले से कम दर्जे के हों, आख़िर इतना अधिक

प्रभावित कैसे हो सकती है कि आपे से बाहर होती चली जाए।

इसी से उन लोगों की मानसिकता के बारे में सोच सकते हैं, जो आख़िरत के अक़ीदे पर दिल से ईमान लाए होते हैं। उनकी कल्पना की आँख जो स्थायी सुकूनवाली ख़ूबसूरत भूमि देख चुकी होती है उसकी तुलना में वे उन तुच्छ और घटिया साज़ो सामान से कैसे प्रभावित हो सकते हैं जो न सिर्फ़ यह कि अत्यन्त तुच्छ हैं, बल्कि बहुत जल्द ख़त्म हो जानेवाले भी हैं।

यह रिश्वत खाना, यह नाजाइज़ सिफ़ारिशें, यह पारिवारिक हितवाद और पक्षपात, यह जुआबाज़ियाँ, यह वारिसों का अभिभावकों को मार डालना, यह सरपरस्तों का अपने अधीन पल रहे धनवान यतीमों को क़त्ल कर देना, यह सरकारी अफ़सरों का राष्ट्रीय कोश को बेतहाशा लूटना, यह देश के ग़द्दारों का पूरे देश को बेच डालना, यह घोटाले, यह चोरियाँ, यह डाके, ये धोखे-फ़रेब, यह सब कुछ और उनसे पैदा होनेवाले अनगिनत दुख जिन्होंने इनसानीयत को ज़ख़्मों से चूर-चूर कर रखा है—यह सब कुछ आख़िर इसी लिए होता है कि इनसान की आँख अन्धी हो गई है और उसने दुनिया की घटिया चीज़ों ही को बहुमूल्य समझ लिया है।

अगर उसकी कल्पना की आँख के सामने इन चीज़ों के अलावा दूसरी अच्छी चीज़ें होतीं तो वह इन घटिया और छोटी चीज़ों की लालच में पड़कर अपनी आख़िरत और दूसरों की ज़िन्दगी को ख़राब न करता।

एक क़िस्सा बयान किया जाता है कि किसी बादशाह ने एक बड़ा दरबार सजाया और उसमें बड़ी-बड़ी क़ीमती चीज़ें रख दीं। चीज़ों का क्रम यह था कि कम क़ीमतवाली चीज़ें दरवाज़े के पास थीं। फिर जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाता ज़्यादा से ज़्यादा बहुमूल्य चीज़ें आती जातीं। दरबार के अंतिम सिरे पर बादशाह ख़ुद तख़्त बिछाकर बैठ गया और लोगों में आम एलान कर दिया गया कि जिसका जी चाहे आए और इस दरबार के अन्दर जो कुछ है उसमें से जो चाहे ले ले।

लोग यह एलान सुनकर टूट पड़े और चीज़ें उठा-उठाकर ले जाने लगे। यहाँ हर व्यक्ति की पात्रता ज़ाहिर होने लगी। जिन लोगों ने ज़्यादा अच्छे क़िस्म के साज़ो सामान देखे ही न थे वे तो दरवाज़े के पास ही की चीज़ों से ऐसे प्रभावित हुए कि वही उठाने लगे। उनके लिए वही बड़ी ग़ैर मामूली थीं। उन्होंने आगे बढ़कर देखने की तकलीफ़ ही गवारा न की कि शायद आगे और अच्छी और क़ीमती चीज़ें हों। जो लोग अधिक ऊँची प्रवृत्तिवाले थे वे कुछ और आगे बढ़े और बेहतर क़िस्म की चीज़ें उठाईं। मतलब यह कि जिसने जितना ज़्यादा बेहतर

क़िस्म के साज़ो सामान देखे हुए थे वे उतना ज़्यादा आगे बढ़े और अच्छी चीज़ें प्राप्त कीं। फिर भी दरबार के आख़िर तक कोई न पहुँचा, हालाँकि सबसे ज़्यादा क़ीमती चीज़ें वहाँ रखी थीं।

उस बीच एक बेनियाज़ क़िस्म की बुढ़िया लाठी टेकती आ गई और दरबार के अन्दर इधर-उधर देखते हुए आगे बढ़ना शुरू कर दिया। वह दोनों तरफ़ निगाह डालती जा रही थी। क़ीमती से क़ीमती चीज़ पड़ी थी मगर उसकी निगाहों से ऐसा महसूस होता था, मानो कि वह तुच्छ कंकड़ों को देखती जा रही है। वह बढ़ती चली गई, यहाँ तक कि वहाँ पहुँच गई जहाँ तक उससे पहले कोई अच्छे से अच्छा शौक़ रखनेवाला और अधिक से अधिक हैसियतवाला भी नहीं पहुँचा था।

लोग चकित थे कि यह बुढ़िया आख़िर चाहती क्या है? क्या इन अनमोल चीज़ों में से कोई भी उसे दिलकश नहीं लग रही? बुढ़िया वहाँ पहुँच गई जहाँ बादशाह स्वयं सिंहासन पर बैठा था। बुढ़िया ने बादशाह को सम्बोधित करके कहा, "तुमने यही एलान किया है ना कि इस दरबार की जो चीज़ जो व्यक्ति चाहे ले ले?"

बादशाह ने कहा कि हाँ, ऐसा ही एलान किया गया है।

बुढ़िया ने बादशाह का हाथ पकड़ लिया और कहा : "मुझे तो सिर्फ़ तुम्हारी ज़रूरत है।"

इस कहानी के संबंध में यह कहना कठिन है कि यह कहाँ तक ऐतिहासिक है। लेकिन यहाँ जो बयान करना मक़सद है वह सिर्फ़ इसकी नैतिक (अख़लाक़ी) शिक्षा है।

जिस बादशाह ने यह दरबार लगाया था, ज़ाहिर है जो चीज़ें उसने लोगों को देने के लिए यहाँ रखी थीं, वे उसके असली ख़ज़ाने से बहुत कम थीं। जिस समझदार औरत ने ख़ुद उस बादशाह ही को माँग लिया था वह अपने आप ही उन सब ख़ज़ानों की मालिकिन बन गई जो उस बादशाह के पास थे और उसके असली ख़ज़ानों के मुक़ाबले में वे चीज़ें तो कोई महत्त्व ही न रखती थीं जो उसने जनता के आगे फैला रखी थीं।

अतः जो व्यक्ति वास्तव में आख़िरत पर ईमान रखता हो और मौत के बाद की ज़िन्दगी उसकी कल्पना की आँखों के सामने स्पष्ट हो वह हर हाल में संतुष्ट होगा। और यह संतुष्टि उसे हर हाल में बड़े हौसले का भी बना देगी। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) का कथन है, "अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने अपने नेक बन्दों के लिए वह कुछ तैयार कर रखा है

जो न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी के दिल में उसका ख़याल गुज़रा।" (बुख़ारी, मुसलिम)

जिस इनसान की कल्पना में यह दुनिया आ जाए वह उन चीज़ों का लालची कैसे हो सकता है जो तुलना में अत्यन्त घटिया और बहुत जल्द विनाश हो जानेवाली और छिन जानेवाली है। इन परितुष्ट, गरिमावाले इनसानों से किसी तरह भी यह आशा नहीं की जा सकती कि वे अस्थिर और तुच्छ और काँटों भरी ख़ुशियाँ हासिल करने के लिए अपने दीन (धर्म) और अपने इस्लामी स्वाभिमान का सौदा कर लेंगे, न उनके लिए यह संभव है कि वे दुनिया के पुजारी, "बड़े लोगों" के आगे विवशता प्रकट करेंगे या सिर झुकाएँगे और न उनसे यही भरोसा है कि अगर ख़ुदा उन्हें सांसारिक सम्पत्ति से सम्पन्न कर दे तो वे फूलकर कुप्पा हो जाएँ और अभिमान का शिकार हों। आख़िरत का विश्वास इनसान में जिस प्रकार की बेनियाज़ी और उच्चता पैदा कर देता है उसकी व्याख्या नीचे के वृत्तान्त से पूरी तरह हो जाती है :

हज़रत सफ़वान बिन सुलैम एक श्रेष्ठ ताबई[1] थे। उन्होंने सुलैमान बिन अब्दुल मलिक का ज़माना पाया था। एक बार सुलैमान बिन अब्दुल मलिक मदीना आया। उन दिनों हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) मदीना के गवर्नर थे। ख़लीफ़ा हज़रत उमर के साथ मसजिद में नमाज़ पढ़ने गया। नमाज़ के बाद मक़सूरा (मसजिद में इमाम के खड़ा होने की जगह) का दरवाज़ा खोला तो वहाँ हज़रत सफ़वान बिन सुलैम नज़र आए। सुलैमान ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) से पूछा, "यह कौन बुज़ुर्ग हैं।" उन्होंने बताया कि सफ़वान बिन सुलैम हैं। यह सुनकर सुलैमान ने पाँच सौ दीनार की थैली ग़ुलाम के हाथ उनकी ख़िदमत में भेजी। जब ग़ुलाम ने जाकर थैली पेश की तो हज़रत सफ़वान ने कहा : "मियाँ, तुम्हें धोखा हुआ है, किसी और के पास भेजी होगी।"

ग़ुलाम ने पूछा कि क्या आप सफ़वान नहीं हैं? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ, मैं ही सफ़वान हूँ। मगर तुम ज़रा जाकर दोबारा पूछ आओ।

ज्यों ही ग़ुलाम पूछने गया, हज़रत सफ़वान ने जूता उठाया और मसजिद से निकल गए और फिर जितनी देर सुलैमान बिन अब्दुल मलिक मसजिद में रहा वे मसजिद में न आए। स्पष्ट रहे कि सुलैमान बिन अब्दुल मलिक की सल्तनत तीन बड़े महादेशों (एशिया, अफ़्रीक़ा, यूरोप) में फैली हुई थी। आख़िरत के इनाम और

---

1. वह मुसलमान व्यक्ति जिसने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथियों को देखा हो। इसका बहुवचन—'ताबईन' है। —अनुवादक

सज़ा पर ईमान लानेवालों के लिए सांसारिक सम्पत्तियों के मालिक सिरे से कोई महत्त्व ही नहीं रखते।

हज़रत सईद बिन मुसैयिब (रज़ि०) ने कई उमवी ख़लीफ़ाओं का ज़माना पाया, मगर उनके आगे अपने आपको समर्पित कर देना तो दूर की बात, उन्होंने कभी उन्हें ध्यान देने योग्य भी न समझा।

एक बार ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक मदीना आया और हज़रत सईद बिन मुसैयिब (रज़ि०) से मिलना चाहा। उसने मसजिद के दरवाज़े पर खड़े होकर आदमी भेजा कि उन्हें बुला लाए। वह उस वक़्त मसजिद में इबादत में व्यस्त थे। संदेशवाहक ने जाकर कहा कि "अमीरुल मोमिनीन आपसे मिलना चाहते हैं।"

हज़रत सईद ने कहा कि अमीरुल मोमिनीन को न मुझसे कोई ज़रूरत है और न मुझे उनसे। अगर उनकी कोई ज़रूरत हो तो भी वह पूरी नहीं हो सकती।

अब्दुल मलिक ने यह जवाब सुनकर दोबारा आदमी भेजा। मगर हज़रत सईद ने दोबारा वही जवाब दिया। संदेशवाहक ने कहा, "अमीरुल मोमिनीन बार-बार भेजते हैं और तुम इस तरह बेरुख़ा जवाब देते हो। अगर उन्होंने मना न कर दिया होता तो मैं तुम्हारा सिर काट लेता।"

हज़रत सईद ने लापरवाही से कहा कि अगर अमीरुल मोमिनीन मुझे कोई उपहार देना चाहते हैं, तो वह मैं तुम्हें देता हूँ। जाकर प्राप्त कर लो, और अगर उनका कुछ और इरादा है तो ख़ुदा की क़सम मैं अपनी बैठक उस वक़्त तक नहीं बदलूँगा जब तक वे जो करना चाहते हैं, कर न गुज़रें।

आख़िर अब्दुल मलिक मायूस होकर चला गया।

इसी ख़लीफ़ा मलिक का वाक़िआ है कि एक बार वह मदीना आ आया, तो रात को उसे नींद न आई। उसने दरबान को हुक्म दिया कि मसजिद में जाकर देखो, अगर मदीने का कोई कहानी कहनेवाला मिल जाए तो उसे ले आओ कि ज़रा जी बहले। वह मसजिद में आया। वहाँ हज़रत सईद बिन मुसैयिब को पाया। वह इबादत में लीन थे। उसने उनसे कहा कि अमीरुल मोमिनीन की आँख खुल गई है और मुझे हुक्म दिया है कि किसी कहानी कहनेवाले को ले आऊँ, इसलिए आप मेरे साथ चलें!

हज़रत सईद ने पूछा कि मुझे बुलवाया है क्या?

दरबान ने कहा, "नहीं, उन्होंने तो क़िस्सा सुनानेवाले को बुलवाया था। मैंने देखा कि आप जाग रहे हो इसलिए आपको ही लिए चलता हूँ।"

हज़रत सईद ने कहा, "अमीरुल मोमिनीन से जाकर कह दो कि मैं उनका

कहानी सुनानेवाला नहीं हूँ।"

आख़िरत की चाह रखनेवाली हस्तियों को जब सांसारिक इज़्ज़त व प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाए तो वे उन्हें किसी प्रकार के अभियान व गर्व में लिप्त नहीं कर सकता। क्योंकि वह इस इज़्ज़त व प्रतिष्ठा को असाधारण महत्त्व ही नहीं देते। हाँ, मानवीय दुर्बलता के कारण बड़ाई का विचार आ ही जाए तो भी वे तत्काल ही मन को सुधार लेते हैं और उसे दोबारा अपने वास्तविक ऊँचे हौसले की ओर वापस ले आते हैं।

एक दिन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) मिम्बर पर चढ़े और फ़रमाया—

"एक दिन वह था कि मैं अपनी ख़ाला (मौसी) की बकरियाँ चराया करता था, और वे उसके बदले में मुझे मुट्ठी भर खजूरें दे दिया करती थीं।"

बस सिर्फ़ इतना कहा और फिर मिम्बर से नीचे उतर आए। लोगों को आश्चर्य हुआ कि अमीरुल मोमिनीन ने ऐसा क्यों किया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने आख़िर कह ही दिया कि "अमीरुल मोमिनीन इस तरह तो आपने अपनी तुच्छता प्रकट की और स्वयं को लोगों की नज़र में तुच्छ किया।"

हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया, "नहीं, बल्कि बात यह है कि अकेले में मेरे दिल ने कहा कि तुम अमीरुल मोमिनीन हो। तुमसे उच्च कौन हो सकता है। इसलिए मैंने चाहा कि उसे उसकी हक़ीक़त बता दूँ ताकि उसको फिर ऐसा ख़याल भी कभी न आए।"

संभवतः थोड़े ही लोगों को मालूम होगा कि हज़रत सैयद अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) एक करोड़पति रईस थे, मगर दुनिया उन्हें करोड़पति की हैसियत से नहीं, बल्कि अल्लाह के एक इबादतगुज़ार व परहेज़गार और नेक बन्दे ही की हैसियत से जानती है।

आख़िरत के एहसास और विश्वास से पैदा होनेवाली उच्चता का एक स्पष्ट उदाहरण माफ़ी व दरगुज़र भी है। जिन बुद्धिजीवियों को मालूम है कि इंतिक़ाम (बदला लेने) की क्षमता होते हुए भी जो व्यक्ति इंतिक़ाम न ले और माफ़ कर दे, अल्लाह उसके अपने गुनाह माफ़ कर देता है। वे अपने गुनाह माफ़ करनेवाले को इसपर प्राथमिकता देते हैं कि दिल से इंतिक़ाम की आग को ठण्डा करें।

सन् 6 हिजरी में जब तोहमत की घटना घटित हुई और कुछ ख़राबी फैलाने-वाले बाग़ियों ने हज़रत आइशा (रज़ि०) के बारे में अनुचित बातें कीं, तो हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) का एक क़रीबी रिश्तेदार मिसतह भी इस अफ़वाह फैलाने का शिकार हो गया। हालाँकि हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) उनकी आर्थिक सहायता

किया करते थे। जब अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में हज़रत आइशा (रज़ि०) की पवित्रता और तोहमत से बरी होने को स्पष्ट कर दिया, तो हज़रत अबू बक्र ने मिसतह की आर्थिक सहायता बन्द कर दी और क़सम खा ली कि अब मदद नहीं करूँगा; क्योंकि मिसतह के आचरण से हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को कुदरती तौर पर रंज पहुँचा था, मगर बाद में यह आयत अवतरित हुई—

> "तुममें जो लोग श्रेष्ठता और सामर्थ्य रखते हैं, वे अपने रिश्तेदारों, मुहताजों और अल्लाह की राह में हिजरत करनेवालों को मदद न देने की क़सम न खाएँ! उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह भी तुम्हें क्षमा करे, और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और करुणामय है।" (कुरआन, 24 : 22)

इसे सुनकर हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) बोल उठे कि अल्लाह की क़सम मैं तो चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे बख़्श दे, और हज़रत मिसतह का वज़ीफ़ा दोबारा जारी कर दिया।

दान की भावना

आख़िरत के अक़ीदे की पुख़्तगी के कारण जहाँ इनसान के दिल से सांसारिक साज़ो सामान, धन-दौलत और इज़्ज़त व प्रतिष्ठा की लालसा ख़त्म होती है वहीं स्वाभाविक रूप से अल्लाह की राह में ख़र्च करने की भावना भी बढ़ जाती है।

अल्लाह, सारे जगत के पालनहार, ने कुरआन के ज़रिए और प्यारे रसूल (सल्ल०) ने स्वयं अपने आदेशों के द्वारा मुसलमानों को यह हक़ीक़त स्पष्ट रूप से समझा दी थी कि जो माल अल्लाह की राह में ख़र्च हो जाता है वह देनेवाले के लिए निश्चित रूप से सुरक्षित हो जाता है और उसे अल्लाह कई गुना बढ़ाकर आख़िरत में वापस करेगा, और जो माल इनसान सँभाल-सँभालकर रखता और सिर्फ़ इकट्ठा करने के लालच में जमा करता है, वह तो वारिसों के काम आता है और स्वयं मालदार को उससे कोई लाभ नहीं पहुँचता, चुनाँचे नीचे लिखी हदीस इसकी व्याख्या कर देती है—

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बन्दा कहता है 'मेरा माल' हालाँकि उसके माल में से जो वास्तव में उसका है वह बस तीन तरह का है—एक वह जो उसने खाकर ख़त्म कर दिया, दूसरे वह जो पहनकर पुराना कर डाला, और तीसरे वह जो उसने अल्लाह की राह में देकर (अपनी आख़िरत के लिए) जमा कर लिया। इसके सिवा जो कुछ है वह बन्दा दूसरे

लोगों के लिए छोड़ जानेवाला है और स्वयं यहाँ से विदा हो जानेवाला है।"

(मुसलिम)

इसी बारे में एक और हदीस है —

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया : 'तुममें से कौन ऐसा है जिसे अपने माल से ज़्यादा अपने वारिस का माल प्रिय हो ?' लोगों ने कहा कि हममें से तो हर एक का हाल यह है कि उसको अपने वारिसों के माल से अधिक प्रिय अपना ही माल है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : (जब यह बात है तो मालूम होना चाहिए) कि आदमी का माल बस वही है जिसको उसने आगे चलता कर दिया (यानी अल्लाह की राह में दे दिया) और जितना उसने बाद के लिए रखा, वह (उसका नहीं है, बल्कि) उसके वारिसों का है।

(बुख़ारी)

हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि०) के एक कथन में भी यही बात मिलती है। आप फ़रमाते हैं, "तेरे माल में से तेरा हिस्सा तो सिर्फ़ उतना ही है जो तूने आख़िरत के लिए भेज दिया, और जिसे दुनिया में छोड़ दिया वह तेरे वारिसों का माल है।"

अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिए ख़ैरात (दान-पुण्य) करने के बारे में और कई हदीसें भी मिलती हैं। हज़रत इब्न मसऊद (रज़ि०) से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि दो ही इनसानों पर गर्व (उचित) है—(एक) वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने माल दिया, फ़िर उसे इसपर सामर्थ्य दी कि उस माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करे और (दूसरा) वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने हिकमत (तत्त्वदर्शिता) प्रदान की। अतः वह उससे फ़ैसले करता है और उसे (दूसरों) को सिखाता है। (बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत अदी बिन हातिम (रज़ि०) बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को कहते सुना है कि आग से बचो, यद्यपि खजूर ख़ैरात करके ही।

(बुख़ारी, मुसलिम)

हज़रत अदी (रज़ि०) ही से एक और रिवायत है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुममें से हर एक अपने रब से इस तरह बात करेगा कि अल्लाह के और उसके बीच कोई मध्यस्थता करनेवाला न होगा। अतः इनसान अपनी दाहिनी ओर निगाह करेगा तो सिवाय अपने आगे भेजे हुए आमाल (कर्मों) के और कुछ न देखेगा। इसलिए (दोज़ख़ की) आग से बचो चाहे खजूर का आधा हिस्सा ख़ैरात करके ही। फिर जिसे यह भी प्राप्त न हो तो वह अच्छी बात कहकर ही आग से बचने का इंतिज़ाम करे। (बुख़ारी, मुसलिम)

ख़ैरात की एक शक्ल क़र्ज़दार का क़र्ज़ा माफ़ करना भी है। हज़रत अबू क़तादा (रज़ि०) कहते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जिसे यह बात भली लगे कि अल्लाह उसे क़ियामत के दिन जान को हलाक कर देनेवाले ग़मों से नजात दे तो उसे चाहिए कि तंगदस्त क़र्ज़दार को मुहलत दे या उसका क़र्ज़ा माफ़ कर दे। (मुसलिम)

हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि०) का कथन है, "कर्मों की तरांज़ू को ख़ैरात (दान) के वज़न से भारी करो।"

आख़िरत की बेहतरी के लिए अल्लाह की राह में ख़र्च करने की महत्ता मालूम होने का स्वाभाविक परिणाम है कि मुसलमानों में प्रसन्नतापूर्वक अल्लाह की राह में ख़र्च करने की तीव्र भावना पाई जाती है और चूँकि यह जो कुछ ख़र्च किया जाता है, वह ग़रीब लोगों ही पर ख़र्च होता है। इसलिए आख़िरत की भलाई की भावना मानवता की सांसारिक भलाई का भी बराबर कारण बनती रहती है।

सन् 9 हि० में रूम के बादशाह क़ैसर ने मुसलमानों पर रोब जमाने के लिए अफ़वाह उड़ा दी कि वह अरब पर हमला करनेवाला है। मुक़ाबले के लिए एक बड़ी सेना तैयार की गई। गर्मी का मौसम था और सफ़र बहुत लम्बा था, फिर इतनी बड़ी सेना के लिए बहुत तैयारियों की ज़रूरत थी।

प्यारे रसूल (सल्ल०) ने सहाबा को अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने की हिदायत फ़रमाई। इस मौक़े पर मुसलमानों ने बढ़-चढ़कर चन्दे दिए। मगर हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने एक ऐसी मिसाल क़ायम की जो बेमिसाल थी। आप अपने घर की सारी सम्पत्ति उठाकर ले गए और जब हुज़ूर (सल्ल०) ने पूछा कि ऐ अबू बक्र ! अपने घरवालों के लिए क्या छोड़ा ? तो आपने जवाब दिया कि उनके लिए अल्लाह और रसूल काफ़ी हैं।

जब मुसलमान हिजरत करके मदीना में आए तो वहाँ की आबादी बढ़ जाने के कारण वहाँ पानी की बहुत तकलीफ़ हो गई। शहर में एक ही कुआँ था जिसका पानी पीने के क़ाबिल था। इस कुएँ का मालिक एक यहूदी था। वह पानी बेचा करता था। हज़रत उसमान (रज़ि०) ने उस यहूदी से बातचीत की कि किसी तरह वह कुआँ बेचने पर तैयार हो जाए। उसने कहा कि मैं सिर्फ़ आधा कुआँ बेचूँगा। एक दिन तुम्हारी बारी होगी और दूसरे दिन मेरी और इसके लिए मैं बारह हज़ार दिरहम क़ीमत लूँगा।

हज़रत उसमान (रज़ि०) ने इस शर्त को मान लिया और आधा कुआँ ख़रीद

लिया गया। अब मुसलमान ऐसा करते थे कि हज़रत उसमान (रज़ि०) की बारीवाले दिन में इतना पानी भर लिया करते थे कि दो दिन के लिए काफ़ी हो। यहूदी ने जब यह देखा तो बाक़ी आधा कुआँ भी आठ हज़ार दिरहम लेकर हज़रत उसमान (रज़ि०) के हाथ ही बेच दिया। इस तरह हज़रत उसमान (रज़ि०) ने बीस हज़ार दिरहम ख़र्च करके अल्लाह के बन्दों के लिए पानी का बन्दोबस्त कर दिया।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) के पास एक दिन किसी रिश्तेदार ने बहुत-सा माल भेजा। आप उस दिन रोज़े से थीं। इफ़्तार से पहले-पहले सारा माल ज़रूरतमंदों में बाँट दिया। इफ़तार के समय नौकरानी (दासी) ने ध्यान दिलाया कि अपने इफ़तार के लिए तो कुछ रख लिया होता। फ़रमाने लगीं, "उस समय क्यों न याद दिलाया, अब मलामत न करो।"

हज़रत सफ़वान बिन सुलैम ज़ुहरी (रज़ि०) एक दिन मसजिद से निकले। मौसम सख़्त सर्दी का था। मसजिद के बाहर एक आदमी को देखा कि नंगे बदन सर्दी में ठिठुर रहा है। उसी वक़्त उन्होंने अपने कपड़े उतारकर उसे दे दिए।

हज़रत उरवह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) के खजूरों के बाग़ थे। जब खजूरें पककर तैयार हो जातीं तो बाग़ की दीवार तोड़वा दिया करते और आम एलान कर देते कि लोग आएँ और खजूरें खाएँ और बाँध-बाँधकर साथ ले जाएँ।

हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन जो हज़रत अली (रज़ि०) के पोते थे, की जब मृत्यु हुई और आपको नहलाया जाने लगा तो उनके जिस्म पर नीले रंग के दाग़ नज़र आए। पूछताछ की गई तो मालूम हुआ कि आप रातों को अपनी पीठ पर आटे की बोरियाँ लादकर ग़रीबों के घरों में ले जाया करते थे और यह उसी के दाग़ थे। जब कोई भिखारी आता तो इमाम साहब फ़रमाते थे, "मेरे तोशे[1] को आख़िरत की ओर ले जानेवाले, स्वागत है!"

और स्वयं उठकर भिखारी को देते। आप कहा करते थे कि सदक़ा भिखारी के हाथ में जाने से पहले अल्लाह के हाथ में जाता है। अपनी जिन्दगी में दो बार अपनी सम्पत्ति का आधा हिस्सा अल्लाह की राह में दिया था।

समय का महत्त्व

किसी विद्वान का कथन है—"अगर आपके पास एक ही रोटी हो और आपके

---

1. खाने-पीने का वह सामान जो मुसाफ़िर रास्ते के लिए अपने साथ रख लेता है। पाथेय, कलेवा।

बच्चे भूखे हों, तो आप उस रोटी को पक्षियों के आगे नहीं डालेंगे। अगर आपके पास एक डोल पानी का हो और आप रेगिस्तान का सफ़र कर रहे हों, तो आप उस पानी से पैर नहीं धोएँगे। आपके पास एक ही ज़िन्दगी है और उसी से आपको अपनी आख़िरत भी कमानी है, आप इसे बेकार कामों में कैसे लगा सकते हैं?"

आख़िरत की भलाई की लालसा इनसान को ज़िन्दगी में मिलनेवाली फ़ुर्सत की क़द्र व क़ीमत सिखाती है। क्योंकि यही छोटी-सी अवधि ही तो है जिसमें कोई कर्म (अमल) किया जा सकता है। जब इस कर्मशाला से चल दिए तो फिर सिर्फ़ परिणाम ही देखने होंगे। अमल का मौक़ा तो मौत के साथ ही हमेशा-हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगा। यह वह सच्चाई है कि जितना भी इसपर ग़ौर किया जाए कम है।

इस दुनिया में इनसान की मिसाल एक बर्फ़ बेचनेवाले की-सी है। वह सुबह बर्फ़ की सिल्ली लेकर बैठता है। शाम तक अगर उसने होशियारी दिखाई और अपनी बर्फ़ बेच ली तो उसका सरमाया (पूँजी) भी उसे मिल गया और अधिक लाभ भी कमा लिया। लेकिन अगर वह बर्फ़ की सिल्ली रखकर सो जाए। ग्राहक आएँ और उसे सोता देखकर वापस चले जाएँ और वह शाम तक अपनी बर्फ़ न बेच सके तो नतीजा क्या होगा? लाभ तो वह खोएगा ही मगर साथ ही पूँजी भी हाथ से खो बैठेगा, क्योंकि बर्फ़ तो शाम तक पिघलकर पानी हो चुकी होगी।

यही हाल इनसानी ज़िन्दगी का है। यह रात-दिन जो हमें मिले हुए हैं, यह वह पूँजी है जिससे हमको आख़िरत का नफ़ा कमाना है। अगर हमने होशियारी और दूरंदेशी से काम लिया और इस पूँजी से लाभ कमा लिया तो ख़ुशहाल होकर वापस जाएँगे और अगर ग़फ़लत का शिकार रहे और फ़ायदा हासिल करने की ओर कुछ ध्यान न दिया तो बहुत जल्द वह समय आ जाएगा कि न नफ़ा पास होगा न पूँजी; क्योंकि ज़िन्दगी तो बर्फ़ की तरह हर पल घुलती चली जा रही है और हमारी उम्मीद से बहुत पहले यह सिल्ली पानी बनकर रह जाएगी। फिर आगे एक बड़ी ही कठिन मंज़िल होगी और ख़ाली हाथ और पछतावे और शर्मिन्दगी से चूर दिल।

अल-इख़्वानुल मुसलिमून के संस्थापक, राहे हक़ के शहीद जनाब हसनुल बन्ना वक़्त की अहमीयत बताते हुए कहते हैं—

"अगर तुम इनमें से किसी से पूछो कि आख़िर इस बेफ़ायदा बैठक का मक़सद क्या है तो वह पूरी बेबाकी से तुम्हें जवाब देगा कि मैं वक़्त काट रहा हूँ। ग़रीब इतना नहीं समझता कि जो वक़्त काटता है वह ख़ुद अपनी ज़िन्दगी के पेड़ पर कुल्हाड़ा चलाता है, इसलिए कि वक़्त ही ज़िन्दगी है।"

उर्दू साहित्य में एक पुराना-सा शेर है जिसका महत्त्व हर समय नया होता है—

गाफ़िल ! तुझे घड़ियाल ये देता है मुनादी ।
गरदूँ ने घड़ी उम्र की इक और घटा दी ॥

किसी का कथन है—लोग जन्म-दिवस की ख़ुशी क्यों मनाते हैं ? वे समझते हैं कि हमारी उम्र का एक और साल बढ़ गया, हालाँकि वह बढ़ता नहीं बल्कि कम होता है । उम्र को तो हर पल कम होना ही है, मगर ध्यान इस बात पर होना चाहिए कि हर पल जो गुज़र रहा है उसके लिए हम अल्लाह के यहाँ जवाबदेह हैं । अगर यह सही तरीक़े से ख़र्च हो रहा है तो अल्लाह का शुक्र है ! और अगर यह ग़फ़लत की भेंट चढ़ रहा है या ऐसे कामों पर लग रहा है जो बुरे अंजाम लानेवाले हैं तो फिर याद रखना चाहिए कि बड़े से बड़ा डाकू भी हमपर डाका डालकर वह नुक़सान नहीं पहुँचा सकता, जो समय का खोना पहुँचा देता है । क्योंकि लुटी हुई दौलत समय के साथ दोबारा हासिल कर ली जाती है, मगर समय की सम्पत्ति जब छिन जाए तो उसका एक सेकेंड भी दोबारा हासिल नहीं किया जा सकता ।

ये थोड़े-से ही दिन हैं ! इन्हीं में सब कुछ करना है । ये इतने थोड़े हैं और इनमें किया जानेवाला काम इतना बड़ा है कि इसमें क़तई इसकी कोई गुंजाइश नहीं कि इसे फ़िज़ूल ख़र्च किया जाए । यह रात बड़ी छोटी है और इसमें किया जानेवाला काम बहुत ज़्यादा लम्बा है ।

कुछ बुज़ुर्गों के बारे में बताया जाता है कि वे स्वयं अपने घरों के अन्दर कहीं गड्ढा खोदकर रखते थे । कभी-कभी वहाँ जाकर आँखें बन्द करके चुपचाप लेट गए और अपने ऊपर पूरे तौर पर ख़याल हावी कर लिया कि अब हम मर चुके हैं और क़ब्र में पहुँच चुके हैं । अब वापस जाने की कोई संभावना नहीं । फिर सोचते कि वे कौन-कौन-सी बातें हैं जो इस वक़्त दिल में चुभ रही हैं, जिसे वक़्त आने से पहले कर ली जानी चाहिए थीं, मगर न कीं और अब तो मर ही गए हैं और वापस तो जा ही नहीं सकते ।

फ़लाँ आदमी का क़र्ज़ा चुकाना था । हालात कुछ ऐसे बुरे तो न थे कि अदा कर ही न सकता था, मगर लापरवाही के कारण आगे-आगे टालते गए और अब तो वापस जाना ही नहीं । फ़लाँ रिश्तेदार से ज़्यादती की थी । एहसास भी हो गया था कि अपनी ही ज़्यादती है, मगर झूठी अकड़ के कारण उससे माफ़ी न माँगी और अब यहाँ पहुँच गए हैं, और माफ़ी माँगने का अब कोई रास्ता ही नहीं रहा । वह बोझ उसी तरह सिर पर लटक रहा है और उतारने की कोई सूरत ही नहीं ।

फ़लाँ और फ़लाँ दिन यह मौक़ा पैदा हुआ था कि ग़रीब पड़ोसी की आर्थिक सहायता करें, मगर जो रक़म उसपर ख़र्च हो सकती थी वह एक बढ़िया लिबास पर ख़र्च कर दी और आज वह बढ़िया लिबास दुनिया ही में छोड़ आए हैं। हालाँकि अगर वह रक़म एक मुहताज की मदद पर ख़र्च की होती तो यहाँ क़ब्र में हमारे साथ आती और अब तो उसे लाने की कोई सूरत ही नहीं। मतलब यह कि इसी तरह वे अपनी कोताहियों को याद कर-करके दिल में ख़ूब पछतावे के तूफ़ान उठाते। फिर उस क़ब्र से ज़िन्दा उठकर बाहर आ जाते और पहली फ़ुर्सत में वह सब काम कर गुज़रते जो उस गड्ढे के अन्दर पश्चाताप और शर्मिन्दगी का कारण बन चुके होते। अर्थात ज़िन्दगी के ये अवसर जो कभी-कभी चुग़लियों, इलज़ाम तराशियों, लड़ाई-झगड़ों, आराम तलबी, फ़ितने का सामान करना, मनोरंजन और सैर-सपाट, निषिद्ध और हराम कामों में व्यस्त हो जाते हैं, जिन्दगी के वे अनमोल हीरे हैं जो अगर एक बार छिन जाएँ तो फिर दोबारा उनके मिलने का कोई सवाल ही नहीं उठता, जैसा पहले उल्लेख हो चुका है।

> "और जिस दिन वह उन्हें इकट्ठा करेगा ऐसा मालूम होगा मानो कि वे एक घड़ी दिन से ज़्यादा दुनिया में नहीं ठहरे।" (क़ुरआन, 10 : 45)
>
> "जिस दिन वे उसे देखेंगे तो ऐसा मालूम होगा कि मानो वे (दुनिया में) एक शाम या इसकी सुबह से ज़्यादा नहीं रहे थे।" (क़ुरआन, 79 : 46)